

राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर

दस रंग नाटक

सपादक

मदन शर्मा



राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर

प्रथम संस्करण 1998

मूल्य अस्सी रुपये मात्र

आवरण अडिग

प्रकाशक राजस्थान साहित्य अकादमी
सेक्टर 4 हिरनमगरी उदयपुर 313002

मुद्रक साखला प्रिण्टर्स सुगन निवास
चन्दनसागर बीकानेर 334001

DAS RANG NATAK (Play Collection)
Edited by Madan Sharma — Rs 80 00

प्रकाशकीय

राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर अपनी स्थापना से हा साहित्य के समुन्नयन, प्रचार प्रसार और साहित्यकारों के हित साधन के लिए बहुविध प्रवृत्तियों का आयोजन करती रहा है। साहित्यकारों का सम्मान, सहयोग, पुरस्कार, पत्रिका प्रकाशन समारोह आदि के साथ उच्च-स्तरीय साहित्य का प्रकाशन भी अकादमी की एक महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति है। राजस्थान में जा स्तरीय साहित्य सृजित हो रहा है उसे योजनाबद्ध ढग से प्रस्तुत करने का दायित्व भी अकादमी का है। इस प्रकाशन योजना के अन्तर्गत अकादमी ने विधा विशेष के रचनाकारों की स्तरीय रचनाओं के सकलन प्रकाशित भी किये हैं। इसी क्रम में यह दस रग नाटक' नामक महत्त्वपूर्ण कृति प्रस्तुत है।

साहित्य में रचना प्रक्रिया अत्यधिक जटिल एव चुनौतीपूर्ण व सघन होती है। इसमें नाटक की रचना प्रक्रिया की अपनी खास परिस्थितियाँ हैं और नाट्य लेखक के लिए अपने परिवेश के साथ अनेक दृष्टियों से उन पर विचार करना पड़ता है। यह कृति के स्तर से प्रयाग के स्तर तक की यात्रा होती है। इस यात्रा में नाटककार, निर्देशक अभिनेता, दर्शक आदि सभी सहभागी होते हैं। राजस्थान में नाट्य आन्दोलन की अपनी परम्परा और विशिष्ट योगदान रहा है।

राजस्थान साहित्य अकादमी ने राजस्थान के नाट्य लेखन को रेखांकित करने के लिए निरन्तर प्रयत्न किये हैं। इसी क्रम में अकादमी ने हिन्दी नाटक शृखला का पहला भाग 1961 में डॉ रामचरण महेन्द्र द्वारा सम्पादित राजस्थान के नाटककार के रूप में प्रकाशित किया तत्पश्चात् दूसरा भाग 1993 में श्री मदनमोहन माथुर के सपादन में आधुनिक रग नाटक नाम स प्रकाशित किया। अब यह तीसरा भाग दस रग नाटक के रूप में प्रस्तुत है। अकादमी सचालिका ने नाटकों के सकलन के प्रकाशन का निर्णय लिया और उसी का परिणाम यह प्रस्तुत सकलन दस रग नाटक है। इस सकलन के सपादन हेतु सचालिका के निणयानुसार सुप्रसिद्ध रगकर्मी श्री मदन शर्मा से अनुरोध किया गया और प्रसन्नता है कि उन्होंने इसे स्वीकार किया। इस सकलन के रचनाओं के चयन का सम्पूर्ण दायित्व उन्हीं का रहा है। श्री शर्मा ने बड़े परिश्रम बुद्धिमत्ता और दायित्वबोध के साथ अकादमी के इस सकलन को मूर्त रूप दिया अतएव अकादमी उनके प्रति आभारी है। जिन नाटककारों के नाटक इस सकलन में सम्मिलित हैं उनके प्रति भी विशेष आभार क्योंकि उनके सक्रिय सहयोग के अभाव में *यह सकलन तैयार होना कदापि सभव नहीं था। श्री दीपचन्द सांखला व्यवस्थापक, सांखला* प्रिण्टर्स, बीकानेर का भी मैं आभारी हूँ जिन्होंने निश्चित समयावधि में इस कृति को मुद्रित करने के हमारे आग्रह को पूरा किया। आशा है सुधीजन इस प्रकाशन का हार्दिक स्वागत करेंगे।

दिनाक 24 मार्च 98

डा लक्ष्मीनारायण नदवाना
सचिव
राज साहित्य अकादमी, उदयपुर

आमुख

साहित्य में वीरता, शृंगार और भक्ति की भावधारणाओं को प्रेरित करने वाली राजस्थान की धरती नाटक की भी उर्वरा भूमि रही है। सभी भारतीय भाषाओं के नाट्य साहित्य की तरह राजस्थान में भी नाटकों का उद्भव पारंपरिक लोकनाटकों से हुआ है। काव्य, अभिनय, नृत्य और संगीत से समन्वित इन लोकधर्मी नाटकों में आम जन की भागीदारी रहती थी। इसी प्रकार पर्वों, त्यौहारों, उत्सवों, मेलों आदि के अवसर पर सामूहिक गीत, नृत्य और अभिनय से तो ग्रामांचल का समग्र परिवेश ही खुला रंगमंच बन जाता था। आधुनिक हिन्दी-नाटक के बीज इन्हीं लोकप्रचलित नाट्यरूपों और समारोहों के प्रदर्शन में निहित थे। लोकनाट्यों की अन्तर्वस्तु राजस्थान में वीरों के गुणगान, प्रेमाख्यान और धार्मिक लीलाओं पर आधारित होती थी, जिसमें वीरता, प्रेम या भक्ति का स्वर प्रमुख होता था। इसी विषयवस्तु और लोकनाट्य पद्धतियों की पृष्ठभूमि में राजस्थान में हिन्दी नाटक का प्रादुर्भाव हुआ।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जब राष्ट्रीय आन्दोलन के फलस्वरूप देशप्रेम और समाजोत्थान की प्रवृत्तियां प्रबल हुईं तो राजस्थान के नाटकों की विषयवस्तु प्रादेशिक सीमाओं से ऊपर उठ कर राष्ट्रीय और सामाजिक सन्दर्भों से जुड़ गयी। राजस्थान के देशी रजवाड़ों में सामंती शिकंजा प्रबल होने पर भी यहां के नाटककारों ने जनप्रिय नाट्यविधा के माध्यम से नवजागरण का आह्वान किया। राजस्थान के जिन अंचलों के नाटककारों ने रचना के स्तर पर राष्ट्र के स्वातंत्र्य यज्ञ में अपनी भागीदारी दर्ज की उनमें जयपुर, उदयपुर, झालावाड़, बीकानेर, भरतपुर, कोटा, जोधपुर, धौलपुर आदि प्रमुख हैं। इन स्थानों के जिन स्वनामधन्य लेखकों ने नाटक लिखे उनमें अधिसंख्य ऐसे थे जो रंगमंच की दृष्टि से सफल नाटक लिखने में समर्थ थे। इनके लिखे हुए नाटकों में मंच निर्देशों का पर्याप्त उल्लेख उनके मंच तकनीक से परिचित होने तथा रंगमंच के विकसित होने का सूचक है। राजस्थान ने हिन्दी-रंगमंच के विकास में भी उल्लेखनीय योगदान दिया है। यहां के बड़े छोटे नगरों में अच्छे रंगमंच बने हुए थे, जिनमें समय समय पर नाटकों का सफल मंचन होता था। इस दृष्टि से जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और झालावाड़ के प्रेक्षागृह विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। जिस प्रकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अपने नाटकों और नाट्य मण्डली के माध्यम से देशभर में देशप्रेम और नवजागरण की चेतना जगाई उसी प्रकार राजस्थान के नाटककारों ने प्रादेशिक स्तर पर जनता में स्वातंत्र्य एवं समाजोत्थान की चेतना जगाने में प्रभावी भूमिका निभायी। इस चेतना के प्रसार से ब्रिटिश शासक कितने भयभीत और चौकन्ने हो गये इसका एक उदाहरण ही पर्याप्त होगा। सरदारशहर के निवासी बाबू वृद्धिचन्द्र अग्रवाल 'मधुर' के नाटक 'दुर्गादास', 'हर हिन्दर' और 'जाग बटु गाये' नाटकों को ब्रिटिश सरकार ने प्रतिबंधित कर दिया। [illegible] नाटक 'हमें क्या चाहिए' के गीतों में देश की आजादी की ज्वाला का [illegible] प्रबल [illegible] है। इसी प्रकार राजस्थान के अन्य नाटककारों ने अपने सशक्त और लोकप्रिय नाटकों द्वारा आधुनिकता का आह्वान किया है। कहना न होगा कि राजस्थान में हिन्दी नाटककारों का [illegible] जिसने अपने अधिकांश नाटकों में आजादी की विचारधारा को प्रचलित कर [illegible] का परिचय दिया।

यद्यपि आजादी से पूर्व राजस्थान में लिखे हिन्दी नाटकों की अन्तर्वस्तु का तानाबाना व्यापक राष्ट्रीय और सामाजिक सदर्भों से बुना गया था और तकनीक पर पाश्चात्य नाट्य पद्धतियों का प्रभाव था, फिर भी उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान नहीं बनायी थी। राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित 'राजस्थान के नाटककार (1961 ई) की भूमिका में प्रसिद्ध नाटककार तथा नाट्य-समीक्षक प्रो रामचरण महेन्द्र ने इस बात की ओर सकेत किया है कि राजस्थान का नाटक साहित्य विकासोन्मुख है पर नाट्यशिल्प की दृष्टि से अभी उसे अनेक मजिलें पार करनी हैं। आज से 36-37 वर्ष पूर्व लिखे नाटकों के सदर्भ में लिखा यह कथन उसके बाद आज तक लिखे नाटकों पर लागू नहीं होता।

सन् 1960 के बाद लिखे नाटकों ने वस्तु, तकनीक और मचन के स्तर पर द्रुतगति से विकास किया है। पिछले दो दशकों में हिन्दी-नाटक और रगमच के क्षेत्र में हुई प्रगति का समानान्तर प्रभाव राजस्थान के नाट्य साहित्य पर परिलक्षित होता है। इस अवधि की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि नाटक को दृश्यकाव्य के रूप में अपनाने की दृष्टि विकसित हुई है। यह समझा जाने लगा है कि नाटक की सार्थकता उसके अभिनय होने में है। फलत रगमच का विकास अभिनेय नाटक लिखने की ओर रगकर्मियों और नाटककारों का ध्यान केन्द्रित हुआ है। इसी सदर्भ में नाट्यलेखक और निर्देशक के बीच के सबधों में आपसी समझ बढ़ी है। लेखक यह मानने लगे हैं कि मचन अपने-आप में एक विधा है। राजस्थान में अभिनेय और सशक्त नाट्यलेखन हो रहा है। रगमच के विकास में भी नये आयाम जुड़े हैं। मचशिल्प में भी अभूतपूर्व प्रगति हुई है। जयपुर में जवाहर कला केन्द्र तथा राज्य के अन्य भागों में व्यावसायिक और अव्यावसायिक नाटक मडलिया अच्छे कलात्मक प्रदर्शन कर रही हैं।

नाट्यलेखन के क्षेत्र में भी राजस्थान ने अखिल भारतीय स्तर पर अपनी पहचान बनायी है। अनेक लेखकों के नाटक अखिल भारतीय स्तर पर मचित और चर्चित हुए हैं। नाटकों की वस्तु स्थूल विषयों की अपेक्षा हमारे जीवन की वर्तमान समस्याओं के बारीक रेशों से बुनी हुई प्रतीकात्मक और व्यजक होती है। चरित्रों में मनोविश्लेषण की प्रवृत्ति बढ़ी है। आधुनिक जीवन के तनाव, सत्रास, एकाकीपन, ऊब आदि के चित्रण से नाटक आदर्शवाद की हवाई भूमि से जीवन के ठोस यथार्थ पर आ गये हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि इन दशकों में नाटकीय मुहावरे का विकास हुआ है।

हिन्दी नाटक के क्षेत्र में राजस्थान के योगदान को रेखाकित करने के लिए यह सकलन प्रकाशित किया जा रहा है। एक छोटे से सकलन में प्रदेश के हिन्दी रग नाटकों का न तो समग्र परिदृश्य प्रस्तुत किया जा सकता था और न इसमें अधिक नाटकों का समावेश हो सकता था। इन सीमाओं के होते हुए यशस्वी नाटककार, रगकर्मी तथा नाट्य समीक्षक श्री मदन शर्मा ने इसे बड़े परिश्रम, सूझबूझ और नाटकीय समय से सपान्दित किया है, जिसके लिए मैं उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हू।

जिन नाटककारों ने अपने नाटक इस सकलन के लिए हमें भेजे उनके प्रति हम हृदय से आभारी हैं।

—राधेश्याम शर्मा
अध्यक्ष

भूमिका

शब्द और सौन्दर्य हो तो कविता या गीत की गुनगुनाहट गुंजित होती है। शब्द और स्वर हो तो संगीत की सरिता बह निकलती है। और यदि शब्द और दृश्य हों तो नाटक आकार लेने लगता है। इस आकार को अभिनय साकार करता है। जब शब्द, दृश्य और अभिनय का संगम होता है तभी नाटक का जन्म सार्थक होता है।

अति प्राचीन काल से ही भारत में नाटक का लेखन, सृजन और अभिनय प्रारम्भ हो गया था। नाटकों की शास्त्रीय चर्चा करने वाले प्राचीनतम ग्रन्थ 'नाट्य-शास्त्र' की सामग्री ने यह निश्चित कर दिया है कि भारत में नाटकों की रचना मूलत अभिनय के लिए हुई है। सभी विद्वानों ने इस बात को एक मत से स्वीकार किया है कि भारतीय नाटक का प्राचीनतम रूप वैदिक संवाद सूत्रों में मिलता है। इन संवाद सूक्तों में नाटकीय कथोपकथन के गुण विद्यमान हैं। अत हम वैदिक संवादों को लघु नाटक (एकाकी) का आदिरूप मान सकते हैं।

हमारी अति प्राचीन व समृद्ध संस्कृत भाषा और संस्कृत नाटक को मुस्लिम आक्रमणों ने तहस-नहस कर दिया था। रंगशालाएँ नष्ट कर दी गई थीं। फिर अंग्रेजों ने देश पर आधिपत्य जमा लिया। मुस्लिम व अंग्रेजी शासन के दौरान उत्साह, शान्ति व प्रेरणा का अभाव निरन्तर बना रहा जो नाट्य-साहित्य व कला के पनपने के लिये आवश्यक है। किन्तु फिर भी संस्कृत नाटक की जो समृद्ध परम्परा विदेशी आक्रमण से नष्ट हो गई थी वह विभिन्न प्रकार की नाट्य प्रवृत्तियों में पनप रही थी। पिछली सदी के उत्तरार्द्ध और इस सदी के प्रारम्भ की महत्त्वपूर्ण घटनाएं औद्योगिक क्रान्ति विज्ञान के युगान्तरकारी आविष्कार व सभी क्षेत्रों में हुई खोज व शोध ने आधुनिक संवेदना को जन्म दिया। पारसी रंगमंच का यह प्रभावशाली दौर रहा। नाटक ने राष्ट्रीय आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। यूरोप में यह काल नाटक की प्रयोगधर्मी शैली का आदिकाल था। लम्बी अवधि के नाटकों के स्थान पर लघु नाटकों का उद्भव हो रहा था। अत एकाकी' की यूरोपीय शैली के प्रभाव ने हमारे नाटककारों को भी प्रभावित किया।

राजस्थान के वयोवृद्ध नाटककार, समीक्षक, एकाकी के शोधकर्ता डा रामचरण महेन्द्र का मानना है— महा समर के बाद रोजी-रोटी की तलाश ने व्यक्ति को और व्यस्त कर दिया। प्रतियोगिता अशान्ति, अनिश्चितता, द्वन्द्व आदि के भवरजाल में फँसे व्यक्ति के पास मनोरंजन के लिये अधिक समय नहीं रहा। अत ऐसे साहित्य की आवश्यकता अनुभव की गई जो कम से कम समय में अधिक से अधिक मनोरंजन कर सके। अत महाकाव्यों ने खण्डकाव्यों, कहानी ने लघु कथा और पूर्णांकी नाटकों ने लघु नाटक (एकाकी) को जन्म दिया।

किसी देश का रंगमंच उस समय तक महत्त्व नहीं पा सकता जब तक कि वहाँ मंचित नाटकों का साहित्यिक स्तर ऊँचा न हो। हिन्दी नाटक की रंगमंचीय नाट्य-परम्परा

अभिनय और नाट्य कृति का साहित्यिक महत्त्व भारतेन्दु युग की देन है। भारतेन्दु जी ने नाट्य लेखन की नई परम्परा को जन्म दिया। उन्होंने स्वयं अभिनय करके एक आदर्श उपस्थित किया। अत्यन्त भावुक, प्रज्ञावान और प्रखर कल्पनाशक्ति सम्पन्न होने के कारण उनका हास परिहास और व्यंग्य अत्यन्त प्रौढ़ था। हजारों बार मंचित होने के उपरान्त भी उनका नाटक 'अंधेर नगरी' आज भी हास परिहास व व्यंग्य की मीठी चुभन व वही ताजगी प्रदान करता है। नाट्य प्रस्तुति के शास्त्रीय नियम जैसे मंगलाचरण, नान्दी सूत्रधार व भरत वाक्य आदि की पुरानी परिपाटी को भारतेन्दु जी ने समाप्त कर हिन्दी नाटक के नये स्वरूप को जन्म दिया। एकांकी नाटकों की विकास यात्रा प्रारम्भ की। द्विवेदी युग में इस यात्रा की गति मन्द रही। किन्तु प्रसाद युग तक आते-आते इस यात्रा ने एक मंजिल पूरी की। इसके पश्चात् तो एकांकीकारों की शृंखला बन गई और एकांकी के विकास में उनके योगदान ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की।

नाट्य-विधा में अंक शब्द का प्रयोग और अर्थ मनमाने ढंग से हुआ है। इसकी कोई शास्त्रीय संगत निर्दिष्ट सीमा नहीं मिलती। नाट्यशास्त्र के 36 अध्यायों और हजारों श्लोकों में नाट्य पक्ष पर विस्तृत विवेचना तो उपलब्ध है किन्तु अंक के आधार पर नाटक के वर्गीकरण की कहीं चर्चा नहीं है। अतः यह कहा जा सकता है कि एकांकी का उद्‌भव शास्त्रीय सिद्ध नहीं है। नाटककारों, आलोचकों एवं विद्वानों ने अलग-अलग तरीके से इसे परिभाषित किया है।

प्रसिद्ध नाटककार श्री उपेन्द्र नाथ अश्क ने एकांकी के लिये कहा है 'एक सफल एकांकी में संगीत स्पष्ट कार्यगति क्षिप्र, अभिनय सुन्दर, संवाद चुस्त और चुटीले चरित्र चित्रण यथार्थ और मनोवैज्ञानिक और अवसर के अनुसार प्रकाश या छाया का प्रयोग होना चाहिये। इसकी अवधि 30 से 45 मिनट होनी चाहिये।

एकांकी की विशेषता के बारे में डा. सत्येन्द्र ने एक बार कहा था 'एकांकी में कथानक का रूप तब सामने आता है जब अधिक से अधिक घटना बीत चुकी होती है। अतः इसके प्रारम्भिक वाक्य में ही कौतूहल और जिज्ञासा की अपरिमित शक्ति भरी रहती है। बीती हुई घटना की व्यंजना चुम्बक की तरह हृदय को आकर्षित करती है। एकांकी स्वतन्त्र टैक्निक वाला साहित्य का एक भेद है। उसमें संकलन-त्रय का पूर्ण निर्वाह होना चाहिये।'

डा. रामकुमार वर्मा का कहना है 'एकांकी में एक घटना होती है और वह नाटकीय कौशल से ही कौतूहल का संचय करते हुये चरम सीमा पर पहुँचती है। उसमें कोई अप्रधान प्रसंग नहीं रहता।

इसी प्रकार सेठ गोविन्द दास 'एक मूल विचार' को एकांकी का आवश्यक तत्व मानते हैं।

नाट्य विधान की दृष्टि से नाटक की तरह एकांकी में भी उद्‌घाटन, विकास चर्मोत्कर्ष और अंत का होना आवश्यक है। किन्तु एकांकी का सबसे बड़ा गुण माना गया है संकलन-त्रय अर्थात् समय स्थान और कार्यगति की एकता।

डा रामचरण महेन्द्र ने रचना और शिल्प के सन्दर्भ में उपलब्ध एकाकी की प्रमुख अवधारणाओं का विवेचन किया है। किन्तु उस विवेचन से भी एकाकी की कोई स्पष्ट परिभाषा नहीं मिलती। अत एकाकी को हम नाटक का विशेषण' कह सकते हैं। इस 'विशेषण' की उत्पत्ति का आधार सस्कृत-नाटकों से माना जा सकता है। सस्कृत नाटकों में पूर्व-रग' मचन की शैली प्रचलित थी। नाटक प्रारम्भ होने से पूर्व सूत्रधार' या नट-नटी मच पर आते थे और दर्शकों को नाटक क बारे में बताते थे। हास-परिहास भी होता था। लम्बी अवधि के नाटकों की तुलना में यह नाट्य-परिचय एक अक का होता था। नाटक के मूल कथ्य से इसका कोई सम्बन्ध नहीं होता था। पारसी रगमच के नाटकों में भी यह प्रथा प्रचलित थी। लम्बी अवधि के नाटकों के मध्य अतिरजना से दर्शकों को राहत दिलाने के लिये नाटक के मध्य में एक अक के छोटे हास्य-प्रहसनों को दिखाया जाता था। नाटक के मूल कथ्य से उनका भी कोई सम्बन्ध नहीं होता था। इसी प्रकार यूरोप में भी व्यावसायिक रगमच में नाटकों की अवधि बढ़ाने के लिये आफटर-पीसेज' जोड़ने की प्रथा प्रचलित थी।

नाट्य स्थापत्य नाट्य-विधान पर निर्भर है। नाट्य विधान भी ससार की सभी वस्तुओं की भाति परिवर्तनशील है। इस पर भी युग का प्रभाव पडता है। युग बदलता है तो युग चेतना भी बदलती है। नई चेतना नये रूप की माग करती है जिसके फलस्वरूप नाट्य विधान और साथ ही नाट्य स्वरूप भी बदल जाते हैं।

और आज आधुनिक रग नाटक के विधान और स्वरूप भी बदल गये हैं।

पिछले तीस वर्षों में विश्व-रगमच पर क्रान्तिकारी परिवर्तन हुये हैं। प्रयोगकर्मी-रगमच ने नाट्य-लेखन को बहुत प्रभावित किया है। सरोकार बदल गये हैं। प्रयोगकर्मी प्रवृत्तियों का विस्तार हो रहा है साथ ही नई प्रवृत्तियों का जन्म। प्रत्येक स्तर पर प्रयोगधर्मिता की ललक और नये मुहावरों की तलाश इस दौर की विशेषता रही है। इन विशेषताओं के मध्य आज नाटक को किसी विशेषण' के आधार पर परखना उचित नहीं होगा।

आधुनिक रग नाटक पुस्तक की भूमिका में नाटककार, निर्देशक, समीक्षक श्री मदनमोहन माथुर ने इसी बात की पुष्टि की है। उन्होंने लिखा है इस माहौल में समयावधि की सीमाए भी खण्डित हुई हैं। ऐसा भी कहा जा सकता है कि चलचित्र के आविष्कार और प्रसार के बाद नाटक और रगमच जिस सक्रमण से गुजरे होंगे, उससे उबर कर एक नयी जमीन तोड़ कर नये प्रयोगों का युग भी दूरदर्शन के प्रसार के साथ प्राय समाप्त हो रहा है। रगमच को अभिव्यक्ति के जन माध्यम के रूप में इस दूसरी चुनौती के रहते अपना नवीनीकरण करना होगा। आज जो नाटक लिखे जा रहे हैं वे कथ्य शिल्प और सरचना—सभी स्तरों पर प्रयोगधर्मी हैं। नाटककार और निर्देशक के सम्बन्धों पर विचार हो रहा है। रगमच के मुहावरे की तलाश में दोनों सभी रगकर्मियों के साथ लगे हैं। असगत नाटकों का दौर पीछे छूट गया है। अगली सदी के रगमच के सन्दर्भ में कल्पना सक्रिय है। पाश्चात्य रगमच पर हेपनिग्ज से लेकर 'चेम्बर थियेटर , 'कैफे थियेटर , टैरेस थियेटर अन्तरग' नुक्कड और रेडियो, दूरदर्शन के लिये प्राय सभी समयावधि के नाटक लिखे व खेले जा रहे हैं। ऐसे में नाटक को नाटक कहना ही बेहतर है। अब इसे विशेष शैली और माध्यम की दृष्टि से तो विशेषण-

विभूषित किया जा सकता है। नाटक के समयावधि का लेकर किसी प्रकार विशेष की कल्पना अभीष्ट नहीं है। (पृष्ठ 19 20)

नवीन शैलियों और प्रयोगशीलता की पराकाष्ठा यहा तक पहुँच गई है कि अब नाटक मच पर नहीं पर्दे के पीछे भी हा रहे हैं। जापान न इसी प्रकार की शैली के नाटकों का सफल प्रयाग किया है। वहा कलाकार पर्दे के पीछे अभिनय करते हैं और पर्दे पर उनकी छाया उभरती है जिसे लाइट एण्ड साउ ड के माध्यम से बड़े प्रभावशाली ढग से प्रस्तुत किया जाता है। जापान ने इन नाटकों को शैडो-प्लेज' का नाम दिया है।

अत आज का नाटक केवल नाटक है। अवधि क आधार पर उसे केवल लघु-नाटक व पूर्णांकी नाटक कहा जा सकता है।

इन्हीं बातों का ध्यान में रखकर इस सकलन के नाटकों का चयन किया गया है। सभी विषयों के नाटको का समावेश है।

इस सकलन का पहला नाटक है 'एक और सिद्धार्थ। लेखक हैं श्री हमीदुल्ला। बुद्धकाल के उस काल खण्ड को उसकी समस्याओं के साथ जीवत करना इस नाटक का प्रयोजन है। नाटक में शिल्प की परम्परा को सुरक्षित रख कर प्रेम और बलिदान के भाव को उजागर किया गया है।

हाल ही में प्रकाशित एक मेडिकल रिपोर्ट में कहा गया है कि मोटापा एक महामारी के रूप म पूरी दुनिया में आने वाला है। श्री वागीश कुमार सिह ने तलाश में इसी विषय को अपने नाटक का आधार बनाया है। नाटक तलाश एक मा और उसकी असाधारण रूप से मोटी बेटी की कथा-व्यथा है। बनावटी रिश्तों के रिसते नासूर, मानसिक द्वद्व जीवन की विषमता और विवशता का तानाबाना है नाटक तलाश।

नाटक सच का सच सवेदनहीन होते जा रहे आदमी के सामाजिक परिवेश में यातनादायक अलगाव की त्रासदी के रूप में है। श्री मदनमोहन माथुर ने अपने इस नाटक में यह सिद्ध किया है कि भौतिक विकास की मरीचिका में जो कुछ जैसा दिखाई दे रहा है वह वास्तव में वैसा नहीं है।

श्री रिजवान जहीर उस्मान का नाटक अधेर पूरे देश में चल रहा सवादहीनता और अनचाही अराजकता के मध्य अधेर' का शरीर स्पष्ट करने का प्रयास है। अधेर का वजूद केवल उजाडन, मिटा देने हड़पने एव व्यवस्था तत्र को तिनका तिनका बना देने के लिये पर्याप्त है। प्राकृतिक रूप से मानव शान्ति और सहजता के निकट ही रहना चाहता है। मानव की इस आकाक्षा के बीच अधेर का प्रवेश रगमचीय अनुभव प्रदान करता है।

युवा पीढ़ी की भौतिक सुखों की आकाक्षा ने ना केवल परिवार स बल्कि अपने देश से उनके पलायन की प्रवृत्ति को प्रबल किया है। आज का युवा वर्ग उत्सुकता से पश्चिम को निहारता है। डा राजानन्द ने इसी मरीचिका के मोह को उजागर किया है अपने नाटक अपने को समझ बन्नसाब में। पिता और पुत्र के बीच व्याप्त मौन एक प्रश्न के साथ इस नाटक में मुखरित होता है।

श्री लक्ष्मीनारायण रंगा का नाटक 'अपना घर' मानव की मूल आवश्यकता की पूर्ति का स्वप्न है। व्यवस्था तंत्र का चक्रव्यूह और प्रकृति की क्रूरता का नाटक में सजीव चित्रण किया गया है।

कहानियों के मध्य अवतरित होते दानव की तरह एड्स रोग कुछ वर्षों पूर्व हमारे बीच प्रगट हुआ है और कई परिवारों को निगल चुका है। श्री लईक हुसैन का नाटक सफर' इसी यातनादायक रोग के श्राप से ग्रसित एक परिवार का सफरनामा है। बूंद बूंद पिघलते जीवन की कहानी है।

वयोवृद्ध नाटककार डा रामचरण महेन्द्र का नाटक 'सबके दाता राम' भक्त मलूकदास के जीवन स जुड़ी एक कथा पर आधारित है। लेखक ने बडी रोचकता क साथ कथा शैली को नाट्य शैली में परिवर्तित किया है। सवादों की सजीवता, रोचक घटनाक्रम नाटक की विशेषता है। ईश्वर में मलूकदास की अटूट आस्था चर्मोत्कर्ष पर एक सुखद अनुभव देती है।

श्रीमती सुमन महरोत्रा का नाटक कमाल है सावित्री आधुनिक नारी की चेतनता वाक्पटुता एव उसक आत्मविश्वास को उजागर करता है।

सकलन का अन्तिम नाटक है 'छायान्त'। इस कल्पना प्रधान (फैन्टेसी) नाटक क लेखक हैं मदन शर्मा। अन्तरिक्ष यात्रा पर मानव भले ही निकल पडा हो, किन्तु पृथ्वी पर अपनी जीवन यात्रा को वह कितना कष्टदायक बना रहा है इसका उसे तनिक भी अहसास नहीं है। उसका श्रम आज सृजन में नहीं, सहार में नष्ट हो रहा है। जड के मौन चीत्कार और मानव क्रूरता की कहानी है नाटक छायान्त।

मैं उन सभी सृजनशील नाटककारों का आभारी हूँ जिनकी रचनाएँ मुझे प्राप्त हुई हैं। जिन रचनाओं का इस सकलन में प्रकाशन नहीं हो पाया है उसका मुझे खेद है। नाटककार बन्धु इसे मेरी ही विवशता समझें।

अन्त में मैं राजस्थान साहित्य अकादमी के प्रति अपना आभार प्रकट करता हूँ।

—मदन शर्मा

अनुक्रम

एक और सिद्धार्थ

हमीदुल्ला

पात्र परिचय

1	शुभा	षोडशी लौहार कन्या। बुद्ध की प्रिय शिष्या।
2	गोशाल	बुद्धकालीन सर्वहारा दार्शनिक।
3	पारिजात	युवा भिक्षु। अध्यात्म के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचने के लिये साधनारत।

इस नाटक को किसी वास्तविक दृश्यबन्ध के बिना भी बुद्धकालीन विहार, सर्वहारा दार्शनिक गोशाल की पहाडी पर बनी पर्णकुटि जगल, नदी तट आदि दर्शाने के लिये प्रतीकात्मक मच सामग्री के उपयोग द्वारा भी खेला जा सकता है।

एक और सिद्धार्थ

समय सध्यातात

स्थान बुद्धकालीन सर्वहारा दार्शनिक मखलि गोशाल की एक पहाड़ी पर बनी पर्ण-कुटि।

(पार्श्व से समवेत स्वर)

बुद्ध शरण गच्छामि।

धम्म शरण गच्छामि।

सघ शरण गच्छामि।

(समवेत स्वरों को सुपर इम्पोज करते मार-काट और शोर-शराबे के भयावह स्वर जो कुछ क्षण जारी रहकर पहले समवेत स्वरो में धुल-मिल जाते हैं। दार्शनिक गोशाल के सवादो के दौरान ये ध्वनिया धूमिल हो जाती हैं।)

(दार्शनिक गोशाल की पर्ण कुटी आलोकित)

गोशाल रात्रि के प्रथम पहर की ओर अग्रसर थकी सध्या। बुद्ध की प्रिय नगरी, वैशाली। नगर के कोलाहल से दूर पहाड़ी पर बनी मेरी यह पर्ण-कुटि। अधकार का यह एकान्त। बुद्धकाल के चिंतन का साक्षी, मैं। दार्शनिक गोशाल। *(मार-काट चीत्कार की ध्वनिया पार्श्व से उभरती हैं)* चारों ओर क्रोध, वैर बढ़ती क्रूरता। भाषण हिसा और प्रतिहिंसा। सारा उत्तर भारत जल रहा है। वासना, द्वेष, ईर्ष्या के विषैले अजगर जीभ लपलपाये स्वच्छद विचर रहे हैं। अतृप्त कामनाओं और लालसाओं के खड्ग मौसम की फसल के रूप में उग आये हैं। *(बुद्ध शरण गच्छामि के स्वर उभरते हैं) गौतम बुद्ध का प्रवचन। भिक्षुओं सृष्टि जल रही* है। आखें जल रहा हैं। चारों ओर यह किस की आग है? प्रश्न अनुत्तरित नहीं। यह काम की आग है। यह कैसी विडम्बना है? इतिहास के इस काल बिन्दु पर गौतम बुद्ध मौन हैं। ध्यानमग्न। शब्दों की कारा से मुक्ति पाने का मौन ही एक उपाय है

(लोहार कन्या शुभा का प्रवेश)

शुभा आचार्य, गोशाल।

गोशाल शुभा तुम? गौतम बुद्ध की प्रिय शिष्या।

शुभा आचार्य।

गोशाल विहार से चलकर अकेली यहा तक आई हो?

शुभा हा आचार्य।

गोशाल जगल का यह अधेरा कोना। रात्रि की ओर अग्रसर सध्या।

शुभा इतना आश्चर्य क्यों, आचार्य ?

गोशाल उत्तर भारत हिसा की काली आधी की चपेट में है। इसकी फुसकार जाने न जाने कब किसे डस ले। काल रात्रि में चेहरे साफ दिखाई नहीं देते। भले बुरे की पहचान मिट जाता है। कोई किसी को नहीं पहचानता।

शुभा मैं एक लौहार कन्या हूँ। अपनी रक्षा कर सकू, इतना साहस तो है मुझ में।

गोशाल तुम ?

शुभा अनाथ हूँ। गौतम बुद्ध विहार में ले आये। अब वही मेरा ठिकाना है।

गोशाल तुम एक अपूर्व सुन्दरी हो। वातावरण में चारों ओर मडराते काम पिपासु गिद्ध आदमी रूपी भेडिये

शुभा किसी दुष्चक्र की छाया मुझे छू नहीं सकती।

गोशाल विहार की सेवा ने जो आत्मविश्वास तुम्हें दिया है, अभिज्ञ हूँ मैं उससे। परन्तु व्याधिग्रस्तों की आशका

शुभा वे अधों की तरह जीते हैं। रोशनी उन्हें रास नहीं आती। वे इतने मूर्ख नहीं कि मुझे) मैं विराट और श्रेष्ठ की कामना करती हूँ। तथागत का कथन है विराट क्षमता और शक्ति कभी नष्ट नहीं होती।

गोशाल समझता हूँ मैं। विराट और श्रेष्ठ की आकाक्षा आत्मविश्वास का जन्म देती है। उस भावना से मन के उन बीजों में अकुर फूटने की सभावना बलवती होती है जो श्रेष्ठ के जनक होते हैं।

शुभा आप सोचते बहुत हैं।

गोशाल सहज प्रवाह क प्रतिकूल स्थितियों में नारा का आकर्षण पुरुष को पशु बना देता है।

शुभा मुझे भय नहीं है।

गोशाल जो नैसर्गिक है वह घटित होता है।

शुभा आपकी कुटी में जलता यह दीपक राहगीर और यहा तक आने वाले को साहस देता है। उसी प्रकाश बिम्ब के सहारे यहा तक सकुशल पहुँची हूँ। लौट भी जाऊगा। निश्चिन्त।

गोशाल तुम परिचित नहीं हो स्वय से। जब भी तुम्हारा सामना होगा किसा काम पिपासु पुरुष से तुम उसे अपनी ओर निहारता पाओगी। ठगा सा।

शुभा मैं अनुमति से विहार की परिधि से निकली हूँ। बाहर।

गोशाल तुम्हारा जीवन विहार की परिधि तक सीमित है। अनुभव भी।

शुभा मैं सध्या से पूर्व तथागत की अनुमति से नदी-तट पर दूर तक भिक्षु पारिजातानद के साथ जाती हूँ। विचरण के लिये। भिक्षाटन के लिये भी।

गोशाल सध्या से पूर्व। सध्या के पश्चात्। दोनों भिन्न स्थितिया हैं।

शुभा *मैं अकारण नहीं आई यहा। भोजन लिया, आपने ?*

गोशाल नहीं। गौतम बुद्ध ने भोजन किया ?

शुभा नहीं। दिन में दो बार भिक्षाटन के लिये गये थे। दोनों बार एक ही द्वार पर दस्तक दी। कोई बाहर नहीं आया। लौट आये। अब ध्यान मग्न हैं। मैं आपके लिये कुछ भोजन लाई हूँ। इसी लिये यहा आई।

गोशाल मैं अब भोजन नहीं करूगा। शेष रात्रि चिंतन में कट जायेगी। चिंतन भी मेरे *लिये भोजन ही है।*

शुभा कुछ तो लें।

गोशाल अब नहीं। कुछ नहीं चाहिये।

शुभा निराशा होगी, मुझे।

गोशाल तुम अब विहार लौट जाओ। चलो मैं तुम्हें वहा तक छोड़ दू।

शुभा आप ? विहार यहा से है ही कितनी दूर। पहाडी उतरी नदी पार की और आ गया विहार।

गोशाल रात में स्पष्ट दिखाई नहीं देता। पर तुम्हारे हाथ के सहारे चल सकूगा।

शुभा मुझे वहा छोड़कर विहार से अकेले लौटेंगे कैसे आचार्य ? सहयोग के लिये फिर किसी को साथ लाना होगा।

गोशाल यह तो मैंने सोचा ही नहीं।

शुभा प्रात काल के लिये यह भोजन रख लें।

गोशाल ऐसा कभी हुआ नहीं। तुम विहार में इसका उपयोग कर लेना।

शुभा मुझे अनुमति दें।

गोशाल ध्यान से जाना। चिंता रहेगी।

शुभा आप चिन्तन करें, आचार्य । चिंता नहीं।

गोशाल तुम्हारे अंतिम शब्द से फिर एक बिम्ब उठा है, विचार के लिये।

शुभा चिंता से चिन्तन होता है या चिन्तन से चिंता ? आप सोचते रहिये आचार्य। मैं चली विहार की ओर। शुभ रात्रि।

गोशाल शुभ रात्रि। *(स्वय से)* शुभा चली गई। षोडशी लौहार कन्या चली तो गई परन्तु समय के प्रतिकूल प्रवाह में आशकाए जन्म लेती हैं। मन न जाने कहा-कहा भटकने लगता है। इस लौहार कन्या का अल्हड़ स्वभाव। सेवा भाव। एक भिक्षुणी के रूप में यह धन्य है। बुद्ध ध्यानमग्न हैं। मौन। मौन ध्यान का

सवाद। इस लौहार कन्या का निर्मल मन। जीवन के आनद का मार्ग स्वय अपने में है। मैं उसके सम्बन्ध में आशकित। उस के मन में लश मात्र भय नहीं।

(बुद्ध शरण गच्छामि के समवेत पार्श्व स्वर फिर सुनाई देने लगते हैं। मच पर अधेरा।)

दृश्य परिवर्तन

स्थान जगल। नदी तट। गोशाल की पर्णकुटी।

समय सध्या।

पारिजात निर्वाण और अमरत्व। सत्य की साधना के लिये चित्त की भूमि को उर्वरा बनाना। बुद्ध की वाणी का ओज। उसका सम्मोहन। वर्तमान में जीने का अवकाश ही नहीं।

शुभा एक दिन तुम अध्यात्म के शिखर पर पहुचोगे, पारिजात। तुम्हें बुद्ध के शीर्ष शिष्यों में गिना जाता है।

पारिजात तुम भी तो गौतम बुद्ध की प्रिय शिष्या हो।

शुभा शीर्ष का विशेषण मेरे नाम के साथ नहीं है।

पारिजात साधना के दिनों में कोई विशिष्ट नहीं होता। न कोई पद होता है न प्रतिष्ठा।

शुभा तथागत का शीर्ष शिष्य होना साधना के दिनों में भी महत्वपूर्ण है।

पारिजात तुम भी विहार में सेवा की प्रतीक बन गई हो।

शुभा मैं अपना अतीत पीछे छोड आई हू। केवल बुद्ध की कृपा और आशीर्वाद है, मेरे साथ।

पारिजात सम्बन्ध कैसे बनते हैं?

शुभा पिता, पुत्र, मित्र शत्रु। यही सब तो सम्बन्ध हैं।

पारिजात सम्बन्ध में हम अपनी निजता में स्वय को नहीं जान पाते।

शुभा मेरी अभिलाषा है, तुम अपने सम्बन्धों के माध्यम से अध्यात्म के शिखर को छू लो। बुद्ध के उत्तराधिकारी के रूप में।

पारिजात तुम यह क्यों चाहती हो? क्यों चाहने लगी हो ऐसा?

शुभा तुम जानते तो हो।

पारिजात किसने यह अधिकार दिया?

शुभा केवल प्रश्न मत करो। हम तथागत की अनुमति से भिक्षाटन के लिये जाते हैं। सध्या को यहा विचरण के लिये आते हैं। यह सम्बन्ध नहीं है?

पारिजात जब तुम मुझ से सम्बन्ध की बात करती हो तो वर्तमान में जीने की चाह होने लगता है।

शुभा यह तुमने क्या कह दिया, पारिजात! मैं स्वीकार करती हूँ कि एक चाह है मेरे मन में, तुम्हारे लिये। उसी के अधीन शिखर तक पहुँचने में तुम्हारी सहायक मैं बनूँगी। सध्या ढल रहा है। आओ, आचार्य गोशाल के दर्शनों को चलें। उनकी कुटी में दीपक जल गया है।

पारिजात यहाँ आने से पहले तुम उनकी कुटी में गई तो थीं?

शुभा उन्हें भोजन सुलभ कराने।

पारिजात अब दोबारा?

शुभा तुम्हारा मन जो विचलित होने लगता है, वह विचलित न हो। इसीलिये आचार्य के आशीर्वचन प्राप्त करने।

पारिजात बहुत कठिन है। परन्तु अभी ही क्यों? फिर कभी।

शुभा जब मन विचलित होता है, तो एक आवरण ढक लेता है।

पारिजात तुम भी ऐसा अनुभव करती हो।

शुभा उस रूप में नहीं जैसा तुम अनुभव करते हो। मेरी चाह तो सहज है। वह निष्कलुष है। तुम्हें शिखर पर देखने की चाह। अपने सिद्धार्थ को। अपनी इन आँखों से।

पारिजात तुम्हारी आँखों से?

शुभा अपने प्रश्न आचार्य से करना। उनसे ही समाधान की आशा है।

पारिजात तुम यह क्यों भूल नहीं पातीं कि तुम एक भिक्षुणी हो?

शुभा भिक्षुणी का वेश धारण किया है। तन से। मन से। उसकी सीमा ही हमारी सीमा है। तुम भी भिक्षु हो।

पारिजात मैं एक भिक्षु। तुम भिक्षुणी। क्या इसके अलावा हम और कुछ नहीं हैं? नहीं हो सकते कुछ और?

शुभा जो पथ हमें मिला है उसका मार्ग नहीं बदलता। (पॉज) विहार से बाहर आने पर ये कैसे प्रश्न तुम्हें विचलित करने लगते हैं?

पारिजात मैं नहीं जानता ऐसा क्यों होता है?

शुभा मौन टूटे तो तथागत से चर्चा करेंगे।

पारिजात उनसे इस प्रसंग में कोई वार्ता करना उचित नहीं होगा।

शुभा यह तुम कैसी सासारिक बातें कर रहे हो भिक्षु?

पारिजात वो तो शिखर पुरुष हैं।

शुभा मैं उनसे कुछ भी छिपाना नहीं चाहती। क्यों छिपाऊँ? हमें ऐसा कोई कार्य नहीं करना है, जिसे छिपाया जाये। फिर क्यों?

पारिजात आचार्य गोशाल के पास जाने से क्या होगा?

शुभा समाधान।

पारिजात मैं नहीं जाना चाहूँ तो

शुभा तो मैं तुम्हारे साथ अब कभी विहार से बाहर नहीं आऊँगी।

पारिजात तुम अभी चाह की बात कह रही थीं?

शुभा वह तो विहार के भीतर भी रहकर सम्भव है।

पारिजात फिर हम यहाँ हर सन्ध्या को क्यों आते हैं?

शुभा स्वयं को जानने और देखने के लिये।

पारिजात तुम्हारी आँखें

शुभा हाँ आँखें। ये वो दृश्य देखना चाहती हैं जब तुम बुद्ध के उत्तराधिकारी घोषित किये जाओगे।

पारिजात तुम्हारी आँखें अपूर्व सुन्दर हैं।

शुभा इनसे मैं वह दृश्य देखने के लिये आतुर हूँ।

पारिजात मेरी साधना

शुभा वही मेरी साधना है। मेरा सहयोग रहेगा, तुम्हें। इसमें किसी से कुछ नहीं छिपाना है।

पारिजात शुभा। तुम केवल एक भिक्षुणी नहीं हो।

शुभा तुम इसे बार-बार क्यों दोहरा रहे हो, भिक्षु। सन्ध्या रात्रि की ओर अग्रसर है। आचार्य के दर्शन के उपरान्त विहार में चलेंगे। यही क्रम है।

पारिजात यही क्रम है।

शुभा आज रात्रि का हम दोनों तथागत के सान्निध्य में बैठेंगे। वे मौन हैं। परन्तु उनके समक्ष बैठने मात्र से मन का उद्वेलन मिटेगा। शान्ति मिलेगी।

(विहार से बुद्धं शरणं गच्छामि के स्वर सुनाई देते हैं)

पारिजात विहार से प्रार्थना के स्वर सुनाई दे रहे हैं।

शुभा आचार्य गोशाल की कुटी की ओर चलें।

पारिजात चलो।

(आचार्य गोशाल की कुटी प्रकाशित)

शुभा आचार्य।

गोशाल आओ। कितनी बार कहा है इस समय विहार से अकेली न आया करो।

शुभा अकेली नहीं हूँ। भिक्षु पारिजातानन्द मेरे साथ हैं।

पारिजात प्रणाम आचार्य।

गोशाल कैसे हो? बहुत दिनों से इधर देखा नहीं, तुम्हें।

पारिजात ठीक हूँ, आचार्य

शुभा इन्हें मैं अपने साथ लाई हूँ, आचार्य। आपसे पूछना चाहते हैं

पारिजात मैं पूछना चाहता हूँ?

शुभा चलो, मैं ही पूछे लेती हूँ।

गोशाल बिना परस्पर विमर्श किये यहाँ आये हो?

शुभा कुछ प्रश्न हैं। मार्गदर्शन के लिये विहार में तथागत हैं। परन्तु मौन हैं। ध्यानावस्था में लीन।

गोशाल पूछो। क्या जानना चाहती हो?

शुभा साधना में सम्बन्धों का क्या अर्थ है?

गोशाल साधना एकाग्रता है। सत्यानुभूति की साधना में स्वयं से विछोह भी होता है। तुम यह क्यों जानना चाहती हो? सम्बन्धों की भूल-भुलैया बहुत कष्ट देती है। तुम कुछ बोल नहीं रहे पारिजात?

पारिजात इसका अर्थ है, साधना में किसी दूसरे से सम्बन्ध नहीं रखना है।

शुभा यदि कोई दूसरा साधनारत से सम्बन्ध रखे तो ?

गोशाल किस रूप में?

शुभा साधनारत को साधना के चरम बिन्दु तक पहुँचा देखने के लिये। उसकी साधना में सहयोग देने के लिये।

गोशाल अर्थात् तुम चाहती हो, पारिजात को शिखर पर देखना?

शुभा हाँ आचार्य।

गोशाल निष्काम भावना के सम्बन्ध सकारात्मक होते हैं।

शुभा तो हमें आशीर्वाद दें आचार्य। हम दोनों की अभिलाषाएँ पूर्ण हों।

गोशाल मैं नहीं जानता तुम्हारी अभिलाषा का स्वरूप क्या है? जानना भी नहीं चाहता। परन्तु इतना अवश्य कहूँगा। सम्बन्धों का अर्थ भिन्न प्रसंगों में भिन्न होता है।

पारिजात अतीत वर्तमान और भविष्य के प्रसंग में भी?

गोशाल शुभा एक अनाथ लौहार कन्या है। यह अब विहार की सेविका है। माता-पिता की पुत्री होना अब इसके लिये अर्थहीन है। भविष्य के गर्भ में क्या है निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। जीवन की यात्रा और उसके प्रयोजन के अनुरूप सम्बन्ध रूप लेते हैं।

पारिजात मैं अब स्वयं को सम्बन्धों से उऋण करने का प्रयास करूँगा।

गोशाल शौर्य की कामना उसकी प्राप्ति तक अनवरत साधना है।

शुभा हमें आज्ञा दें, आचार्य।

गोशाल रात्रि में इस प्रकार क्यों भटकते हो? अंधकार में राहों की पहचान मिट जाती है। कभी-कभी अंधकार का भटकाव परिचित पथ को भी अपरिचित बना देता है। कुटी में प्रकाशित यह दीपक नदी तट तक तुम्हारा मार्गदर्शन करेगा। परिचित पथ है। फिर भी भटकाव की आशंका तो बनी रहती है।

शुभा इस दीपक की ज्योति के सहारे हम विहार तक पहुँच जायेंगे। आप हमारी चिंता न करें।

गोशाल इस दीपक का प्रकाश तुम्हें उचित मार्ग पर ले जाय। शुभ रात्रि।

दोनों शुभ रात्रि।

(शुभा और पारिजात का प्रस्थान। गोशाल कुटि से बाहर उन्हें विदा करता है।)

(ध्वनि प्रभाव। संगीत)

दृश्य परिवर्तन

स्थान नदी तट से दूर।

समय संध्या से पूर्व।

(शुभा और पारिजात)

पारिजात साथ चलते हुए हम नदी तट से दूर आ गये हैं।

शुभा अब विहार लौट चलें।

पारिजात संध्या से पूर्व?

शुभा संध्या समय विहार में आज दीपक मुझे जलाने हैं। नदी पार करें।

पारिजात नदी। नदी के दोनों तट साथ साथ चलते हैं। चलते रहेंगे। एक दूसरे के साथ। हमारे जैसे। एक-दूसरे की अंतर्वेदना से अनभिज्ञ।

शुभा यह तुम्हें क्या हो जाता है? लौटते हुए हर दिन नदी के दो किनारों की चर्चा।

पारिजात हर दिन हम यों ही लौट जाते हैं। खाली हाथ।

शुभा साथ ले जाने के लिये नदी-जल है यहाँ। जब चाहो, अंजुरी भर ले चलो। पर क्या होगा उससे? विहार को लौटते समय भिक्षा या नदी-जल के सिवा और ले भी क्या जा सकते हैं हम भिक्षु?

पारिजात हम भिक्षु के सिवा कुछ और नहीं?

शुभा स्त्री पुरुष। यही रहना चाहते हो तुम?

पारिजात यही। अच्छा है तुमने ही कह दिया।

शुभा भिक्षु भिक्षुणी के रूप में जीवन निर्वाह का चयन किया है, हमने। कर्त्तव्य विमुख होना चाहते हो? हम सीमाबद्ध हैं भिक्षु।

पारिजात इस सीमा को त्याग कर क्यों नहीं हम केवल स्त्री पुरुष हो जायें। स्त्री पुरुष। एक दूसरे में लीन। और

शुभा और?

पारिजात उसके बाद पूर्व सीमा में पुन लौट आयें। मेरी काया का पुरुष तुम्हारी नारी देह पर आसक्त है, शुभा।

शुभा उच्च आकांक्षा के लक्ष्य से गिरकर क्यों अपने को दरिद्र बना रहे हो?

पारिजात ओह शुभा। यह मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं है।

शुभा मैं तुम्हारे ऐसे किसी प्रश्न का उत्तर नहीं दूंगी। मैं एक दिन बुद्ध के उत्तराधिकारी के रूप में तुम्हारे दर्शन करना चाहती हूँ। ठीक वैसे ही जैसे यशोधरा भिक्षुणी का वेश धारण कर तथागत के दर्शनों को आई थीं। दर्शनों के समय उनकी आँखों में एक विशेष आभा थी। एक तेज था। देवी यशोधरा एक टक तथागत को निहार रही थीं। तथागत के रूप में जो पुरुष-आकृति उनके सामने विराजमान था, वह राजकुमार सिद्धार्थ नहीं था। वह तो बस देखती रही थीं, उन्हें। उनकी आँखों की ओर। मौन। स्तब्ध।

पारिजात तुम इतनी क्रूर हो। एकदम भावनाशून्य।

शुभा क्या उस क्षण देवी यशोधरा क्रूर या भावनाशून्य रही होगी? कल्पना करो।

पारिजात या तो तुम मेरे मन की बात समझ नहीं रही हो या समझना नहीं चाहती हो।

शुभा तुम्हारे मन में जो वेग है, उसे मैं समझ रही हूं। यह भी जानती हूं मैं एक भिक्षुणी हूं। यह वरण स्वीकार किया है, मैंने। मैं एक नारी भी हूं। उस रूप में तुम्हारे आकर्षण ने मेरे मन का स्पर्श किया है। परन्तु हमारी साधना का दायित्व हमारी प्राथमिकता है। कर्त्तव्य भी। मैंने कितनी बार कहा है मैं तुम्हें अध्यात्म के शिखर पर देखना चाहती हूँ। मुझे उस दिन की प्रतीक्षा है।

पारिजात मेरी भावना का कोई अर्थ नहीं है, तुम्हारे लिये?

शुभा जिस भावना से तुम मुझे देखना चाहते हो वह मेरा लक्ष्य नहीं है। वह कमजोरी है, तुम्हारी। मैं चाहती हूँ, तुम मुझे अपनी प्रेरणा के रूप में देखो। मुझे यह गौरव दो पारिजात।

पारिजात शुभा!

शुभा हम विहार के निकट आ गये हैं।

(बुद्ध शरणं गच्छामि के दूर से सुनाई देते पार्श्व ध्वनि प्रभाव)

पारिजात हाँ। आ ना गये हैं। फिर वहा गाना हाथ।

शुभा जानता है तुम क्या कहना चाहते हो।

पारिजात पहले मेरा बात ता सुनो।

शुभा कहो।

पारिजात आज हम विहार में प्रार्थना में भाग न लें।

शुभा और

पारिजात तुमने कहा था तुम मेरा प्रेरणा बनोगी?

शुभा कहा था मैंने। तुम्हें एक आध्यात्मिक आधार देने के लिये। तुम्हें उस शिखर तक पहुँचा देने के लिये, जो मेरी कल्पना का लक्ष्य है। यही मेरा कामना है।

पारिजात तुमने यह भी तो कहा था। हम स्त्री पुरुष भी हैं।

शुभा हाँ कहा था, मैंने।

पारिजात आज हम सब भुलाकर केवल स्त्री-पुरुष रह जायें और   और एक-दूसरे में लीन हो जायें।

शुभा वासना की यह किस घृणित अवस्था में आ गये हो तुम? यह भावुक कामुकता।

पारिजात मुझे तुम्हारा समर्पण चाहिये।

शुभा तुम अपना मन मेरी इस देह में क्यों उलझा रहे हो भिक्षु? हमने मिलकर एक सपना देखा है। तुम क्यों अपना आत्मबल खो रहे हो? क्यों मुझे वह स्थान नहीं देना चाहते जो देवी यशोधरा को प्राप्त है?

पारिजात देवी यशोधरा?

शुभा देवी यशोधरा को ही इसका श्रेय है कि राजकुमार सिद्धार्थ आज तथागत हैं। ऐसा क्या है मुझ में जो तुम्हें उस लक्ष्य तक पहुँचने से रोक रहा है?

पारिजात मैं उस दृष्टि से तुम्हें क्षण भर निहार लूँ। फिर बताऊँगा कि ऐसा क्या है, जो मुझे तुम्हारे दैहिक रूप में इतना आकर्षित करता है?

शुभा मैं तुम्हारे सामने खड़ी हूँ। जिस रूप में चाहो, देख लो मुझे।

पारिजात तुम्हारी ये आँखें बहुत सुन्दर हैं।

शुभा तुम्हें मेरी आँखें बहुत आकर्षित करती हैं?

पारिजात हाँ। ये अपूर्व सुन्दर हैं।

शुभा यह मेरा सौभाग्य है कि यहाँ शूल है।

पारिजात शूल क्यों तोड़ रही हो।

शुभा मैंने तुम्हारी प्रेरणा बनना स्वीकार किया है। शरीर के आधार पर नहीं। आत्मा के आधार पर।

पारिजात तुम अपनी आँखों में शूल क्यों घोंप रही हो ? यह क्या हो गया है, तुम्हें शुभा ? तुम अपने आप में नहीं हो।

शुभा यही तो प्रयास कर रही हूँ कि अपने आप में रह सकूं। यह लो मेरी आँखें। ये तुम्हें अर्पित हैं।

पारिजात यह क्या किया, तुमने ?

शुभा यह जीवन नियति के चाक पर रखा मिट्टी का लौंदा ही तो है।

पारिजात नियति का यह कैसा खेल है ?

शुभा अब तुम्हारा आत्मबल लौट आयेगा, भिक्षु। अर्पण स्वीकार करो। अपनी साधना पूर्ण करो।

पारिजात तुमने अपनी आँखों की रोशनी दी—

शुभा हाँ। मैंने अपनी आँखों की रोशनी दी ताकि तुम पूरे आत्मविश्वास से रोशनी की उस मशाल को लेकर आगे बढ़ सको जिसके लिये हम समर्पित हैं। रोशनी, जो आने वाले युगों तक भटके हुओं का मार्गदर्शन करती रहेगी और जिसे हमारे बाद आने वाली पीढ़ियों के अनेक शुभा और पारिजात जीवित रखेंगे। इसे बुझने न देंगे। अपनी भुजाओं का सहारा दो मुझे। विहार में चलें।

पारिजात ओह, शुभा यह कैसा दृश्य है ? पहाड़ी की गोद में यह पगडंडी। मेरी भुजाओं में, तुम। नदी में उतरती सूरज की लालिमा।

शुभा बौद्ध विहार से सुनाई देते ये प्रार्थना के स्वर

पारिजात प्रार्थना के स्वर।

शुभा रोशनी की निरन्तर परम्परा एक लकीर एक लौ रोशनी के सन्देशवाहक हम

(दोनों फ्रीज। पार्श्व से करुण संगीत। उसे सुपर इम्पोज करते बुद्ध शरण गच्छामि के स्वर)

(पटाक्षेप)

तलाश

वागीश कुमार सिंह

पात्र परिचय

1 माँ — उम्र पचास वर्ष के लगभग। सफेद साड़ी पहनती है। समाज सेविका है।

2 बेटा — उम्र पच्चास वर्ष के लगभग। आवश्यकता से अधिक मोटा है। [illegible] चेयर पर बैठा खाता रहता है।

(प्रतीकात्मक आधुनिक सामान से सजा एक कमरा।)

मंच के एक कोने से माँ अपनी आवश्यकता से अधिक मोटी बेटी को व्हील-चेयर पर लेकर आती है। बेटी का पूरा शरीर लकड़ी के चौकोर बक्से में ढंका है। केवल हाथ निकले हैं। पैर भी दिखाई देते हैं। व्हील-चेयर पर लकड़ी के बक्से के ऊपर डबलरोटी मक्खन-केक व फल इत्यादि खाने की वस्तुएँ रखी हैं। एक बड़ा-सा पारदर्शी हैल्मेट भी है।

माँ व्हील-चेयर मंच के मध्य लाकर खड़ी करती है।

माँ (दर्शकों से) नमस्कार। आपने मुझे पहचान लिया है मैं जानती हूँ। जी हाँ मैं आस्था संस्था की अध्यक्षा हूँ। उसी में अपना जीवन लगा दिया है मैंने। अगले महीने हम आदिवासी इलाके में एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन भी कर रहे हैं। पूरी दुनिया से स्वयंसेवी संस्थाओं के लोग आयेंगे। आप जानते हैं यह सब बातें। मैंने तो केवल इशारा किया है, ताकि आपको विश्वास हो जाये कि मैं वही हूँ। मैं आस्था से पन्द्रह दिनों की छुट्टी पर हूँ। बीच-बीच में छुट्टियाँ लेकर तीर्थयात्रा पर निकल पड़ती हूँ। नहीं नहीं मथुरा, काशी या किसी धार्मिक स्थल पर नहीं जाती अपने देश की जनता के बीच जाती हूँ। मेरे लिये जहाँ जनता जनार्दन है वहीं तीर्थस्थल है।

मेरा एक और जीवन भी है। आस्था संस्था से अलग। व्यक्तिगत जीवन कह सकते हैं। लेकिन व्यक्तिगत जीवन में मैं एक दुखियारी माँ हूँ। माँ के रूप में हर औरत दुखियारी ही होती है। पच्चीस साल से मैं भी माँ के रूप में यातना भोग रही हूँ और अब गले तक भर गई हूँ। कई बार सोचा है जीवन समाप्त कर लूँ।

लेकिन 'आस्था' संस्था चलाने वाली आत्महत्या कैसे कर सकती है? मरना कोई समस्या का हल तो नहीं है। कोई आस कोई उम्मीद मुझे मरने नहीं देती। (व्हील-चेयर की ओर इशारा करती है।) ये मेरी प्यारी सी बेटी है। इसका नाम है 'आजादी'। देश की आजादी की पच्चीसवीं वर्षगाँठ पर इसका जन्म हुआ था इसीलिए इसका आजादी नाम रखा था। (पुचकारते हुए) कितनी नादान कितनी भोली है मेरी बेटी। जो इसे देखता है यही कहता है, खरा सोना है। एकदम खरा। यही समस्या है। इसमें जरा खोट होता तो कोई समस्या नहीं होती। जो समस्या है वो भी इतनी अजीबोगरीब है कि जो सुनता है पहले हँसता है। उसकी गंभीरता बाद में समझता है। इसे खाने की बीमारी है। हर वक्त खाती रहती है। आप ही सोचिए दुनिया में कैसी-कैसी बीमारियाँ हैं! एक से बढ़कर एक। लेकिन मेरी बेटी को खाने की बीमारी हुई। डाक्टरों का कहना है बिलकुल स्वस्थ है। अगर यह खाने पर कन्ट्रोल कर ले तो एकदम ठीक हो जाएगी। आपकी जानकारी के लिए बता दूँ कि इसका

नाम गिनाज-बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज है। दुनिया की सबसे मोटा लड़की। लेकिन कोई भा माँ नहीं चाहेगा कि उसकी बेटा के नाम ऐसा रिकार्ड दर्ज हो। वह भा कुंआरा बेटी के नाम। हर माँ-बाप का यहा सपना हाता है, अच्छा सा लड़का मिले और बेटा खुशी-खुशा अपने घर जाए।

(बेटा खुश होती है। ताला बजाती है।)

बेटा माँ जल्दी करो ना मेरी शादी। मैं भा किसी की बाह में बाह डालकर फिल्म देखने जाऊं। *(बहुत खुश होती है। शर्माती भी है।)* माँ सब लोग मुझे देख रह हैं। इनमें बहुत सारे नौजवान भा हैं। वो रोमियो की फोटो देना रोमियो की। देखता हूँ किसी से मिलती है रोमियो की शक्ल ?

माँ बेटा धीरज धर धीरज। जरूर मिलेगा तुझे सपनों का रोमियो। इन लोगों से अपनी समस्या पर बात तो करन दे।

बेटी *(नाराज होकर)* माँ तुम मुझे बोलने नहीं देती। मैं टैंस हो जाता हूं और रिलेक्स होन के लिए मुझे खाना पड़ता है। *(जल्दी-जल्दी कुछ खाने लगती है।)*

माँ बात इतनी मामूली नहीं है जितनी आप सोच रहे हैं। मोटापा मेरी बेटी की ही समस्या नहीं है। यह वो मुसीबत है जो एक न एक दिन आप सब पर आने वाली है। अभी हाल ही में प्रकाशित एक वैज्ञानिक रिपोर्ट में कहा गया है कि देश में मोटे लोगो की संख्या तेजी से बढ़ रही है। ना कैंसर ना एड्स, मोटापा। मजे की बात है। इसका कारण अज्ञात है। कल्पना कीजिये अपन देश की जिसमें एक दिन सब मेरा बेटी जैस मोटे होंगे। आधे या चौथाई भी हो गए तो देश का क्या होगा ? वैसे अभी यह बीमारी गद्दी पर बैठ रहने वाले लोगों में ही ज्यादा है। मेहनतकश लोगों में कम है। लेकिन कितने हा मजदूर नेता भा मोटे हो रह हैं। वैज्ञानिक रिपोर्ट में कहा गया है, पचहत्तर प्रतिशत देशवासियों का वजन जरूरत से ज्यादा बढ़ रहा है। इसमें से इकहत्तर प्रतिशत की उम्र पच्चीस साल या इससे ज्यादा है। एडो क्लाइड ग्लैड के विशेषज्ञ डॉक्टर गॉड ने कहा है, यह वजन बढ़ना आश्चर्य की बात नहीं है। पूरी दुनिया में मोटापा एक महामारी के रूप में आने वाला है। पिछले दस सालों में एक औसत भारतीय के वजन में चार किलो की बढ़ोतरी हुई है जबकि मेरा वजन ही दस सालों में पन्द्रह किलो बढ़ा है। मेरा वजन हड्डियों मे बढ़ता है मास में नहीं। इसलिए बाहर से दिखाई नहीं देता। हँसने की बात नहीं है। साठ प्रतिशत लोगों को मोटापे के कारण दिक्कत होने लगी है। आप लोग भा लाइन में हैं। भगवान ना करे आपको मेरा बेटी की तरह मोटापा ढोना पड़े। मुझे भगवान का यही न्याय नहीं समझ में आता कि इस आने वाली महामारी की शुरुआत मेरी बेटी से ही क्यों हुई ?

बेटी माँ ! क्यों मेर मोटापे की सफाई दे रही हो। सारा दुनिया मुझे इस रूप में स्वीकार कर चुकी है वरना गिनाज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में मेरा नाम क्यों छपता ? तुम कहो ना सबसे मेरे लायक लड़का ढूंढे। *(शरमा जाता है।)*

मॉं बेटी, समयतो क्यों नहीं? शादी से पहले लड़की का स्लिम-ट्रिम जरूरी है। कुल मिलाकर बात यह है कि सब तरफ से हारकर, निराश होकर गली-गली में भटक रही हूँ। ऐसे आदमी की तलाश में जो मेरी बेटी की खाने की आदत छुड़ा दे। वैसे दुनिया भर के डाक्टरों न कहा है इसका ध्यान कहीं काम पर लगा दो। इसे व्यस्त कर दो। ये धीरे-धीरे खाने की आदत छोड़ देगी।

बेटी मॉं आधा इलाज ही क्यों बताती हो? दूसरी बात भी तो बताओ। बहुत से लोग यह नहीं कहते कि बेटी की शादी कर दो ठीक हो जाएगी?

मॉं हाँ, लोग यह भी कहते हैं। शादी, इसकी खाने की बीमारी छुड़ा सकती है। लेकिन अगर ना छूटा तो?

बेटी नहीं, मॉं नहीं। मैं छोड़ दूगा। बस तुम मेरी शादी कर दो। मैं अपने पति की हर बात मानूगी। वो कहेगा एक्सरसाइज करो, मैं करूगी। वो कहेगा डायटिंग करो, मैं करूगी। मैं खाना बनाऊंगी। झाड़ू, चौका, बर्तन सब करूगी। तू बता न सबको। इतना मोटी होने से पहल मैं कत्थक डासर थी। हाकी की खिलाड़ी थी। क्या-क्या नहीं थी मैं?

मॉं डास का एक तोड़ा तो सुना दे।

बेटी नहीं मॉं नहीं। कुछ नहीं करूगी शादी से पहले। मेरा प्रण है जो करूगी शादी के बाद। मैं बिकने वाला जानवर नहीं हूं, जो गुण देखकर मुझे ख़रीदा जाये। मैं तो काढ़ी राजकुमारी हू जिसे श्राप मिला है। शादी होते ही राजकुमारी बन जाऊंगी। मैंने मोटापे के काढ़ में अपने को छिपा रखा है। *(अपनी इस बात पर खुश होती है)* मैं खुश होती हू तो भी खाने को मन होता है। *(कुछ खाने लगती है।)*

मॉं *(बेटी को दुलारते हुए)* बताइये! कितनी प्यारी-प्यारी बातें करती है मेरी बेटी। कोई नहीं पकड पा रहा इसकी बीमारी का कारण। बड़े-बड़े डाक्टर, वैज्ञानिक साधु-सत, ओझा सबको दिखा चुकी हूं। कितने अस्पतालों में इसे भर्ती करवाया, महीनों रही है। बिलकुल ठीक रही है। नर्सो से, डाक्टरों से इतना अच्छा व्यवहार रहा है इसका कि सबने हार कर इसकी छुट्टी कर दी। स्वस्थ आदमी को तो कोई अस्पताल नहीं रखता ना? बस इसकी एनर्जी चैनेलाइज हो जाये। इसमें इच्छा शक्ति पैदा हो जाए कुछ करने की, एकदम ठीक हो जाएगी। जब-जब यह मुझ से दूर रही है, ठीक रही है। मेरे सामने ही एकदम लाड़ली-बिगड़ी-बिटिया बन जाती है। दो साल से तो यह हालत हो गई है कि समाज सेवा का काम भी नहीं कर पा रही हूँ। पहले मुझे जरा भी दिक्कत नहीं होती थी। यह मेरे साथ खुश रहती थी। चुप-चाप बैठी रहती थी। जरा भी तग नहीं करती थी। लेकिन अब लोगों को देखते ही मुझ अपमानित करने पर तुल जाती है। मैं बड़ी-बडी कान्फ्रेंसेस म नहीं जा पाती हूँ। लोगों से मिलजुल नहीं पाती हूँ। सबसे कटती जा रही हूँ *(बेटी सुनती है। उसे अच्छा नहीं लगता वो जल्दी-जल्दी कुछ खाने लगती है।)*

आप कोई ऐसा नर्स दिला सकते हैं जो इसकी चौबीस घंटे देखभाल कर सके? मैं नर्स के जिम्मे इसे छोड़कर कुछ दिन आस्था के लिए काम करता रहूँगा। मैं दूर रहने से शायद यह ठीक हो जाए! कोई बहन आगे बढ़ के सेवा का यह काम कर सकता है? दस हजार रुपये महीना तक तनख्वाह देने को तैयार हूँ। बस उसे अपना आजादी पूरी तरह गिरवी रखना होगा। साये की तरह बेटी के साथ रहना होगा। मैं जानता हूँ कोई भी इसके लिए तैयार नहीं होगा। किसी पुरुष को मैं रख नहीं सकती। पच्चीस साल की जवान लड़की है। पच्चीस साल मैंने इस आशंका में गुजारे हैं कि इसके साथ कुछ बुरा ना घट जाए? आजकल दुनिया में रहा हो क्या है? हत्या, आत्महत्या बलात्कार, यौन शोषण के अलावा। कभी-कभी तो मुझे लगने लगता है यह सब मेरी बेटी के साथ ही हो रहा है। कभी कभी लगता है ऐसा ही कुछ घटने वाला है। बस अब घटा कि अब घटा। मुझे तो यही लगता है कि यौन शोषण के बाद कोई भी औरत ऐसी ही हो जाती होगी। कभी कभी यह भी लगता है कि मेरी बेटी मेरे मन का ही ठोस रूप है। मैं तो कब की अन्दर से ख़त्म कर दी गई।

(बेटी गुस्सा होने लगती है।)

बेटी माँ। ख़बरदार जो अपने बारे में बोली। मुझे लाई है यहाँ तो मेरा बात कर।

माँ एक लड़का रखा था मैंने। कबीर। इसी की उम्र का था। पाला-पोसा, पढ़ाया, इसी के लिए किया। बस शादी करने में देरी कर दी। मेरे मन में लालच आ गया था। शायद कोई और अच्छा ख़ानदानी लड़का मिल जाए। बस मैं सोचती रह गई और वह हाथ से निकल गया। उसे अच्छा-सा काम मिल गया और वह दूसरे शहर चला गया। फिर भी आता था वो। लेकिन यही उससे झगड़ा करती रहती थी। एक दिन तो मारपीट, गाली-गलौज पर भी उतर आई। उस दिन के बाद वह लौट के नहीं आया।

बेटी *माँ! कबीर को बुला दे। मैं उससे शादी कर लूंगी। मैं तब रोमियो के प्यार में पागल* थी। माँ तूने बताया नहीं ना रोमियो के बारे में। पड़ोस में रहता था। शादीशुदा था। एक बच्चे का बाप। मुझसे बहुत प्यार से बातें करता था। मुझे देखते ही शरमा जाता था। शरमाना मैंने रोमियो से ही सीखा है। एक दिन मैंने कह दिया था उससे आई लव यू। बहुत हँसा था वह। हँसता ही रहा था। आप ही बताओ अगर प्यार नहीं करता था वो, तो वो मुझसे बात क्यों करता था? मेरा हर बात पर हँसता क्यों था? मैं आपसे सच कहती हूँ वह अपनी बीबी से डरता था। कई बार दिल करता था उसकी बीवी को मार दूँ। एक दिन उनका ट्रान्सफर हो गया वे चले गये। लेकिन मैं अब भी रोमियो को प्यार करती हूँ। कबीर को मैं कहती थी रोमियो की तरह हँसो उसके जैसे कपड़े पहनो, उसके जैसे दिखो। पर कबीर ने कभी मेरी बात नहीं मानी। मैंने इसीलिए एक दिन उसे पीटा। क्या गलत किया? लेकिन उसे मुझे छोड़कर नहीं जाना चाहिए था। पति-पत्नी में तो मारपीट होती रहती है। जरूरी भी है।

प्रम का पता ही मारपीट से चलता है। बस रोमियो के साथ मारपीट की इच्छा मन में रह गई। सच बताऊँ मैं उसकी पत्नी से डरती थी। मेरा सहारा, बस रोमियो की एक तस्वीर है। माँ मेरी आँखों मे आँसू आने वाले हैं, तस्वीर दे दे।

माँ अभी नहीं थोडी देर के बाद। उसे भुलाने की कोशिश कर। हर वक्त उसकी तस्वार आँखा के सामने रखेगी तो उसे भुला कैसे पाएगी ? तू अपनी सेहत पर ध्यान दे। हर वक्त जुगाली करना बद कर। कुछ काम कर। एक क्या दस लड़के ला दूगी तेरे लिये।

बेटी पारवी को लाकर दिया था सुन्दर लड़का। वह तो हूर की परी है। कोई कमी नहीं है उसमें। फिर भी अकेली है।

माँ पारवी मेरी बडा बेटी है। सुदरता में किसी भी फिल्म अभिनेत्री से कम नहीं है। सेहत का इतना ध्यान रखती है कि शरीर पर मक्खी तक नहीं बैठन देती। उसका मर्द भी सर्वगुण सम्पन्न था। पता नहीं क्या हुआ ? एक दिन छोड़ गया उसे। लेकिन वह आत्मनिर्भर है। उसे कोई बेवकूफ नहीं बना सकता। मर्दों को उगली पर नचाना उसे खूब आता है। लेकिन अब वह हमेशा चुप रहती है। उसकी चुप्पी से सब डरते हैं।

बेटा माँ ! माँ ! मैं बताऊँ पारवी के पास कोई मर्द टिकता क्यों नहीं ? क्योंकि वो सर्वगुण सम्पन्न है। आदमी को सर्वगुण सम्पन्न औरत नहीं चाहिए होती। उसे मेरे जैसी औरत चाहिए होती है। मास का लोथड़ा अच्छा लगता है। हाँ, मैं थोड़ी ज्यादा मोटी हो गई हूँ। किसी अच्छे आदमी का इन्तजार करते-करते ऐसी हो गई हूँ। जैसे ही कोई मर्द मेरा हाथ पकडेगा देखना मैं एकदम बदल जाऊँगी। एकदम पारवी जैसी हो जाऊँगी। नहीं, नहीं वैसी नहीं बनूँगी। बस थोड़ी कम मोटी हो जाऊँगी। माँ मैं बिलकुल नहीं चाहती कोई मर्द मजे लेकर मुझे छोड द। मैं तो उसे जजीर से बाध कर रखूगा।

माँ बेटा, थोडी देर आराम कर ले। *(मास्क से उसके चेहरे को ढक देती है।)* मैं बरबाद हो रही हूँ। अन्दर ही अन्दर वजन बढ़ रहा है मेरा। एक दिन मैं इसके जैसी हो जाऊँगी। फिर हम माँ-बेटियों का क्या होगा ?

बेटी *(मास्क हटाकर)* हम दोनों सर्कस कम्पनी में भर्ती हो जाएँगी। अपने मोटापे के लिये टिकट लगाया करेंगे।

मा देखा आपने। पता नहीं इसे कैसे पता चल जाता है, मैं कब क्या कह रही हूँ। कहा ना थोडी देर चुप रह। *(फिर मास्क से ढक देती है)* इस हैल्मेट में जरा भी आवाज नहीं जा सकती। इसके कारण मैं किसी से मिलने नहीं जा सकती। कोई मुझसे मिलने नहीं आ सकता। यह लोगों के सामने मुझे गालियाँ देने लगती है। रोने लगती है। पता नहीं किस जनम के पाप थे जो भुगत रही हूँ। कोई कहेगा मेरा यह हाल देख कर कि मैं हा 'आस्था' की सचालिका हूँ। इसे पता है अतरराष्ट्रीय कान्फ्रेंस के बारे में। यह वहाँ रहना चाहती है मेरे साथ। ऐसा हो सकता है ? अपने देश की

बात हो तो फिर भी मैं अपमानित हो लूगा, लेकिन विदेशी लोगों के सामने मेरी बेटी मेरा अपमान करे मैं हर्गिज बर्दाश्त नहीं करूँगी।

बेटी *(माथे से हैल्मेट निकाल फैंकती है गुस्से में।)* मेरा मुँह ढक दिया और मेरी बुराइयाँ कर रही है? आप लोग इसकी बातों को सच मत समझना।

माँ बेटी। *(दर्शकों से)* लगता है यह रेडियो की तरह मेरे दिमाग की तरगों को पकड़ने लगी है। एक और मुसीबत। *(बेटी से)* सारी बातें जाने बिना ये हमारी मदद कैसे करेंगे?

बेटी तू मेरे पीछे पड़ी हुई है। तू मुझे चाचा ताऊओं के यहाँ छोड़ कर दुनिया भर में घूमती रहती है। मारते हैं मुझे उनके बेटे। *(दर्शकों से)* आपको क्या बताऊँ? क्या क्या किया है उन्होंने मेरे साथ। मेरे दाँत तोड़े हैं। मेरा हाथ तोड़ा है। घूसों से, मुक्कों से मारा है मुझे। क्यों? क्योंकि मैं हर वक्त खाती रहती हूँ। मैंने कितनी बार कहा है इस चुड़ैल से, माँ मैं मर जाऊँगी किसी दिन। मुझे रिश्तेदारों के यहाँ मत छोड़ा कर। मुझे अनाथालय में डाल दे। किसी भिखारी से शादी कर दे। भिखारी तो बहुत हैं हिन्दुस्तान में। दिन भर भीख माँगूगी।

माँ भिखारी भी तुझे कुछ दिनों बाद छोड़ गया और एकाध बच्चा भी पैदा कर गया तो? उसे कौन सभालेगा? मैं तो तुझे ही नहीं सभाल पा रही।

बेटी *(और गुस्से से)* देखो-देखो यह क्या कह रहा है? मैं मुसीबत हूँ इसके लिये? तो फिर तूने मुझे जन्म क्यों दिया था? *(दर्शकों से)* मैं अपने पिता के पास गई हूँ कई बार। उसने हमेशा मुझे धक्के देकर निकाला है। उल्लू का पट्ठा। एक नबर का कमीना है। हर बार मैंने उसे एक नई औरत के साथ देखा है।

माँ यह सच है। जो अन्याय इसने देखा है मेरे साथ, उसी का इस पर असर है।

बेटी तू चुप कर। ज्यादा सती सावित्री मत बन। बाप ने हमेशा एक ही बात कही है। तेरी माँ वेश्या है। जा वेश्या की औलाद तू बेटी नहीं है मेरी। यह किसी दूसरे आदमी से इश्क लड़ा रही थी। तभी तो मेरे बाप न इसे निकाल दिया घर से।

माँ तू तो हर वक्त मेरे साथ रहती है तूने कभी किसी मर्द के साथ रगरेलियाँ मनाते देखा मुझे?

बेटी ज्यादा होशियार मत बन। बता जब वह तुझे मारता था तो तू चुपचाप मार क्यों खाती थी? उसने तुझे निकाला तो तू चुपचाप निकल क्यों गई? तू मुझे यह बता तूने आज तक उससे तलाक क्यों नहीं लिया?

माँ क्योंकि वह वापस आएगा एक दिन।

बेटी कब आयगा? जब तू बूढ़ी हो जायेगी। जब मेरी जिन्दगी खत्म हो जाएगी। मेरा शादी की उमर है क्यों नहीं करती मेरी शादी? हर्जाना ले उससे मेरे लिये। पैसे से सब कुछ हो सकता है। एक से एक अच्छा लड़का आ जाएगा मेरी जजीर में बधने के लिए। *(दर्शकों से)* आप लोग ही बताइये मैं तो पागल हूँ। हो सकता है मुझे

इसकी बातें समय नहीं आती हों। बताइए, यह वापस क्यों चाहती है अपने मर्द को? वह इस बुढ़िया के पास क्यों आएगा? है क्या इसमें? वह एक से एक सुन्दर लड़कियों के साथ रह रहा है।

माँ लेकिन वो शादी तो नहीं कर सकता ना, जब तक कि मैं तलाक नहीं ले लेती। आदमी औरत आखिरकार शादी करके ही सुखी रह सकते हैं।

बेटी तू भी तो शादी नहीं कर सकती और मैं भी नहीं कर सकती। *(दर्शकों से)* मैं आप सबसे कहता हूँ मेरी शादी करवा दो। ये नहीं करवाएगी। ढोंग करती है ये। इसे मुझसे बहुत फायदा है। दुनिया भर की सहानुभूति बटोरती फिरती है। *(माँ से)* बोल! चुप क्यों है? *(माँ ने इस बीच बेटी के लिए पानी का गिलास भर दिया है उसमें नींद की दवा की गोलियाँ भी मिला दी हैं।)*

माँ *(पुचकारते हुए)* क्या बोलूँ? तेरी बात गलत नहीं है। माफ कर दे मुन्ने। मैं देवी नहीं हूँ। हाड़-मांस का पुतला हूँ। मानती हूँ मुझसे गलतियाँ हुई हैं। लेकिन मैंने जो किया सोच समझ कर तेरा भलाई के लिए किया। सही और गलत का पता तो बाद में ही चलता है। *(पानी पिलाती है। बेटी हिचकिचाहट के साथ पीती है)* *लेकिन मैं गलतियों की सजा भुगत रही हूँ। जिम्मेदारियों से भागी तो नहीं हूँ।*

बेटी *(पानी का गिलास खाली करने के बाद दर्शकों से)* मैं जानता हूँ मुझे माँ को ऐसा नहीं कहना चाहिए। गाली नहीं देनी चाहिए। लेकिन मैं क्या करूँ? भगवान से रोज प्रार्थना करती हूँ मुझे उठा ले। वह नहीं उठाता। मेरे पिता को उठा ले। वह नहीं उठाता। इस माँ को उठा ले वह नहीं उठाता। *(रोने लगती है।)*

माँ बेटी, तू इतना मत सोचा कर। बस कर्म कर फल की इच्छा मत कर।

बेटी *(जैसे उस पर नींद की ख़ुमारी हावी हो रही है।)* फिर शुरू हो गई! क्या कर्म करूँ? बता! मुझे फल पहले चाहिए कर्म बाद में करूँगी। तूने जिन्दगी भर कर्म किये पारवी ने कर्म किये तेरा क्या हो रहा है? पारवी का क्या हो रहा है? *(दर्शकों से)* यह मारना चाहती थी मुझे। जब मैं पेट में थी तभी से। क्या क्या दवाएं नहीं खाईं इसने बच्चा गिराने की! लेकिन मैं फिर भी पैदा हो गई। इतनी बड़ी हो गई। अभी तक मरी नहीं। ऐसी-ऐसी दवाएँ खिलाई है इसने मुझे कि पूछो मत। मेरी नाक बहने लगती थी। बुखार आ जाता था। आप ही बताइए दवाइयों से आया है किसी को बुख़ार? मुझे आया है। सैकड़ों बार यह हालत हुई है मेरी कि मैं उठ भी नहीं पाती थी। विदेशों से मंगवा मंगवाकर दवाइयाँ खिलाती थी ये मुझे। मैं कहती थी आयुर्वेद है योग है होम्योपैथी है, पर यह सुनती ही नहीं थी। जब मैं विदेशी दवाइयाँ खाकर लाइलाज हो गई तब यह देसी इलाज ढूंढ़ती फिर रही है। मुझे शक है इसने दवाइयाँ खिला कर मुझे मोटा किया है। उस पति नाम के मर्द से बदला लेने के लिए जो इसे मारता था। जिसने इसे लात मार कर घर से निकाला था। *(रोने लगती है)* बिलकुल सच कह रही हूँ मैं। अब मुझे पता चल गया है। क्या हुआ है मेरे साथ? उस आदमी ने जो मेरा बाप है मेरे साथ क्या क्या नहीं किया है? इस से

बदला लेने के लिए। जब मैं छोटी थी, यह किसी से इश्क कर रहा थी। जब उसे इसके कारनामों का पता चला तो वह गुस्से से भर उठा। उसने इससे बदला लेने के लिए मेरी जिन्दगी बर्बाद कर दी। बचपन में मेरे साथ मेरे बाप ने वह सब किया जो एक पति अपनी पत्नी के साथ करता है। *(रोने लगती है)*

मा [*(कुछ समय में नहीं आता)* व्हील-चेयर पर लटके थैले से एक बड़ी-सी तस्वीर निकालती है। तस्वीर बुरी तरह से चिपका कर जोड़ी गई है जो शायद कभी टुकड़े टुकड़े कर दी गई थी। तस्वीर देखने में एक वन-मानुष की है।] बेटी ले, रोमियो की तस्वीर, तू मांग रही थी ना?

बेटी *(नींद उस पर और हावी होती जा रही है)* माँ मेरा अच्छी माँ। पहले क्यों नहीं दी तूने। मुझे इतना गुस्सा नहीं आता और अब तो मैं थक भी चुकी हूँ। नींद भी आ रही है। सामने बैठे लोगों से कैसे मिलाऊं रोमियो की तस्वीर? कैसे चुनू मैं अपना पति? (सम्भलकर) तूने पानी में नींद की गोलियां मिला दी हैं?

माँ हाँ डॉक्टर ने कहा है तुझे गुस्सा आने पर देने को।

बेटी कोई कुछ नहीं कर सकता! यह तस्वीर ही मेरा सहारा है। जिस दिन यह खो जाएगी उस दिन मेरा क्या होगा? गुस्से में मैंने कितनी बार इसे फाड़ा है? लेकिन माँ ने इसे हर बार चिपका दिया है। *(तस्वीर को देखकर)* रोमियो आई आई हेट यू। *(उसे फाड़ने लगती है। लेकिन माँ उससे ले लेती है। बेटी पर नींद की गोली का असर हो गया है)* माँ! माँ! माँ!!! आई आई लव यू *(वो सो जाती है)*

माँ *(दर्शकों से)* कहते हैं महाभारत मे जब द्रौपदी की साड़ी भरे दरबार में खींची गई थी तब कृष्ण नाम के किसी भगवान ने उसके सतीत्व की रक्षा की थी। मेरी बेटी मुझे रोज द्रौपदी बताती है। लेकिन कोई भगवान आता क्यों नहीं? शायद कृष्ण ने मरने के बाद दुबारा कभी जन्म ना लेने की कसम खाई हो। *(बेटी को देखकर)* हैरानी होती है मुझे अपनी ही बेटी को देख देख कर। कैसी-कैसी सनसनीखेज कहानियाँ गढ़ लेती है यह। मेरा पति जैसा भी था जो भी था उसने कभी इसके साथ कुकर्म नहीं किया। आज भी मेरी बेटी कुंआरी है। आज तक इसका कौमार्य भंग नहीं हुआ है। हाँ मैंने अपने दुश्चरित्र पति से बदला लेने के लिए दूसरे आदमी से इश्क किया था। वह मुझे कभी नहीं समझ पाया और मैं भी आज तक नहीं समझ पाई हूँ। शायद आदमी औरत के सम्बन्धों की एकमात्र सच्चाई यही है कि दोनों कभी एक दूसरे को नहीं समझ पाते। *(सम्भलकर)* माफ करिएगा आदमी औरत के झगड़ों से तो मैंने बरसों पहले ही पीछा छुड़ा लिया था। मुझे तो आस्था से और बेटी से ही फुर्सत नहीं है। दोनों की चिंता मुझे मोटा कर रही है। रात को सपने में देखती हूँ अपने आपको आजादी से भी मोटी हो चुकी हूँ। कुछ भी खा रही हूँ। एक रात सपना आया मुझे—आकाशवाणी सुनाई दी। भगवान आम आदमी में छिपा है। जिस दिन वह तेरा उद्धार करना चाहेगा किसी आम आदमी के

मुंह से हा बोलेगा। तुझे दर-दर ढूँढना होगा उसे।' मैंने सोचा यह भी कर देखू। घूमने-फिरने से सेहत ठीक रहेगी। मन की बात कह देने स मन का बोध हल्का रहेगा। इसी बहाने से देश को जानूंगी लोगों को जानूंगी। *(फिर खिसियानी हँसी हँसती है।)* आप लोगों का ही अब भरोसा है मुन्ने। आप जो उपाय सुझाएंगे करूंगी। अपनी बेटी के लिए जहाँ कहेंगे वहाँ जाऊँगी। अच्छा चलती हूँ। मुझ दुखियारी की मदद करना मत भूलिएगा जी, पता ? पता क्या बताऊं ! पता और फोन दोनों का बदमाश लोग गलत फायदा उठाते है। फोन नम्बर कुछ नहीं दूंगी। जो कोई सच्चा इन्सान होगा मेरी मदद करना चाहेगा, मुझे ढूंढता हुआ आ जाएगा मेरे पास। मैं किसी भी चौराहे पर, किसी भी गली मोहल्ले में मिल जाऊंगी, अपनी बेटी के लिए दुआएं मांगती हुई। मैं आत्महत्या नहीं करूंगी ना अपनी बेटी को करने दूंगी। हम हर हाल में जिंदा रहेंगे, इतना मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ। आप लोग भी तो मेरी बेटी की तरह सोने जैसे खरे हैं। जरा भी खोट नहीं है आप में। सभल कर रहिएगा। कहीं बदमाश आपको भी ठग नहीं रहे ? आपको पता ही ना हो और आप लूटे जा रहे हों ? *(चलने लगती है फिर रुकती है।)* हाँ, मैं केवल आजादी की माँ ही नहीं हूँ, आप लोगों के दिलों की 'आस्था' भी हूँ। अब तो आप अच्छी तरह से पहचान गए ना मुझे ? मैं जो दर-दर की ठोकरें खा रही हूँ, वास्तव में मैं नहीं खा रही हूँ, आप लोगों की आस्था खा रही है। मैं तो बस प्रतीक मात्र हूँ। *(धीरे-धीरे व्हीलचेयर को चलाती हुई ले जाती है। संगीत उभरता है। प्रकाश लुप्त होता है।)*

सच का सच

मदन मोहन माथुर

पात्र परिचय

1 पहला व्यक्ति
2 दूसरा व्यक्ति
3 तीसरा व्यक्ति
4 कठपुतली वाला

सच का सच

(निर्जन स्थान पर एक खण्डहर मकान का एक हिस्सा। पीछे दीवार में एक रोशनदान जिसमें लगा लोहे की सलाखों में एक मजबूत रस्सा झूल रहा है। मंच मध्य रोशनदान से आती किरणें वहाँ बेतरतीब पड़ी चीजों को धीरे-धीरे प्रकाशित करता हैं। कबाड़नुमा सामान—ड्रम, टूटी कुर्सी, टायर, बच्चों की गाड़ी-बाबागाड़ी, टूटा खाट बोतलें, किताबों के पन्ने आदि।)

(एक आदमी दौड़ता हुआ दायीं विंग से प्रवेश करता है। ठहर कर हाँफता है। बैठने के लिये इधर-उधर जगह तलाश करने लगता है। तभी बायीं विंग से एक दूसरा आदमी उलटे कदम धीरे-धीरे प्रवेश करता है। पहले आया आदमी डरता है मफलर मुँह पर लपेटता है और दूसरे आदमी को दोनों हाथों से छूता है। दूसरा आदमी चौंक पड़ता है।)

दूसरा आदमी — कौन? कौन हो तुम? यहाँ कैसे?

पहला आदमी — जैसे तुम यहाँ हो। कोई दूसरा भी तो हो सकता है।

दूसरा आदमी — नहीं। ठीक वैसे मुमकिन नहीं।

पहला आदमी — क्यों? तुम किसी विशेष काम से यहाँ आये हो? इस सुनसान भूतहा हवेली में। और वह भी इस वक्त जब गायें धूल उड़ाती घर लौटती हैं और शहर में पुलिस की गश्त तेज कर दी गई है।

दूसरा आदमी — पुलिस? गश्त! क्यों?

पहला आदमी — थोड़ी देर पहले पुलिस गाड़ियाँ सायरन बजातीं बैंक की तरफ गई थीं। शायद कोई

दूसरा आदमी — शायद मुझे पता है। बैंक बन्द होने के कुछ देर बाद ही अलार्म बजा और ऊपर के माले में रहने वाले मैनेजर ने पुलिस को खबर की। कोई बैंक बंद होते समय इमारत में कहीं दुबक गया। उसने तिजोरी तोड़ने की कोशिश की और वहाँ लगा अलार्म अपने आप बज उठा।

पहला आदमी — तुम इतना कुछ कैसे जानते हो?

दूसरा आदमी — मैंने बैंक भवन से मैनेजर को तेजी से उतर कर बैंक की इमारत खोलते देखा। उसे देखकर सामने की चाय की दूकान पर बैठा चौकीदार भागा फिर और कई लोग। मैनेजर ने उनको कुछ बताया। सभी अन्दर गये और फिर पुलिस सायरन बजने लगे। मेरा अंदाज सही था।

पहला आदमी — अन्दाज खासा अच्छा कर लेते हैं। जासूसी उपन्यास पढ़ते लगते हैं।

दूसरा आदमी — यह तुम्हारा अन्दाज है। अपने आस पास को लेकर आदमी इतना तो सचेत और सवेदनशील होना ही चाहिये।

पहला आदमी — सचेत सवेदनशील चलिये मेरा दूसरा अन्दाज तो गलत निकला।

दूसरा आदमी — ओ हो तो जनाब का अन्दाज था कि बैंक लूटने की कोशिश करने वाला आदमी मैं ही हूँ।

पहला आदमी — सच पूछें तो था। मगर सचेत' और सवेदनशील जैसी विचारवान शब्दावली वाला आदमी वैसा नहीं हो सकता। हाँ, उपन्यास पढ़ने वाला जरूर हो सकता है।

दूसरा आदमी — विचारवान शब्दावली । अगर हमारा बोलने का तरीका हमारी पहचान हो तो तुमको भी उस बैंक लुटेरे के शक से बरी करना पड़ेगा।

पहला आदमी — *(हँस कर)* यह खूब रहा। हम एक दूसरे पर शक करते हैं और फिर एक दूसरे को दोषमुक्त भी कर देते हैं। शक का आधार स्थितियाँ और फैसले का आधार भाषा।

दूसरा आदमी — फिर नतीजे तक छलाग लगाकर पहुँचने की कोशिश कर रहे हो। आदमी की पहचान इन बातों के अलावा भी कई तरह से हो सकती है। अनुभव भी कोई चीज है। अगर अनुभव आदमी को पहचान नहीं सिखाता तो किसी काम का नहीं।

पहला आदमी — अनुभव का निष्कर्ष इट्यूशन' के रूप में हमारे व्यक्तित्व का हिस्सा बन कर रहता है।

दूसरा आदमी — मनोविज्ञान का अच्छा अध्ययन है।

पहला आदमी — नहीं वैसा कुछ नहीं। मगर माफ करें मेरे पास पर्याप्त कारण थे आपको

दूसरा आदमी — जानता हूँ। रोशनदान से बधा यह रस्सा। तुम्हें यहाँ देखकर चौंक पड़ना। सुनसान जगह पर होना ही अपने आप में सन्देह जगाने को काफी होता है।

पहला आदमी — जी नहीं। हम दोनों सुनसान जगह में हैं इसलिए एक दूसरे पर शक करने की एक वजह तो अपने आप खारिज हो गई। रही बात इस रस्से की, तो उसकी कोई खास जरूरत हो नहीं सकती थी, इस जगह तक पहुँचने के लिये।

दूसरा आदमी — तो फिर यह रस्सा इस जगह यूँ क्यों बधा है? काफी मजबूत भी है।

पहला आदमी — हम पहली बार देखकर जो समझ लेते हैं वह अक्सर गलत निकलता है। सभी विकल्प खुले रखने चाहिये। जैसे इस सुनसान में किसी ने आत्महत्या करने की तैयारी की हो।

यकीनन आत्महत्या के लिये चुनो जा सकता है। फिर एक टूटी कुर्सी भी है जिस पर चढ़ कर गले में फ्दा डाला जा सकता है और कुर्सी को ठोकर से गिराकर झूलते हुए स्वर्ग पहुँचा जाय। क्या कल्पना है!

पहला आदमी मैंने एक अदाज लगाया है। बाकी सभी विकल्प अब भी खुले है क्योंकि किसी ने भी आत्महत्या की नहीं है। और न यहाँ कोई आत्महत्या करने जाने वालों से कुछ क्षण रुककर जिन्दगी के महत्व को समझाने का कोई बोर्ड लगा है। रस्सा बिलकुल नया है। आज ही खरीदा होगा। खरीदने वाले की जेब में रसीद भी हो सकता है।

दूसरा आदमी हो सकता है आखिरी पल इरादा बदल कर घर लौट गया हो। मौत का खयाल अक्सर जवान लोगों को ही क्यों आता है? किसी बूढ़े आदमी को आत्महत्या करते मैंने तो नहीं सुना।

पहला आदमी जीवन को सभी उतार चढ़ावों में नजदीक स देखने पर उसके प्रति मोह बढ़ जाता है। बुढ़ापा मौत की हकीकत के ऐन कराब होता है।

दूसरा आदमी जवानी जीवन सघर्ष में सभी चुनौतियों के लिय तैयार रहती है और तब मौत भी एक चुनौती से ज्यादा या कम नहीं लगती है।

पहला आदमी हम एक दूसरे की बात को इस तरह पूरा करते कि कोई तीसरा सुने तो सोचे कि हम दोनों के सोचने में समानता है और तब हमारी पसन्द, इरादे और शौक भी एक होने चाहिये।

दूसरा आदमी जैसे बैंक लूटना। *(दोनों हँसते हैं।)*

पहला आदमी इस बात को लेकर हमारा हँस पाना ही हमें निर्दोष साबित कर देता है।

दूसरा आदमी सुना है शातिर अपराधी ऐसा भी कर पाते हैं। *(फिर दोनों हँसते हैं)* वैसे हम में से शायद वैसा कोई नहीं है।

पहला आदमी शायद मेरे लिये इस्तेमाल कर रहे हैं?

दूसरा आदमी नहीं, नहीं कहने का एक तरीका है, बस। तुमने अभी कहा था कोई तीसरा आदमी हो तो तीसरा आदमी यहाँ मौजूद है।

पहला आदमी क्या? कहाँ? पहेली बुझा रह हैं? उम्र क लिहाज से ता आपको इतना रहस्यमय नहीं होना चाहिय।

दूसरा आदमी अच्छा तो उम्र भी पहचान का अहम हिस्सा है।

पहला आदमी कुछ हद तक और आमतौर पर काफी हद तक। फिर अपवाद कहाँ नहीं होते?

दूसरा आदमी सुनसान जगह पर इस वक्त होना अपवाद ही है और उस पर हमारी उम्र का अन्तर।

पहला आदमी क्या कहना चाहते हैं ?

दूसरा आदमी यही कि जिन अलग-अलग कारणों और इरादों से हम एक जगह हैं, उन्हीं में हमारी पहचान भी छुपी है।

पहला आदमी हो सकता है हमारे कारण और इरादे भी एक हों। वैसे भी अनायास तो कोई इस सुनसान में इस समय आता नहीं। हम इतनी देर से यहाँ हैं और कोई तीसरा यहाँ नहीं आया।

दूसरा आदमी मैंने कहा न तीसरा यहाँ मौजूद है।

पहला आदमी कहाँ है ?

दूसरा आदमी उस तरफ पड़ा है। मैं उसे उस तरह पड़ा देख कर डर गया था और भाग निकलने की सोच रहा था कि

पहला आदमी मैं आ गया। आपको उलटे कदम आते देखकर मैं भी डरा था। पर पहले उम्र फिर भाषा और सोच से आश्वस्त हो गया। कैसे पड़ा है वह ? मरा हुआ ? बेहोश ? कुछ कर सकते हैं हम ?

दूसरा आदमी पता नहीं। मैंने छुआ हिलाया मगर वह वैसे ही पड़ा रहा।

पहला आदमी चलो देखते हैं। शायद बेहोश ही हो और हम उसे बचा सकें।

दूसरा आदमी और मरा हुआ तो ? मुसीबत में नहीं फस जायेंगे ? तुम जाओ। मैं यहीं बैठता हूँ।

पहला आदमी माफ करें। मुझे कोई खास रुचि नहीं है उसमें। हाँ जिन्दगी में रुचि है। इसीलिये सोच रहा था बेहोश ही हो और हम कुछ मदद कर सकें।

दूसरा आदमी मैं जानना चाहता था वह है कौन और यहाँ यूँ क्यों पड़ा है ? इसके अलावा कोई बात नहीं थी। मैंने पहले छू कर यह जानना चाहा कि जीवित है कि नहीं और फिर यह कोई ऐसा तो नहीं जिसे मैं जानता हूँ।

पहला आदमी नहीं जानते तो कोई मतलब नहीं ? ठीक वैसे ही जैसे सड़क पर दुर्घटनाग्रस्त को भीड़ देखती रहती है और सैकड़ों लोग किसी से क्या हुआ ? पूछ कर आगे बढ़ जाते हैं।

दूसरा आदमी नहीं नहीं। मैं उनमें से नहीं जो समझते हैं ख्वाम-ख्वाह अदालतों के चक्कर लगाने पड़ेंगे।

पहला आदमी फिर भी जीवन चाहे किसी का हो, अनमोल है। उसमें रुचि संसार और सृष्टि में रुचि है। यह एक अलग बात है।

दूसरा आदमी छोटी छोटी घटनाओं में बड़ी-बड़ी बातें ढूंढने का काम दर्शनशास्त्री करते हैं। प्रोफेसर हैं ?

पहला आदमी आपके अन्दाज एक के बाद एक गलत होते जा रहे हैं।

दूसरा आदमी — तुम्हारे भी तो सही कहाँ हो रहे हैं? बल्कि कहना चाहिये तुम शब्दजाल बुनते हो। हकीकतों में कोई रुचि नहीं दिखती। जा कर देखते क्यों नहीं उसे?

पहला आदमी — वह भी करूँगा। पहले आपके इरादों से तो शक दूर हो। अभी तक भी हम एक दूसरे के लिये अजनबी हैं और हमें बार-बार सिखाया जाता है कि

दूसरा आदमी — अजनबी का भरोसा न करें। यात्रा में किसी की दी खाने की चीज न स्वीकारें और कोई भी लावारिश चीज न छुएँ। पुलिस को खबर करें। वह चीज

पहला आदमी — *(चुप)*

दूसरा आदमी — बम भी हो सकती है। *(हँसता है।)*

पहला आदमी — मुझे तो ऐसी किसी चेतावनी में हँसने की कोई वजह दिखाई नहीं देती। (पॉज)

दूसरा आदमी — *मुझ से किसी गड़बड़ का शक करते हो? तुम्हें उधर भेजकर क्या मैं भाग जाऊँगा?*

पहला आदमी — हो सकता है।

दूसरा आदमी — मैं अब भी यहाँ से जाना चाहूँ तो, मुझे रोकने वाले तुम कौन होते हो?

पहला आदमी — *(रोकते हुए)* एक मिनट। आप कानूनी हैसियत पूछना चाहते हैं या मेरी शारीरिक क्षमता जाँचना चाहते हैं? दोनों इस स्थिति विशेष में आपके लिये अनुकूल नहीं हैं। *(उसे बिठाते हुए)* इसलिये इतमिनान से बैठिये और हकीकत बयान करिये।

दूसरा आदमी — *(उठने की कोशिश करते हुए)* देखो तुम मुझे इस तरह नहीं रोक सकते।

पहला आदमी — क्या करेंगे आप? सहायता के लिये चिल्लायेंगे? चिल्लाइये। कोई आ गया तो यहाँ होने की सफाई क्या देंगे? सोच लीजिये तब मैं आने वाले या वालों को साथ लेकर ही उधर जा कर तुम्हारा बताई कहानी का सच जानने की कोशिश करूँगा।

दूसरा आदमी — बस करो। यह जवाब तो तुम्हें भी देना पड़ेगा। फिर यह कैसे साबित करोगे कि पहले यहाँ कौन आया। मैं या तुम?

पहला आदमी — असुरक्षित अनुभव करने वाला ही पहला होगा। नहीं तो, चिल्लाते क्यों नहीं? *(दायीं विंग से किसी के आने के संकेत। घुंघरू खनकाते हाथ में दो कठपुतलियाँ लिये एक आदमी प्रवेश करता है। वहाँ उन दोनों सभ्रान्त लोगों को देखकर वह लोक कलाकार ठिठक जाता है।)*

कलाकार — माफ करिये। रात बसेरे के लिये इजाजत दें तो पास की बस्ती में खेल के बाद कुनबा यहीं रात काट ले।

दूसरा आदमी — नहीं नहीं यहाँ नहीं। कोई और जगह तलाश करो। हम कोई जरूरी बात कर रहे हैं।

कलाकार — आप मजाक कर रहे हैं, साहब। आप तो तफरीह में निकले हैं। यहीं भी बैठ सकते हैं। होटल, दुकान जहाँ ठहरें, तीन लोग आवभगत करने वाले मिल जायेंगे। हमारे लिये तो ऐसी जगह रात काटने के लिये काफी होगी।

पहला आदमी — देखो भाई, और किसी दिन की तो बात नहीं करता। आज यहाँ ठहरने की सलाह मैं नहीं दूगा। पास के बैंक को किसी ने लूटने की कोशिश की है। शहर-भर में पुलिस गश्त लगा रही है। बेकार, मुसीबत में फस जाओगे।

कलाकार — हम लोग ठहरे घुमक्कड़। ऐसी मुसीबतें, साहब, रोज आती हैं। सबसे पहले हमें ही पकड़ ले जाते हैं। हमारे पास कुछ मिलता नहीं। हमारी रात मजे में कट जाती है। थाने में ही सही।

दूसरा आदमी — फिर भी

पहला आदमी — ये बताओ *(दोनों लगभग एक साथ बोल पड़ते हैं।)*

दूसरा आदमी — सॉरी तुम पूछ लो।

पहला आदमी — नहीं, नहीं, कोई खास बात नहीं है। आप पहले

दूसरा आदमी — फिर भी आज मेरी सलाह मान लो। कहो तो मैं स्कूल के अहाते में रात काटने का इन्तजाम कर दूं। सुबह बच्चों को खेल दिखाकर निकल जाना। *(पहले आदमी से)* क्यों? ठीक नहीं रहेगा?

(अप्रत्याशित सम्बोधन से पहला आदमी चौंकता है पर तुरन्त स्वय को सतुलित करते हुए सहमति सूचक सिर हिला देता है।)

कलाकार — ये कठपुतलियाँ हैं ना साहब हमारे चलाये चलती हैं और हम आप जैसे मेहरबानों के चलाये चलते हैं। वैसे आप तो रात भर यहाँ रुकेंगे नहीं।

दूसरा आदमी — हम रुकें या नहीं रुकें। तुम्हें क्या मतलब? एक बार कह दिया दूसरी जगह तलाश कर लो। एक बार में समझ में नहीं आता।

कलाकार — समझ में तो आपको इस सुनसान जगह पर देखकर ही आ गया था साहब। कोई खास बात होगी तभी तो आप घर का आराम छोड़कर यहाँ हैं।

पहला आदमी — कितने दिनों से हो इस शहर में?

कलाकार — यही कोई छ -सात दिन हो गये साहब।

पहला आदमी — रोज रैन-बसेरा अलग जगह करते हो?

कलाकार — हम कहाँ करते हैं साहब? और क्यों करें? मगर लोग एक जगह धकेल देते हैं। कल रात स्कूल के अहाते में गुजारी। जैसा इन साहब ने कहा सुबह बच्चों को खेल दिखाया। झूठ नहीं बोलूगा बच्चों की अच्छी मन्द

मिली। मगर हैड मास्टर साहब ने कहा कोई अफसर कल स्कूल का मुआयना करने आने वाले हैं सा आज रात वहाँ नहीं ठहर सकेंग।

दूसरा आदमी बस अड्डे के पास सराय

कलाकार सराय में कहाँ ठहरने देते, साहब? खेल चले तब तक हमारे काम की पूछ। कहते हैं बडी कला है हमारे पास। कभी-कभी यह भी कहते सुना है यह कला हमारी बडी पर भारी-भारी शब्द याद नहीं रहते, साहब।

पहला आदमी परम्परा। ठीक ही तो है। कठपुतली दुनिया-भर में पुरानी कला मानी जाती है। (दूसरे आदमी से) यू नो आर्ट ऑफ एनिमेशन।

दूसरा आदमी ऑफ कोर्स।

कलाकार (दोनों की ओर विस्मयपूर्वक देखता है।)

पहला आदमी मैं इनसे कह रहा था कि तुम मुर्दा कठपुतली में जान भर देते हो। जानते हो बच्चे या बडे भी तुम्हारे खेल को चाव से क्यों देखते हैं?

कलाकार साहब, हम तो हुनर दिखा सकते हैं। अच्छा बुरा तो आप जैसे मेहरबान ही जानें। आप जैसे साहब ही कीमत जान सकते हैं। लोग तो मजे ले कर कुछ रेजगारी फेंक कर चले जाते हैं।

दूसरा आदमी लोगों का कला की कद्र करना सीखना चाहिये?

कलाकार सात गुनाह माफ करें तो एक बात कहूँ?

पहला आदमी कहो, कहो।

कलाकार हमारा गुजारा उन फेंके हुए पैसों से ही होता है। उसी सहारे पीढ़ियाँ पल गईं। हमने कभी कोई दूसरी बात नहीं सोची। बडे लोग भला करने की सोचते ही होंगे पर भूखा तो पेट तक कुछ पहुँचे तो दुआ दे।

दूसरा आदमी ठीक है। हम शायद कुछ कर सकें। क्यों?

कलाकार तो हम आज रात यहाँ

दूसरा आदमी नहीं नहीं। मरे कहने का मतलब था राजधानी जाकर मैं बात करूँगा। कुछ असरदार लोगों और अफसरों से।

कलाकार मेहरबानी होगी साहब। हमारे बारे में भी बड़े लोग सोचते हैं यह जानकर भी खुशी हो रही है साहब।

पहला आदमी अच्छा। अब तुम कोई और जगह देखो रात-भर के लिये।

कलाकार अच्छा जो हुकुम। (जाने लगता है)।

दूसरा आदमी देखो। (कलाकार रुकता है) कोई खिलौने हैं तुम्हारे पास? मेरा मतलब बच्चों के लिये।

कलाकार हम खिलौने नहीं बनाते साहब। बस कठपुतलियाँ। वे बेचते नहीं।

दूसरा आदमी — मगर शहरों में तो

कलाकार — शहर की हवा लगने से तो कुछ भी हो सके है, हुजूर।

पहला आदमी — ठीक भाई। अब तुम जाओ। (कलाकार का प्रस्थान) तुम्हें उससे खिलौने नहीं मांगने चाहिये थे। इट इज एब्सर्ड।

दूसरा आदमी — मैं खरीदना चाहता था।

पहला आदमी — खरीदने के लिये बाजार भरे हैं खिलौनों से। इट वाज सिम्पल ग्रांड। लाभ और कुछ नहीं। एक आदमी रात काटने को जगह तलाश रहा है और तुम्हें खिलौनों की पड़ी है।

दूसरा आदमी — अब वह यहाँ आ ही गया तो। मैं तो उसकी मदद ही करना चाहता था।

पहला आदमी — मदद तो इस मामले में वही आपकी करता। यहाँ आपके बच्चों के लिये खिलौने उपलब्ध करा भी देता तो आपको बाजार जाने की तकलीफ से बचाता। फिर आप कौन से मुँह मांगे दाम देते। आपने राजधानी जाकर उसके लिये कुछ करने का आश्वासन भी दे डाला था।

दूसरा आदमी — आई रियली मीन इट मैं पूरी कोशिश करूँगा।

पहला आदमी — देखिये जनाब मौके का फायदा उठाना और आश्वासन देना हमारे तबके की पहचान बन गई है जिससे लोग घृणा भी करने लगे हैं।

दूसरा आदमी — अब इस बात को आगे न बढ़ायें तो अच्छा होगा।

पहला आदमी — चलिये उसी बात को बढ़ाते हैं। कहाँ थे हम? हाँ। आप सहायता के लिये चिल्लाने वाले थे कि सहायता मांगने वाला आ गया। कितनी अजाब बात है और कितनी मजेदार। आप सहायता के लिये चिल्लाने वाले हों कि कोई आपसे ही सहायता मांगने आ जाय।

दूसरा आदमी — मैं कोई सहायता के लिये चिल्लाने चिल्लाने वाला नहीं था। मैंने कहा था हम दोनों के अलावा एक तीसरा आदमी यहाँ है उधर। तुम चाहो तो चाहो तो माइण्ड इट चाहो तो खुद जाकर देख सकते हो। अब भी मैं अपनी बात पर कायम हूँ।

पहला आदमी — और मुझे डर था कि मैं उधर गया तो आप

दूसरा आदमी — भाग जाऊँगा। क्यों भागूंगा? कोई गुनाह किया है मैंने? एक बेहोश को झिंझोड़ कर जगाने की होश में लाने की कोशिश की। गुनाह तो अब तुम कर रहे हो।

पहला आदमी — अच्छा बताइये। मेरा गुनाह क्या है?

दूसरा आदमी — यह कि तुम मुझे उस आदमी को समय पर मेडिकल एड आई मीन चिकित्सा सहायता पहुँचाने से रोक रहे हो।

पहला आदमी — यह आपने पहले क्यों नहीं बताया। मैं चलता आपके साथ। आप तो दबे पाँव उलटे निकल कर आ रहे थे। मेरा शक वाजिब ही था।

दूसरा आदमी — शक ? मुझ पर

पहला आदमी — अच्छा ऐसा करते हैं। आप अपना पता मुझे दे दीजिये। कोई कार्ड ?

दूसरा आदमी — कार्ड है मगर मैं तुम्हें नहीं दे सकता। *(दूसरी विंग में किसी के उठने और घसीटते पैरों से चलने की आवाज आती है।)* वह इधर ही आ रहा है। *(दोनों विंग के पास जाकर कान लगाते हैं।)*

पहला आदमी — *(दूसरे को ऊपर से नीचे तक देखकर)* तो तुम ठीक ही कह रहे थे। मुझे भरोसा कर लेना चाहिये था।

दूसरा आदमी — मैं यह सोच रहा था आदमी का आदमी पर से भरोसा उठता क्यों जा रहा है। थेंक गॉड, वह जिन्दा है।

पहला आदमी — चलो उसे सहारा दें। *(तब तक तीसरा आदमी प्रवेश कर लेता है। आयु में पहले और दूसरे से वृद्ध। शरीर तन्दुरुस्त और कसरती। कपड़ों पर कहीं रेत में पड़े रहने के चिह्न साफ दिखाई देते हैं। चेहरे पर थकान।)* माफ करना सर गलती मेरी है। मैंने इस साहब की बात नहीं मानी। वरना आपको

तीसरा आदमी — नहीं, नहीं गलती न आपकी है न इनकी। मुझ से ही भूल हुई कि आज मैं बिना किसी को साथ लिये चला आया। मुझे ऐसा जोखिम नहीं उठानी चाहिये।

दूसरा आदमी — जोखिम मैंने आपको सबसे पहले वहाँ पड़े देखा। मैंने आपको उठाने की कोशिश भी की। पानी आस-पास था नहीं। मैं सहायता के लिये जाना चाहता था कि

तीसरा आदमी — अलग बातें हैं। वैसे मैं समझ गया तुम किस महकमे से ताल्लुक रखते हो। मैं भी कुछ इसी तरह का काम करते तीन साल पहले रिटायर हुआ हूँ।

दूसरा आदमी — ओह, मगर यहाँ इस तरह सिर पड़ने

तीसरा आदमी — सच तो यह है कि तुमने मुझे बचा लिया वरना क्या होता कह नहीं सकता। हम शायद इस तरह बात नहीं कर रहे होते।

पहला आदमी — मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा।

दूसरा आदमी — मैंने कैसे बचाया आपको ? चलिये आपको तुरन्त पानी पीना चाहिये। कोई दवा लेनी चाहिये।

तीसरा आदमी — मैंने पानी भी पी लिया और दवा भी ले ली।

दूसरा आदमी — कहाँ, यहाँ कहाँ है पानी ?

तीसरा आदमी — देखिये कई बार हमें जो दिखता है उसे हम सच मानते हैं और सच को सच जानने की कोशिश नहीं करते। कई बार वह सच, जानबूझ कर छुपाया जाता है।

पहला आदमी — अक्सर ऐसा ही होता है।

तीसरा आदमी — मैं समझ रहा हूँ, तुम अपराधों के मामले में कह रहे हो। मैं दूसरी बात कह रहा हूँ। जैसे हमने इस जगह पानी छुपा रखा है।

दूसरा आदमी — क्या कह रहे हैं साहब, पानी ... ताजा पीने का पानी छुपा कर रखने की क्या जरूरत है और वह भी इस जगह?

तीसरा आदमी — हम कुछ लोग इस जगह एक क्लब चलाते हैं।

पहला आदमी — क्लब और इस जगह?

तीसरा आदमी — हाँ। हमारे कई दोस्त बड़े सवेरे घूमने निकलते हैं। सूरज उगने से पहले वे यहाँ इकट्ठे होते हैं। नीम की टहनी तोड़ कर दातुन करते हैं। तब पानी चाहिये। कुछ जवान लोग यहाँ कसरत करने आते हैं। इन सब कबाड़ की चीजों के नीचे उनके सामान रखे हैं। दिन में न कोई इधर आता है और न ही कबाड़खाने में ऐसी कोई चीजें छुपे होने की बात सोचता है।

दूसरा आदमी — मगर पानी?

तीसरा आदमी — ताजा घड़े भरवा कर यहाँ शाम को रख जाने के लिये एक आदमी तय है। उधर पड़ी घास के ढेर के नीचे ढंक कर रख देता है। हम सभी वह जगह जानते हैं। मैं इस नेचर क्लब का संस्थापक सचिव हूँ।

पहला आदमी — अ ... अ (जैसे मानो 'संस्थापक सचिव' का अर्थ समझ नहीं पाया हो।)

दूसरा आदमी — फाउण्डर सेक्रेटरी।

पहला आदमी — ओह।

तीसरा आदमी — आपने नहीं देखा जिस जगह आप खड़े हैं वहाँ कबाड़ पड़ा होने के बावजूद भी सफाई है। एक तरतीब से चीजें पड़ी हैं। आज मैं यहाँ रात के लिये इन्तजाम देखने आया था।

दूसरा आदमी — रात के लिये इन्तजाम? ... चलिये साहब अंधेरा भी होने लगा है। कहीं होटल में बैठकर आपकी क्लब के बारे में जानना चाहूँगा। हम तीनों का आपस में परिचय भी हो जायेगा।

तीसरा आदमी — क्या मतलब? आप दोनों का परिचय तक नहीं!

पहला आदमी — जी नहीं, हम अलग अलग आये यहाँ। जब मैं यहाँ आया ये साहब दुबके पाँव उल्टे पाँव उधर से निकल कर आ रहे थे।

तीसरा आदमी — अच्छा। तब आपने शक किया होगा। (पहला आदमी झेंपता है।)

दूसरा आदमी मैंने आपको सुनसान में उस जगह पड़े देखा, टटोला झक्झोरा बार-बार झक्झोरा। फिर डर कर कि कहीं

तीसरा आदमी नहीं, नहीं, नेचर क्लब के मेम्बर के लिये इट इज टू अर्ली टु गो। रात को यहाँ कुछ कठपुतली का खेल करने वाले ठहरना चाहते थे इसलिये व्यवस्था देखने चला आया।

पहला आदमी वह यहाँ आया था।

तीसरा आदमी कौन ?

दूसरा आदमी कठपुतली वाला।

तीसरा आदमी तो ?

पहला आदमी हमें सारी बात पता नहीं थी।

तीसरा आदमी *(हँस कर)* और आपने मिलकर उसको यहाँ से भगा दिया।

दूसरा आदमी जी।

तीसरा आदमी बड़ी अजीब बात है। आपस में आपका परिचय तक नहीं पर किसी अजनबी के खिलाफ आपने बड़ा एकता का परिचय दिया। खैर मैं बुला लाऊँगा उसको।

पहला आदमी आई एम सॉरी, सर। गलती मुझ से हुई। इस जगह आते ही रस्से को बंधा देखकर। एक साथ इतनी बातें दिमाग में आ गई कि

तीसरा आदमी *(हँस कर)* अरे, यह रस्सा। हमारे जवान दोस्त कसरत करने आते हैं। उनमें एक उस्ताद मलखम्भ और रस्से के सहारे चढ़ना भी सिखाते हैं। आज कल फौज में भर्ती के वक्त

दूसरा आदमी यह तो दिमाग में आया ही नहीं कि ऐसी जगह

तीसरा आदमी मैं समझ सकता हूँ। मगर सबसे पहले आपका परिचय क्या नहीं हुआ ? अभी हम इतने आत्मकेन्द्रित तो नहीं हुए कि दो लोगों में आपस में परिचय कराने तीसरे की जरूरत पड़े।

पहला आदमी आप तो अनुभवी हैं। आपके शब्दों में ही आपके अनुभव और अध्ययन का पता लगता है।

दूसरा आदमी इसने कॉमन सेन्स से ही काम लिया। और मैंने भी आपको देखकर वही किया जो एक आम आदमी आमतौर पर करता। ज्ञान तो आप जैसे लोगों के सम्पर्क में रहने से आता है सर।

तीसरा आदमी मेरी कोशिश यही है। कॉमनसेन्स को भी मैं बदलने की कोशिश करता हूँ। आपके सोचने का तरीका बदलते ही आपकी कॉमनसेन्स में भी बदलाव आ जायगा। मैं आदमी की बुनियादी अच्छाई को बहुत महत्त्व देता हूँ।

आदमी बुनियादी तौर पर और अक्सर अच्छा ही होता है। उसे अच्छाई बताने के सभी अवसर देने चाहिये।

पहला आदमी ऐसा करने में धोखा खा जाने के सभी खतरे बने रहते हैं, सर।

तीसरा आदमी तुम व्यावहारिक बात कह रहे हो। मेरा मतलब कुछ और है। कोई अजनबी मुझ से एक हजार रुपये मांगे तो मैं भी नहीं दूंगा। मगर कोई रैन बसेरा यहाँ करना चाहते हैं तो मुझे बेवजह उनकी नीयत पर शक करने का कोई हक नहीं। खैर, यह मेरा विचार है।

दूसरा आदमी आप कह रहे थे कि भूल आपकी थी। आप बिना किसी को साथ लिये यहाँ आ गये। मैं कुछ समझा नहीं।

तीसरा आदमी वह भी मेरी अपनी समस्या है। आपने उस कठपुतली वाले को भले निराश किया हो, मेरी आपने अनजाने में मदद की है। मैं आभारी हूँ।

पहला आदमी आप शर्मिन्दा कर रहे हैं, सर। उसने बताया ही नहीं कि उसने यहाँ रात बसेरे के लिये आप से बात कर ली है।

तीसरा आदमी उसकी बात मुझ से हुई थी। बल्कि मैंने ही पूछ लिया था। यहाँ वह समझा होगा आप भी यहाँ के मालिक हैं और मैं आपसे सम्पर्क नहीं कर पाया हूँ।

दूसरा आदमी अब भी आपके यहाँ उस तरह बेहोश

तीसरा आदमी सच यह है मुझे बेहोशी के दौर आ जाते हैं। यह बीमारी पुरानी भी नहीं है। कोई आदमी मुझे छू ले या झकझोर ही दे तो थोड़ी देर में होश आ जाता है। इसलिये चारों ओर हर समय आदमी होने जरूरी हैं। शरीर की संवेदना शायद सामूहिक जीवन में अटक कर रह गई है। सॉरी अगैन इट इज माई पर्सनल रिफ्लेक्शन। वे ऑफ थिंकिंग। डाक्टर भी कोई इलाज नहीं बताते। बस कुछ गोलियाँ साथ रखने की सलाह देते हैं। वे मैं रखता हूँ और होश में आने पर पानी के साथ ले लेता हूँ। अभी वहां से उठकर सीधा यही किया।

पहला आदमी अजीब बीमारी है, सर।

तीसरा आदमी मुझे इससे भी कोई शिकायत नहीं। बल्कि इसे वरदान मानता हूँ। मुझे हर वक्त दोस्तों और लोगों के बीच रहने का सुख मिलता है। सिक्यूरिटी और विजिलेंस के विशेषज्ञ रहते। लोगों से दूर रहा। अब लगता है उसी कारण यह बीमारी हुई।

पहला आदमी सर मैं भी ड्यूटी पर हूँ। यहाँ एक बैंक में लूट की कोशिश हुई। मैं यहाँ वैसे ही दौरे पे था।

दूसरा आदमी मैं भी उसी से सम्बन्धित हूँ साहब। बैंक विजिलेंस आफिसर आया था किसी दूसरी इन्क्वायरी में। अलार्म होते ही सीधा इधर भागा कि

तीसरा आदमी *(ठहाका लगाकर)* वैसे ही कुछ नहीं होता। वह बैंक लूटने की कोशिश तो एक एक्सरसाइज थी। मैंने ही प्लान की थी। अब भी मेरे अनुभव का लाभ लेते रहते हैं लोग। कर्त्तव्यों के प्रति जागरूकता होते हुए भी मुस्तैदी और तुरन्त निर्णय को जांचने के लिये ऐसे अभ्यास करते रहने पड़ते हैं।

पहला आदमी इसका मतलब आज जो भी सोचा सच है, सच नहीं निकला।

तीसरा आदमी आज ही नहीं, प्राय ऐसा ही होता है।

दूसरा आदमी तब क्या करना चाहिये, सर?

तीसरा आदमी सच का सच जानने की लगातार कोशिश। शक की जगह विश्वास और लोगों को साथ लेकर चलने अरे मैं उपदेश देने लगा। चलो मेरे यहाँ चलकर चाय पीते हैं।

(सभी चलने को होते हैं। फ्रीज)

अन्धेर

रिजवान ज़हीर उस्मान

पात्र परिचय

1	मा	अधी
2	पिता	लगड़ा
3	बेटा	बहरा
4	अधेर	

अन्धेर

(एक गरीब घर का आगन, जिसमें चारपाई पानी का मटका आदि रखा है।)
समय—दिन।

बाप (बेटे से) बेटा, देख तेरी मा कहाँ है ?

बेटा आपने जरूर मुझसे कुछ कहा है।

बाप *(चिल्लाकर)* तेरी मा को बुला।

बेटा नल बद है।

बाप अरी ओ अन्धी।

(बाई ओर से मा का प्रवेश)

मा सूरज के दर्शन करने गई थी।

बाप मुझे कहती मैं भी चलता।

मा आप इस टूटी टाग से कितना चलते ?

बाप कहा जाना पडता दर्शन के लिये ?

मा मदिर के पिछवाडे।

बेटा मा, रोटी दे।

बाप बहरे को भूख लग गई ?

बेटा मा, रोटी दे-बहरी है क्या ?

मा बैठ जा।

बेटा क्या कहा ?



बाप तुझे पता है कि यह खड़ा हुआ है ?

मा बैठा है क्या ?

बाप नहीं, लेटा हुआ है।

बेटा मैं नौकरी छोड दूगा।

मा फिर भूखों मरना।

बेटा मैंने कहा मैं नौकरी छोड़ दूगा।

बाप सुन लिया। हम तेरे जैसे नहीं हैं।

मा आजकल नौकरी छोड़ने का रिवाज नहीं है बेटा।

बेटा वह लडकी मुझे पसद नहीं है।

बाप तो नौकरी क्यों छोड़ रहा है ?

मा शादी की बात कौन कर रहा है ?

बेटा दो-तीन लड़किया मेरा कर हा भरेगा।

बाप तो नौकरी छोड़ने की क्या जरूरत है ?

मा बड़ा भोला है मेरा लाल

बेटा मा तू मुझे कमम मत दे।

बाप गधा साला ।

मा आपतो लड़के को डाटते रहते हैं।

बाप नालायक बेवकूफ बहरा।

मा बहरा है यह तो इसमें इसकी क्या गलती है ?

बाप तू ठहरी अधी मैं सब देख दारा कर बोलता हू।

बेटा मैं बम्बई जाऊगा।

बाप वहा करेगा शादी ?

बेटा फिल्मों में काम करूगा।

मा मेरा बेटा बड़ा हीरो बनेगा।

बाप इतना बड़ा कि किसी की भी नहीं सुनेगा।

मा तुम सीधे मुह नही बोल सकते ?

बाप बात सुनो इसकी। हीरो बनेगा।

मा बन सकता है।

बाप ठीक है, मैं कब इन्कार कर रहा हू। जाओ बन जाओ हीरो।

बेटा बापू-मुझे किराये के पैसे दे दो।

बाप पहले रोटी खा ले।

मा रोटी लाती हू। *(भीतर जाती है।)*

बाप मरी भा लेती आना।

बेटा मैं अभी किराया पूछ कर आता हू।

(प्रस्थान करता है)

बाप अरे रोटी तो खाता जाता।

(बेटा सुनता हा नहीं)

बाप हे भगवान ! तेरी अक्ल मारी गई थी क्या ? क्या बनाई दुनिया ! साली अधी लगड़ी बहरी।

मा उसकी शादी कर दो। पाव में बेड़ी पडेगी तो बम्बई की बात नहीं करेगा।

बाप उसे कोई लडकी पसद आये तब ना?

मा कोई तो पसद होगी उसे?

बाप जो लड़का हीरो बनने के सपन देखता हो, उसे कोई लड़की आसानी से पसद नहीं आ सकती।

मा मैं तो अधी थी। आपने मुझे पसद कर लिया था।

बाप तुमने सोचा होगा कौन है यह अधा।

मा मुझे पता चला था कि आप अधे नहीं थे।

बाप अक्ल का अधा था मैं।

मा नहीं थे।

बाप फिर क्या था तुम सरीखी अधी में पसद करने लायक?

मा आपने मुझमे क्या देखा?

बाप यही सोच रहा हू।

मा कुछ भी गुण नहीं था मेरे में।

बाप मुझे तुम अच्छी लगी थी शायद।

मा यह गुण थोडा हुआ।

बाप कभी ध्यान नहीं दिया मैंने। उस वक्त तो मेरी टाग भी सलामत थी। बाका जवान था मैं। तुम्हें देखते ही पसद कर लिया था मैंने। चाहता तो इन्कार कर सकता था।

मा लोगों ने समझाया नहीं?

बाप पिताजी न समझाया। मा ने समझाया। मेरी दोना बहनें इस शादी के बहुत खिलाफ थीं। मेरे मामू-मेरे बहनोई सब खिलाफ थे अपनी शादी के।

मा फिर क्या हुआ?

बाप फिर शादी हो गई। सब ढीले पड गए।

मा आपने मनाया उनको।

बाप क्यों मनाऊ। शादी मुझे करनी थी। मैं कर रहा था। उनको मनाने की जरूरत पडी ही नहीं। एक एक करके सब बारात के साथ हो गये। मैने कह दिया था—यह चली बारात-आओ तो स्वागत नहीं आओ तो धन्यवाद। बस सब आ गये।

मा कहा चला गया मेरा लाल?

बाप बम्बई की टिकट पूछने गया है

मा बहुत देर कर दी।

बाप डकार पानी पीने से आई है।

मा हाजमा बढ़िया है लड़के का।

बाप जवान पट्ठा है। *(बेटा खाना खाकर उठता है।)*

बेटा अब मैं सोऊगा मा।

मा अन्दर चला जा।

बेटा बापू खाट स उठो-मैं खाट पर सोऊगा।

(बाप खाट से उठ जाता है। बेटा खाट पर लेट जाता है।)

बाप देखा अपने लाल को। लगड़े बाप को खाट से उठा कर बेशर्मी से पड़ गया मरदूद।

मा छोड़ो-यह बेकार की बातें।

बाप औलाद से इतना प्यार ठीक नहीं है।

मा पराई औलाद थोड़ी है।

बाप यह ना समझ है।

मा अपना है, जैसा भी है।

बाप तेरी अक्ल मारी गई है।

मा मरने दो। क्या करना है अकल का?

बाप देखो यह पल पल में अपने विचार बदलता रहता है। मैं लगड़ा नहीं था तब की बात दूसरी थी। अब हाथ से निकल गया तो कौन पकड़ेगा इस हाथी को?

मा पकड़गी इसकी घरवाली।

बाप डरता हू-पराई छोरी का जीवन बिगड़ेगा।

मा मैं क्या पराई नहीं थी? मैं तो अधा मा थी। आज भी अधी हू।

बाप तेरे पास मन की आखे हैं।

मा यह आखे तो आपके पास भी हैं।

बाप इस नालायक के पास नहीं हैं। यह समझ।

मा यह समझ धीरे-धीरे आती है।

बाप तेरा मतलब है तेरे बेटे को बुढ़ापे म अकल आयेगी?

मा शादी के बाद जिम्मेदारी पड़ती है तो अकल आ जाती है।

बाप चलो यही सही। आखातीज दूर नहीं है। तू लडकी देख ले। इसे दिखा दे। देखो, यह देखा-देखी इस तरह हो कि लड़की अपमान ना समझे।

मा मैं क्या जानती नहीं।

बाप चेता रहा हू।

(बेटा उठ बैठता है)

बेटा मा मेरी शादी के बाद तुम दोनों कहा रहोगे ? हमारे पास तो यही एक कमरा हैं।

बाप कह दे, हम तीरथ करने चले जायेगे।

मा कह दूगा।

बेटा बापू-मेरी शादी में बैंड नहीं बजेगा।

बाप (सर हिलाकर सहमत होता है।)

मा देखा-कितना समझदार है।

बेटा मेरी शादी में फालतू धूमधाम नहीं चलेगी।

बाप मेरे पर गया है तेरा लाल।

बेटा हम गरीब घर की लड़की पसद करेंगे। दहेज नहीं लेंगे।

मा बिलकुल आप पर गया है मेरा लाल।

बेटा पढ़ी लिखी लड़की पर मत अड़ना बापू। अनपढ़ होगी तो पढ़ा दूगा मैं।

बाप कितना सियाना है रा तेरा लाल।

मा कैसा लगता है यह देखने में ?

बाप तू बता तेरी मन की आँखों से देख अपने लाडले की सूरत।

मा बाल गोपाल लगता है।

बाप तेने देखे हैं बाल गोपाल ?

मा मैं अधी-मैं कैसे देखू- मन देखता है मेरा।

बाप वैसा ही है। हू-ब-हू बाल गोपाल। बस, बहरेपन की कसर रह गई।

बेटा वह दिन-रात आपकी सेवा करेगी।

बाप लो-कर दिया बेडा गर्क। पहले कह रहा था शादी के बाद हमें अपना ठिकाना कहीं दूसरी जगह बना लेना चाहिये।

मा सुनो तो सही। सुनने में कितनी भली बात कह रहा है।

बाप सुनने में तो ऐसी भली बात मैंने पहली बार सुनी है।

बेटा बापू-तुम मुझे गधा समझते हो ?

मा नहीं रे! ऐसा मत सोच।

बाप सोचने दे ना।

बेटा मैं गधा नहीं हू बहरा हू बस।

मा सच कह रहा है तू।

बाप यह किसी की सुनता तो है नहीं। बस् अपनी ही हाके चला जाता है। तू बता मैंने इसे कब गधा समझा ?

मा आपके बोलने का ढग बहुत खराब है।

बाप जैसे यह सुनता है।

मा सुनता नहीं है तो क्या हुआ-समझता तो है। आपके चेहरे पर आपके विचार बरसते हैं।

बाप तैने कब देखा मेरा चेहरा ?

(लम्बी चुप)

बेटा मैंने जो कहा-वह तुम दोनों ने सुन लिया-अब मैं सोऊगा।

(वापस लेट जाता है।)

बाप सबकुछ ठीक है। यही लगता भी है। लेकिन दिल कहता है, यह लड़का गडबड करेगा। इसका दिमाग ठिकाने पर नहीं लगता मुझे।

मा क्या गलत कहा इसने ?

बाप क्या गलत नहीं कहा इसने ?

मा इसमें आपको गाली तो नहीं दी ?

बाप तुम चाहोगी तो गाली भी दे देगा।

मा आप इतनी डरी-डरी बातें क्यों करते हैं ?

बाप मैं जानबूझकर तो यह नहीं करता।

मा आप इसके पिता हैं।

बाप काश ! यह बहरा ना होता।

मा गूगा तो नहीं है।

बाप यह तो मैंने सोचा ही नही था।

मा अपना अभागी मा की तरह अधा तो नहीं है।

बाप तू जो सोच लेती है वह मेरे बस में नहीं।

मा दिखाई देता मुझे और अच्छा सोचती।

बाप इसके भोलेपन से डर लगता है।

मा भोला होने में क्या बुराई है ?

बाप यह जमाना भोलों का नहीं है।

मा भोलों की भगवान रक्षा करता है।

बाप यह जमाना भगवान से नहीं दबता।

मा राम-राम! कैसी छोटी बात है यह।

बाप देखा नहीं क्या कह रहा था—बम्बई नहीं जाऊंगा।

मा अच्छा हुआ।

बाप वजह क्या बताई इसने?

मा धर्म के नाम पर लोग आपस में लड़ते हैं।

बाप यह डर गया इस बात को जानकर। इसने आगे बढ़ने की बात सोची थी, लेकिन डर के मारे यह ठहर गया।

मा आप यह सब इस तरह क्यों सोच रहे हैं।

बाप मैंने दगे देखे हैं। मैंने कसाईयों को नजदीक से देखा हैं।

मा मेरे बेटे का कसाईयों से क्या वास्ता?

बाप यह बात समझना तेरे बस की बात नहीं हैं।

मा अब काम पर जाओगे कि नहीं?

बाप जाना कितनी दूर है।

मा फिर भी जाना तो पड़ेगा ना?

बाप जा रहा हू।

(बैसाखी का सहारा लेकर उठता है बेटा करवट लेता है।)

बेटा बापू रोटी खाई?

(बाप सकेत से बताता है कि खाली है। बेटा फिर करवट बदलता है।)

बाप दरवाजे की कुण्डी टूटे पाच दिन हो गए। ना मुझे याद आता है ना तुम याद दिलाती हो।

मा आते हुए ठीक करने वाले को लेते आना।

बाप यह पड़ा-पड़ा लम्बा लठिगा हो रहा है, इसे भेज कर बुलवा लेना।

मा यह मोल भाव नही कर सकेगा।

बाप कब आयेगा इसे मोल भाव करना?

मा जाओ अब क्यों देर करते हो?

बाप जा रहा हूँ। ध्यान रखना। तुम्हें दिखाई नहीं देता यह उठकर चला गया और कोई चोर-वोर आ गया तो पता ही नहीं चलेगा।

मा पाच दिन से तो कोई चोर नहीं आया।

बाप आज आ गया तो?

मा आता रहे-अपने है क्या जो वह चुरा लेगा।

बाप चलो, यहीं सही। मेरी नसीहत नहीं माननी है बस।

मा काम पर जाते समय गुस्सा नहीं करना चाहिये।

बाप तुम्हारी नसीहत माने बिना मेरा काम नहीं चलने वाला हैं।

मा बुरा मत मानो।

बाप तुम्हें पता चल गया।

(हसता हुआ प्रस्थान करता है। मा झाडू लेकर आगन बुहारने लगती है।)

मा (स्वगत) मैं ठहरी अधी। ना मेरा दिन ना मेरी कोई रात। फिर भी दोनों टेम भूख लगती है। सुबह होने का पता चल जाता है। भीतर कहीं सूरज उदय होता है रोज। रोज भीतर डूब जाता है सूरज। जिस सूरज के दर्शन करने जाती हू उसे मैंने कभी नहीं देखा। वही देखता है मुझे। दर्शन करने नहीं, जैसे दर्शन देने जाती हू मैं। छोटा-सा यह मेरा आगन परिवार। मैं जन्मजात अधी। बेटा जन्मजात गूगा। बाप लगडा नहीं था। एक दिन वह भी लगड़ा हो गया। लगडा पति, अधी पत्नी और एक बेहरा बेटा। यह जीवन मेरा जैसे कोई लोककथा। रोज सुनो इस कथा को। रोज भोगो इस कथा को। कोई हुकारा देने वाला नहीं।खुद कथा कहो खुद सुनो। घाणी का बैल यह अधा जीवन। पता नहीं मुझे जो देखते है यह ससार उन्हें यह दिन-रात कितने भारी पडते हैं। सर्दी गर्मी तो ठीक मगर बारिश में मैं अधा उलझ जाती हू। सम्पट चूक जाती हू। सारा घर टपकती छत से दलदल हो जाता है।

(खाट से टकरा के गिर पड़ती है।)

मा बेटा-बेटा देख रे मेरे पाव में मोच आ गई क्या ?

(दर्द से कराह उठती है। बेटा सोया हुआ है। जाग रहा होता तो भी देखता नहीं इधर तो-सुनने का सवाल ही नहीं है। जैसे-तैसे उठती है। लगड़ाती हुई और झाडू बुहारना शुरू करती है)

मा *(स्वगत)* यह आज की बात नहीं है। बरसों गुजर गए। रोज एक बार गिरती जरुर हू। कहीं ध्यान चूका नहीं कि दावार स टकरा गई-या धम्म से गड्ढे म गया पैर।

(उसी समय दबे पाव घर मे अधेर का प्रवेश यह हत्यारा है। चोर है। राक्षस है। या यह सिर्फ एक बुरा समय है जो किसी ना किसी के जीवन में अनचाहे प्रवेश कर ही लेता है। मा उसकी पदचाप सुनकर थमती है।)

मा कौन ? कौन है ?

(अधेर मा से दूर हटकर दबे पाव आगे बढ़ता है।)

मा कौन है भई ? बोलो तो सही। मैं अधी हू। बोलोगे नहीं तो मैं पहचानूगा कैसे तुम्हें ?

(अधेर कमरे की तरफ बढ रहा है।)

मा तुम चोर हो क्या ? चोरों की तरह कमरे की तरफ जा रहे हो ना ? कुछ मत चुराना भगवान की सौगध है तुम्हें। मुझे अपने भोले लाल की शादी करनी है।

(अंधेर मा की नहीं सुनता। मा चपटकर अंधेर को दबोचकर चीखना शुरू कर देती है। अंधेर मा को धकेलता है। मा खाट पर सोये बेटे पर गिरती है। बेटा उठ जाता है। वह अंधेर को देखकर उठता है। तब तक अंधेर के हाथ मे चाकू निकल आता है। बेटा अंधेर को पकड़ता है। अंधेर बेटे को चाकू मारता है। फिर मा को चाकू मारता है। दोनो मर जाते है अंधेर गठरी उठाकर भाग जाता है निस्तब्धता छा जाती है। कुछ देर बाद पिता प्रवेश करता है।)

बाप लो मैं नई कुण्डी ले आया। इसे मैं ही ठोक दूगा।

(आगे बढ़ता है। अपनी पत्नी और बेटे को देखता है। बेसाखी छूटती है। चीखता है। रोता हुआ।)

बाप यह अंधेर है-यह अंधेर है भगवान-यह अंधेर है तेरा ।

(जमीन पर गिरता है। प्रकाश धीरे-धीरे लुप्त होता है।)

अपने को समझ बदनसीब

डॉ. राजानन्द

पात्र परिचय

1	जगतसिह	गाँव के वृद्ध जमींदार
2	कुलवत	जमींदार का बेटा
3	गुजन	कुलवत की पत्नी
4	कुशल	कुलवत का बेटा
5	रौनकलाल	जगतसिह का मित्र

अपने को समझ बदनसीब

(बडे गाव का पक्का मकान। चार दीवारी। मकान के सामने खुला अहाता। अहाते में मकान के चबूतरे से थोड़ी दूरा पर ऊपरी हिस्से से कटा हुआ सूखा पेड़। मकान के लम्बे चबूतरे पर कुछ गमले। बैठक के सामने के आधे हिस्से मे चबूतरे को ढँकती हुई छत। एक अदद इस घर मे रहने वाले जगतसिह इसी छत के नीचे ज्यादातर बैठते हैं। उनकी कुर्सी, कुर्सी के सामने की मेज, मेज पर रखी मोटी धार्मिक किताबें, मेज के सामने दो पीठदार मोढे लगभग स्थाई हैं। वास्तव म यही स्थान नाट्य-कथा का केन्द्र रहता है।)

समय दिन के ग्यारह-बारह। जगतसिह अखबार पढ़ रह हैं। चार दीवारी क फाटक को खोलकर सामने से रौनकलाल आते दिखाई देते हैं।

रौनक *(नजदीक पहुंचकर)* नमस्ते, जगतसिह जी।

जगत *(अखबार हटाते हुए)* आओ आओ रौनकलाल। बैठो। आजकल ऐसा कौनसा धधा सम्भाल लिया है कि आने की फुर्सत नहीं मिलती।

रौनक *(बैठते हुए।)* काहे का धधा, कैसी फुर्सत। धधा बस एकसार चल रहा है। फुर्सत तो बहुत मिल जाए, लकिन गृहस्थी के जजाल पीछे पड़े रहते हैं। एक सुलझाओ तो दूसरा तैयार, फिर तीसरा फिर चौथा। आप सुखी हो। अकेले जीव, लेना एक न देना दो।

जगत बुढ़ापे में मोह-माया से दूर ही रहना चाहिए।

रौनक आप हो गए क्या ?

जगत बिल्कुल।उस सामने वाले पेड़ की तरह। न सूखा,न हरा, तब भी जमा हुआ जड़ से।

रौनक रहने दो जगतसिह जी। जिंदा आदमी भला माया-मोह से छूट सकता है ? वृक्ष का सिर काटकर, उसकी बढ़त रोकना एक बात है, लेकिन गृहस्थी की तड़ा-तड़ी में दिल की उछाल को रोकना मुमकिन नहीं होता। छोड़ो। आज का अख़बार क्या कह रहा है ?

जगत आज का अख़बार तो दो बजे आएगा। यह कल का है।

रौनक क्या फर्क पड़ता है। हमें को आजकल एक ही बात जानने में मजा आता है- कौनसा नया घोटाला जाहिर हुआ। कौन से नेता का भ्रष्टाचार में नाम फसा।

जगत रौनकलाल, मेरी बात सुनो। अख़बार पढ़ना चाहिए वक्त काटने के लिए। उस में क्या लिखा-छपा है उस पर सोचना या बहस नहीं करना चाहिए। क्या फायदा ?

रौनक सो तो है। लेकिन सुनकर पढ़कर, धक्का तो लगता है। आखों की पट्टी ता खुलती है।

जगत कुछ नहीं। सब बेकार। अरे हम, तुम, सब, उस घेरे के बाहर है जिसमें यह खेल खेले जाते हैं। जानते हो हमारा घेरा कौनसा है? अपने इर्द-गिर्द का। हाथ भर का। इस से न कम न ज्यादा।

रौनक इतना छोटा तो नहीं हैं। इस में पेट है, परिवार है। हमारी जायी औलाद है, समाज और गाव की मर्यादा है। आँखों की शर्म है। *(सुस्त होते हैं।)*

जगत क्या बात है रौनकलाल, आज बड़ी पकी-पकी बातें कर रहे हो। दिल में कुछ भारी होकर ठहर गया है क्या?

रौनक है तो ऐसा ही।

जगत तभी इधर पैर बढ़ गए।

रौनक *(चुप रहता है।)*

जगत कह डालो हल्के हो जाओगे।

रौनक क्या कहू आफत खडी हो गई है हल नहीं सूझता।

जगत हल हर समस्या का होता है-कभी उसे बाहर तलाशना पडता है कभी अदर खोजना होता है।

रौनक कहने की बात है जगतसिह जी। आप अकेले हैं इसलिए बरी हैं झझटों से

जगत *(बीच में काटकर)* अपनी कहो रौनक मेरी मुझ तक रहने दो।

रौनक कहू क्या। मेरी मँझली बेटी की शादी को आठ साल से ज्यादा हो गए। अह ससुरालवाले उसे छोड़ने और दामाद की दूसरी शादी करने को कह रहे हैं। तलाक चाहते हैं।

जगत ऐसा कैसे कर सकते हैं।

रौनक कर रहे हैं ना। कहते है बहू बाँझ है। आठ साल हो गए बच्चा नहीं हुआ सार उपाय कर लिए। नहीं हुआ तो उसके हाथ में है?

जगत वकील की राय ली?

रौनक वकील कहता है ऐसा मुकद्मा बनाऊगा कि नाकों चने चबवा दूगा। तुम्हारी लड़की को वही कहना होगा जो मैं कहलवाऊगा। इज्जत ख्वार कर दूगा उनकी। लेकिन बेटी तैयार नहीं होती।

जगत वह सही है। उनकी इज्जत ख्वार होगी तब तुम्हारी कैसे बची रहेगी?

रौनक लड़की की जात है, घर में मेरे सहारे कब तक रहगी? गाँव वाले अभी से बातें गढ़ रहे हैं। जैसा मुँह में आता है बकते हैं।

जगत बकने दो। उसकी आगे की जिंदगी देखो। जबरदस्ती उसे वहाँ पहुँचा भी दिया तो उसे चैन से कौन रहने देगा। रिश्ते मन से होते है और निभते हैं रौनकलाल। बिगड़ गई, सो बिगड़ गई। उसे तो हर हालत में दिल पर पत्थर रखना पड़ेगा। मेरा बेटा हमें छोड़कर कनाडा चला गया, वहीं परिवार बसा लिया तो हम क्या कर सके? कुछ नहीं। उसको भुलाकर आगे सम्भलना पड़ा। चलो मैं तो आदमी था, उसकी मा ने अपने पर कैसे काबू पाया यह मैं ही जानता हूँ।

रौनक परमानन्द लाल कह रहे थे आपके बेटा-बहू और पोता हफ्ते बाद आ रहे हैं। क्या यह सच है?

जगत हा, आ रहे हैं, क्या जरूरत है अब आने की। मा तरसती मर गई, उसे देखने तक नहीं आया। आता है, आए, आकर चला जाए, मैंने उसके बगैर जीना सीख लिया है। तुम्हारी बेटी का भी पिछला भुलाकर नये सिरे से जीना सीखना होगा। न तुम सहायक हो सकते हो न गाव या समाज।

रौनक आप अपने दुख में खो गए। माफ करना मैंने उसका जिक्र चला दिया।

जगत माफी की बात नहीं है। हालात बदलते हैं तो आदमी को भी उनके मुताबिक होना होता है। मुझे न उसके आने से खुशी है, न उस के लौट जाने पर दुख होगा।

रौनक असल बात यह है जगतसिंह जी, कुछ ही लोग होते हैं जिनसे दिल की कहकर सुकून मिलता है, इसीलिए आपकी तरफ कदम बढ़ आए। लेकिन

जगत लेकिन क्या रौनक।

रौनक यह भी लगा कि दर्द की किस्में और गहराइया भी अजब होती हैं। जिससे मिलो उसके पास आप से बड़ा दर्द मौजूद होगा।

जगत किस पचड़े में पड़ गए रौनकलाल। जिये जाओ, जैसे भी जा सको। दो-ही तरीके से जीना हो सकता है, हालात को अपने मुताबिक बनाओ या उसके हो जाओ। यह सारा फसाद जितना बाहरी है उतना अदर का भी है वह भी यह कि हम चक्रव्यूह से निकलने का मत्र जानते हैं, या घुटने टेक कर हाथ ऊपर उठा देते हैं।

रौनक समझ में नहीं आती आपकी भाषा।

जगत *मैं अंग्रेजी या फ्रेंच थोड़े ही बोल रहा हूँ ठेठ जिन्दगी की भाषा बोल रहा हूँ।* रही तुम्हारी बेटी की बात वह खुद हल निकाल लेगी, निश्चिंत रहो।

रौनक क्या पता कौन से घाट लगेगी। चलूँ। थोड़ी सी हिम्मत बनी आपके पास आकर।

जगत जब चाहो फिर आ जाना। हमें तो भला ही लगता है जब कोई अपनेपन से आता है।

रौनक अच्छा, नमस्ते। *(खड़ा होकर चबूतरे से उतरता है।)*

जगत नमस्ते। *(खड़ा होते हुए उसे फाटक तक पहुँचाने के लिए उठते हैं।)*

रौनक आप बैठिय। क्यों तकलाफ करते हैं।

जगत अरे वाह। तुम यहा तक आए हम फाटक तक पहुचाएँ भी नहीं।

(दोनो फाटक तक पहुचते हैं। फिर अभिवादन होता है। रौनकलाल जाते हैं। जगतसिह लौटते हैं। कुर्सी पर बैठकर किताब उठाते हैं। पढ़ने लगते हैं। दृश्य इसी स्थिति में खत्म होता हैं।)

दृश्य दो

(जगतसिह का वही मकान वही चबूतरा। उसी तरह किताबें रखी है, वह कुर्सी पर बैठे पढ़ रहे हैं। इस दौरान उनका बेटा कुलवत, बेटे की बहू गुजन और पोता कुशल आ गए हैं।)

समय दिन क बारह बजे का।

कुशल *(अदर से आकर।)* ग्रेंड डेड आप हर वक्त पढ़ते रहते हैं। क्या पढ़ते हैं?

जगत रिलीजन की किताबे।

कुशल आप टी वी भी नहीं देखते रेडियो पर सिर्फ न्यूज सुनते हैं। हम तो कनाड़ा में खूब टी वी देखते हैं-डेडी मम्मी भी खूब देखते हैं।

जगत और क्या करते हो?

कुशल स्कूल जाते हैं पिकनिक पर जाते हैं। लोग ड्राइव पर जाते हैं। हमारे स्कूल की मैडम्स प्रटा और लविग हैं।

जगत यहा कैसा लगता है?

कुशल नॉट सा फाइन। कारें नहीं हैं। बिग स्टार्स नहीं हैं। लोग गदे कपड़े पहनते हैं। सिर पर टरबन का बाझा रख रहत हैं। यहा क लड़के भा शैबी रहते हैं। सोरी ग्रेंडडेड, मैं भूल गया।मॉम ने पूछा है आप लच करेंगे?

जगत तुम ने कर लिया?

कुशल नहीं। हमने हैवी ब्रेकफास्ट कर लिया था। हम टू पी एम पर खाते हैं।

जगत हमन भा हैवा ब्रेकफास्ट किया था।

कुशल मैं मॉम से कहकर आता हूँ अभी हम खेलेंगे ग्रेंडडेड के साथ।

(अदर जाता है। रेकेट और शटलकोक लेकर आता है। अकेला खेलता है। जगतसिह उसे देखते रहते हैं।)

ग्रेंडडेड आप खेलेंगे?

(जगतसिह हा नहीं कहते बल्कि उसके पास जाते है। कुशल उनको रेकेट पकड़ाता है। वह उसी तरह शटल को रेकेट पर उछालते हैं। गुजन थाली में खाना लाता है।)

गुंजन पापाजी, खाना।

(जगतसिंह सुनते नहीं हैं। खेलते रहते हैं।)

पापाजी, खाना लाई हूं।

जगत रख दो मेज पर, खा लूंगा।

गुंजन ठंडा हो जाएगा।

जगत अच्छा, आ रहा हूं।

(कुशल को रेकेट देकर मेज तक आते हैं। पानी से हाथ धोते हैं। कुर्सी पर बैठते हैं।)

क्यों आदत बिगाड़ रही हो, बाद में तुम भी तकलीफ पाओगी, मैं भी। *(खाते हुए।)* सोचता था माया-मोह से अलग हो चुका हूं लेकिन

गुंजन अपने खून से अलग हुआ जा सकता है, पापाजी?

जगत घाव भरता है,तब उसके ऊपर खुरंड की पपड़ी बन जाती है। समझती हो कि वह कितनी सख्त होती है? जब तक कुलवंत की मां थी, जैसे-तैसे तुम लोगों का वहां रहना बर्दाश्त कर लिया। कुलवंत की मां तो संतोष कर ही नहीं सकी, अलगाव का एहसास उसे खरोंचता रहा। आखिर बीमार पड़ी। बीमारी में यही कहती रही उन्हें बुलालो, मेरा आखिरी वक्त आ गया है। मैंने उसी की जिद की वजह से तुम्हें सूचना दी थी।

गुंजन हम बहुत मजबूर हो गए थे, वरना जरूर आते। फिर उनके न रहने की ख़बर आ गई।

जगत उस के गुजरने से मैं उखड़ गया। अकेलापन और ख़ालीपन जैसे अंदर भर गया हो। फिर सब बेजरूरी और बेकार लगने लगा। खेत दूसरों को सौंप दिये। आधा-चौथाई जो भी देते ठीक था।

गुंजन मैं गरम रोटी और दाल ले आऊं।

जगत यह सब सुनना अच्छा नहीं लगता।

गुंजन मुझे शर्म आती है। आपकी तकलीफ मैं जानती थी।

जगत तुम जान सकती थीं वह तो नहीं। मुझे तुम से शिकायत नहीं है, उससे है-अपने बेटे से।

गुंजन कल रात मैंने दूध देना चाहा आपने मनाकर दिया। कितने कमजोर हो गए हैं आप।

जगत किसी दिन तुम्हारी सास की तरह मैं भी गुजर जाऊंगा। आसपास के जानकार कंधे पर उठाकर जला-फूंक आएंगे।

गुंजन बुरा मत कहिये पापाजी। हम अब आप को अकेला नहीं रहने देंगे। मैं रोटी ला रही हूं।

(गुंजन अंदर जाता है। जगतसिंह कुशल को खेलता हुआ देखते हैं, जैसे खाना खाना भूल गए।)

गुंजन — अरे! आपने तो पूरा खत्म नहीं की।

जगत — उसको खेलता हुआ देख रहा था। कुलवंत भी इसी तरह खेलता था।

गुंजन — इससे ज्यादा शैतान थे। यह मुझे परेशान किए रखता है। उन से डरता है, मेरी सुनता ही नहीं।

जगत — बाप इस से दस गुना था। जिद्दी इतना कि अपनी मर्जी करवा कर छोड़े। मां ने बिगाड़ रखा था। मुझे शिकायत रहती थी कि इकलौता बेटा है उसके पीछे पड़ा रहता हूं। तभी तो मनमानी करने लगा।

कुशल — ग्रैंडडैड, लंच ले चुके? आइए सेलेंगे।

गुंजन — उठिये हाथ धुलाऊं। ग्रैंडडैड नहीं खेलेंगे। तुम अंदर चलो। *(कुशल से।)*

कुशल — व्हाई नोट? अभी वह खेले कहा हैं। मॉम प्लीज।

गुंजन — नो वह थक जाएंगे। कम सून! कम कम

जगत — कल से नौकरानी के हाथ खाना वगैरह भेज दिया करो। सामने होती हो तो दिल बोल ने लगता है।

गुंजन — तो क्या हुआ। क्या ऐसा कुछ कहते हैं जो मैं समझती नहीं, या फील नहीं करती।

(गुंजन थाली उठाकर जाने को होती है।)

जगत — ठहरो बेटी! मुझे एक बात बता दो। तुम तो सालों से वहां रह रही हो। वहां ऐसा क्या है जिसके लिए लोग जमीन-जायदाद बेचकर कर्ज लेकर, जायज नाजायज तौर पर जाते हैं? वहीं नहीं दूसरे देशों में भी।

गुंजन — वक्त आने पर बताऊंगी पापाजी। लौटने से पहले आप को बताकर जाऊंगी कि वहां जाने और बसने का क्यों क्रेज है।

(गुंजन जाती है। जगतसिंह कुशल के बुलाने पर उसके पास पहुंच जाते हैं। रैकेट लेकर शटल उछालने लगते हैं।)

(दृश्य लोप)

दृश्य तीन

(कुलवंत कुर्सी पर बैठा रंगीन मेगजीन पढ़ रहा है। समय 5 बजे अपराह्न। गुंजन ट्रे में केटली पोट मग लेकर अंदर से आती है।)

गुंजन — *(ट्रे रखकर खुद बैठती है। मगों में चाय डालती है)* लो।

कुलवत (मैगजान रखते हुए मग लेता है। चुस्की भरता है। बीच म कुछ पलों की खामोशी) बीस दिन लौटने के रह गए। अभी तो कुछ तय नहीं हुआ।

गुजन तुमने पापाजा से जिक किया तो था, क्या जवाब दिया?

कुलवत साफ-साफ नहीं बताते। कह दिया सोचूँगा, जल्दी क्या है, जबकि मैं चाहता हूँ

गुजन कि वो चटपट हाँ भर दें तुम्हारी मर्जी के मुताबिक।

कुलवत पता नहीं क्यों, वे मुझसे फासला रखकर बोलते हैं देखते हैं तो एसे जैसे मैं उनका बेटा नहीं कोई अनजान, पराया शख्स हूँ।

गुजन क्या हम उनक हैं, या रहे हैं? हमने वहाँ रहकर उनके दर्द और अकेलेपन को जाना?

कुलवत इसीलिए तो आए हैं कि उन्हें लेकर चलें। यहा क्या रहा है?

गुजन जमीन-मकान बेचने की बात उनके सामने रखी?

कुलवत वह मौका कहा देते हैं। पहले कनाडा चलने की हामी भरे तब तो कहूँ। वे तुम्हारी मान सकते है लेकिन तुम मुधमे को ऑपरेट नहीं करती।

गुजन जब तुम्हारी हिम्मत नहीं बनती तब मैं कैसे हौसला जुटाऊँ?

कुलवत तब क्या जैसे आए हैं वैसे लौटना होगा। आसान है क्या दुबारा जल्दी आना।

गुजन वे वहाँ क्यू जाएंगे? क्या है उनका वहाँ जिसके लिए उनमें जान की इच्छा उठे?

कुलवत तुम उनकी तरफ से बोल रही हो। मैं पा रहा हूँ कि तुम खुद हमारे लिए हुए डिसीजन से हट गई हो—आई मीन वाट वी हैड डिसाइडेड बिफोर लीविंग केनेडा।

गुजन जरूर। दूर रहने, आँखो के सामने न होने और साथ में रहने में फर्क होता है। तुमने अपने इरादे से हटकर सोचने और अपने को टटोलने की कोशिश की?

कुलवत तुम कैसे सवाल कर रही हो मुझसे!

गुजन वहा जो मुझमें उठते रहे हैं यहाँ आकर। पापाजी से जो अपनत्व मैंने और कुशल ने पाया, कुलवत उसको तुम महसूस ही नहीं कर सकते-करना चाहते तो कर सकते थे। तुम तो बाहर जाते हो, यहां के अपने मिलनेवालों से मिलने, लेकिन तुम उस बड़प्पन को ओढ़े रहते हो कि तुम फौरेन में हो। यह भी कि तुम कल्चर्ड देश में हो जबकि तुम जानते हो कि वो कल्चर है ही नहीं—ऊपरी दौड़, दिखावा, इस्तेमाल के बाद गार्बेज बनाने वाली।

कुलवत *(परेशान और उत्तेजित होकर खड़ा हो जाता है) वाट आर यू टॉकिंग अबाउट गुजन! आई एम एक्सट्रीमली सरप्राइज्ड एण्ड परटर्ब्ड (घूमने लगता है। गुजन उसकी उत्तेजना को देखकर खामोश हो जाती है, बल्कि दहशत में हो जाती है। थोड़ी देर की खामोशी। गुजन मगों को ट्रे मे रखकर उठने को होती है। कुर्सी पर से)*

तुम्हारा मतलब है कि वहा क इतने सालों क जमाव को उखाड़ कर यहाँ आ जाऊँ? यहाँ क्या है मेरे लिए? कितना कमा सकूँगा? कोई कम्पनी उतनी तनख्वाह देगी जितनी वहाँ पा रहा हूँ। यह भी सोचा कि कुशल का फ्यूचर क्या है यहा?

गुजन (*ट्रे उठा लेती है*) मेरी अपनी घुटन भी थी वहाँ की जो मैंने कह दी। इतना फ्रीडम तो मुझ दाग। बाकी डिसीजन तुम्हारे पास है। पापाजी की मर्जी उनक साथ है। मुझे तो वही करना हागा न जैसा तुम चाहोगे। आज के बाद मैं अपनी राय भी जाहिर नहीं करूँगी। (*गुजन अदर चला जाता है। कुलवत परेशान उत्तेजित घूमता रहता है। सामने से जगतसिह और कुशल आते दीखते है। कुशल के हाथ में गैस वाले दो बडे गुब्बारे हैं। वो उनकी डोरी को ऊपर नीचे करता हुआ चल रहा है। कुलवत उनको देखता है। अपना तनाव छुपाने के लिए घर में चला जाता है।*)

(*दृश्य लोप*)

दृश्य चार

(*जगतसिह पढ़ रहे हैं। समय 10 00 बजे दिन। कुशल अदर से रेकेट और शटल लिए आता है। उसके हाथ में दो रेकेट हैं।*)

कुशल ग्रेण्डडेड बहुत पढ चुक। अब हमारे साथ खेलिए।

जगत अन्दर आगन में डेडी के साथ खेल लो

कुशल वो वहाँ भी नहीं खेलते थे। यहाँ भी नहीं खेलते।

जगत क्यों?

कुशल वहाँ उनको टाइम नहीं मिलता था। यहा टाइम है लेकिन तब भी नहीं खेलते। तब मैं किसके साथ खेलू? (हाथ पकडकर) चलिए न ग्रण्ड डेड। क्या हर वक्त पढ़ते रहते हैं। हेडेक नहीं होता।

जगत आदत पड गई है। अच्छा चलो पहले वो पौध देख आ तुमन लगाए हैं। पानी तो दिया नहीं, बढ़ेंगे कैसे? तुम जब अपने देश चले जाओगे तब हमें इन पौधों को देखकर तुम्हारी याद आया करेगी।

कुशल हमें भी आएगी ग्रेण्ड डेड। लेकिन हम तो आपको लेने आए हैं। वहाँ आपको वीक एण्ड पिकनिक के लिए ले जाया करेंगे।

जगत अगर हम तुम्हारे देश नहीं जाएँ तो।

कुशल व्हाई नॉट? नो नो आपको चलना पड़ेगा हमारे साथ। लेट अस प्ले ग्रेण्डडेड। उठिए-उठिए (हाथ पकड़कर उठाता है। जगतसिह किताब रखकर उठत हैं। चबूतरे स नाचे उतर कर पेड़ के पास दोनों खेलते हैं। कुशल बीच बाच में

'गुडशाट', फाइन शाट' जैसे शब्द बोलता है। तभी फाटक खोलकर रौनकलाल आते दीखते हैं। नजदीक आकर खड़े हो जाते हैं)

रौनक दादा-पोते खेल रहे हैं।

जगत जिद कर रहा था। पढ़ते से उठा लिया। *(कुशल से)* अब तुम खेलो।

कुशल हाऊ अलोन ?

जगत तो पौधों में पानी दे दो। वो देखो वहाँ बाल्टी रखी है। नल से भर लेना।

(गुजन अन्दर से चबूतरे पर आती है।)

गुजन कुशल अन्दर आओ। नाश्ता करो। डेड इज वेटिंग

जगत जाओ। तुम्हारी मदर बुला रही हैं।

गुजन पापाजी आप भा

जगत पहले तुम लोग कर लो।

(कुशल और गुजन अन्दर जाते है। जगतसिंह रौनक लाल के साथ चबूतरे पर आ जाते है। दोनों कुर्सी पर बैठते हैं)

रौनक आप की तो दुनिया बदल गई जगतसिंह जी।

जगत हाँ। कुलवत की बहू बहुत अच्छी लड़की है।ये पोता तो है ही।

रौनक *(हसकर व्यग्य से)* माया मोह ऐसा ही होता है।

जगत धूप-छाह है।

रौनक आप तो कहते थे सुना है आपको लेने आया है कुलवत।

जगत हाँ।

रौनक आप भी वहीं बसोगे।

जगत पता नहीं। बस चलत ता हरगिज नहीं जाऊंगा। बेटे और बाप के बाच खेंचातानी है।

रौनक मेरी बेटी का मामला तो सुलझ गया। यही आपको बताने आया था।

जगत ससुराल वाले और तुम्हार दामाद उसे ले जाने के लिए मान गए।

रौनक नहीं जी। चार उनके और चार हमारे रिश्तदारों के बीच में तय हो गया। उन्होंन हमारे दिए जेवर लौटा दिए। पाँच सौ रुपये महीना रहन-सहन का खर्च देने को तैयार थे। सो मेरी बेटी ने मनाकर दिया। कह दिया मैं भिखारी नहीं हू। खुद कमाऊँगी गुजारा करूँगी। जब रिश्ता नहीं रहा तो खर्च किस बात का। दामाद जी पर घड़ों पानी पड़ गया। मैं नहीं जानता था जगतसिंह जी कि बेटी अन्दर-अन्दर अपना मन इतना मजबूत कर चुकी है।

जगत	रौनकलाल आत्मी मिजाज से कुडला मारे सर्प की मानिन्द होता है आराम पसद, सहज स्थिति चाहने वाला। जब परिस्थिति की चोट उसके फन पर पडती है तब उसकी जीवना शक्ति बिजली की तरह चमक उठती है। वह कमर कसकर चुनौती में खड़ा हो जाता है। तुम्हारी बेटी ने भी ईंट का जवाब पत्थर से दिया। शाबास उसको शाबास

रौनक	जगतसिंह जी, परसादी लाल आपके लिए भी कुछ कह रहे थे। वह कह रहे थे अगर जगतसिंह बेटे के दबाव में विदेश चला गया तो पछतायेगा। वहा की मशीनी जिदगी में बूढ़ा आदमी बर्दास्त किया गया पुर्जा होता है बे हस्ती का, कबाड़ी को दे दिया गया।

जगत	सुन चुका हू। परसादी के मुह से उसकी कहानी सुन चुका हूँ कि वह क्यों, कैसे कनाडा से लौट पाया किस तरह उसे बेटे ने तग किया, उसे यतीमों की तरह गुरुद्वारे में रहना पड़ा

रौनक	आप तो खुद अक्लमद हो मोह माया के चक्कर में मत आ जाना। हाथी के बाहरी दात दिखावे के होते हैं।

जगत	बद करो यह जिक्र रौनकलाल, मैं खुद बहुत परेशान हू। सोच नहीं पाता कुलवत ने जो जिद ठानी है उस से बचू कैसे? वह चाहता है खेत मकान बेचकर रुपया उसके हवाले कर दू। वह नौकरी छोड कर अपनी कम्पनी खोलना चाहता है वहा।

रौनक	ना, ना, ऐसा मत करना जगतसिंह जी। अपने हाथ कटालिए तो जीना दुश्वार हो जाएगा। वैसे आपको मैं क्या सीख दू मैं तो खुद आपके पास अपना दुखडा रोने आया करता हूँ। तो चलू अब

जगत	यही बताने आए थे। एक बोझा उलझन का और पटक दिया मेरे दिमाग में।

रौनक	नहीं नहीं जी। भला मेरी क्या बिसात। मैंने सुना तो रहा नहीं गया, आ गया आपके पास। हमारी आपकी जिदगी कितनी है, यहा की मिट्टी के है, यहीं की मिट्टी में मिल जाए इसके अलावा क्या चाह हो सकती है।

(खडा हो जाता है) अच्छा चलू। माफ करना अगर गलती हो गई। आप तो खुद कसौटी हो सोने और मुलम्मे के पारखी। नमस्ते।

जगत	हाँ, नमस्ते।

(रौनकलाल चबूतरे से उतरता हुआ जाता है। जगतसिंह कुर्सी में उसी तरह बैठे रहते हैं। उनकी नजर उस सिर कटे पेड को देखती है देखती रहती है। फिर वह आँखे मूद लेते है जैसे अपने को शात कर रहे हो। शायद अपने अतर में उतरकर वहीं से किसी हल की अपेक्षा कर रहे हों व्यक्ति की चरम परिस्थितियों में एक स्थिति होती है जब वह देह की चेतना से शून्य अपनी अतरात्मा के

निवट होता है—समाधि स्थिति में। जगतसिंह उसी स्थिति में है। थोड़ा देर बाद गुंजन अन्दर से आती है।)

गुंजन *(धीमे से)* पापाजी पापाजी ! सो रहे हैं क्या ?

(जगतसिंह में प्रतिक्रिया नहीं होती।)

(धीरे से स्पर्श करके।) पापाजी।

जगत *(चौंककर)* हैं ! क्या ?

गुंजन क्या हुआ ? क्या नींद आ गई थी ?

जगत नहीं तो।

गुंजन तब ऐसे कैसे हो रहे हैं ?

जगत *(सम्भलकर। कुर्सी में आसन बदलकर)* ठीक हूं। ठीक तो हूं

गुंजन *(मुस्कराकर)* वैसे नहीं हैं जैसे

जगत कैसे ? सही तो हूं।

गुंजन दूध पराठे ले आऊं ?

जगत ले आओ।

(गुंजन पलटती है।)

रुको, रहने दो। अभी नहीं।

गुंजन फिर कब। आप खाने में लापरवाही बहुत करते है।

जगत मेरी दिन-रात की नींद उड़ गई है। क्यों यह कुलवंत कुछ साल और इंतजार नहीं कर लेता मेरे मरने के बाद मकान-जमीन उसी की तो है तब जैसी मर्जी हो करे। बेचे, रखे, या उठाकर वहां ले जाए जहां वह अपनी नाल गड़ी हुई समझता है।

गुंजन *(डर-सी जाती है।)* आप इतना डिस्टर्ब क्यों हैं पापाजी, आपकी मर्जी के खिलाफ कैसे हो सकता है। आप जैसा चाहते हैं वही करिये।

जगत लेकिन वह तो

गुंजन उनके चाहने से क्या होता है। क्या आपने चाहा था कि वह आपको छोड़ कर दूसरे देश मे जाकर बसें ? अगर वह अपने लिये आजाद हैं, तो आप भी अपने लिये निर्णय ले सकते हैं। परेशान मत रहिए आप को मेरी कसम है। मैं दूध ला रहा हूं।

(फिर जाने को होती है।)

जगत रुको, जल्दी क्या है।

(रुक जाती है।)

मैं तुम से पूछ रहा हू, तुम्हारे लिहाज से मुझे क्या करना चाहिए। कुलवत क्या कर रहा है ?

गुजन नहा चुक हैं, अपने कमरे में हैं। पता नहीं क्या कर रहे हैं।

जगत तुम बताओ कि मुझे क्या करना चाहिए ?

गुजन मैं क्या कहू पापाजी। मुझे वही मानना होगा जैसा वह चाहगे मैं चाहू या न चाहू। सच यह है कि इतने साल रहने के बाद भी वहा अपने को एडजस्टेड नहीं पाती। यही महसूस होता है पराई जगह हैं।

जगत बस जाओ। मैं समझ गया। मुझे क्या करना चाहिए। कुलवत को भेज दो, मैं आज निबटा देता हू सबकी परेशानी।

गुजन भेज रहा हू लेकिन आप

जगत डरो मत। मैं उससे लडूगा नहीं। हालाकि मैं उससे नाखुश हू और मुन में उसके लिये गुस्सा है।

गुजन जी, भेज रही हू।

(अन्दर जाती है। जगतसिंह कुर्सी में सम्भल कर बैठते हैं। उनके चेहरे पर सख्ती उभर आती है। थोड़ी देर के अतराल के बाद कुलवत आता है)

कुलवत आपने बुलाया।

जगत हाँ, बैठो सामने।

कुलवत ठीक हू *(खड़ा रहता है। फिर थोड़ा सोचकर बैठ जाता है।)*

जगत तुम्हारे जाने में अब थोड़े ही दिन रह गए हैं।

कुलवत जी।

जगत अपने इरादे पर दोबारा सोचा। क्या उसमें तबदीली की गुजाइश है ?

कुलवत लौटना तो है ही। आपको भी चलना है।

जगत यह डिसीजन तुम्हारा है, जिसे मुझ पर लागू करना चाहते हो। जरूरी नहीं कि मैं मानू।

कुलवत यहा किसके सहारे आपको छोडू।

जगत सहारा किसका होता है। तुम जब कनाडा गए थे तो किसका सहारा था ? तुम वहाँ पाँच छ साल अकेले रहे। रास्ता बना लिया तो वाइफ को ले गए। ऐसे ही तुम्हारी मा के मरने के बाद मेरे दिल ने अपना तरीका खोज लिया—अकेले रहने का। मुझे किसी तरह की तकलीफ नहीं है। अफसोस जरूर है कि तुम अपनी माँ की बीमारी और उसके मरने पर भी नहीं आए। पर क्या हुआ। अग्नि अर्पण का काम रुका तो नहीं। बाकी भी काम पूरे हो हुए।

कुलवत आपको लिखा था मैंने कि मैंने बहुत कोशिश की। यहाँ तक कि उस कम्पनी को भी लड़कर छोड़ दिया जिसने छुट्टियां नहीं दी। वास्तव में मैं गुलामी से उकता गया हूं इसीलिए वहाँ अपना कन्सर्न खोलना चाहता हूं।

(गुंजन आता है। उसे डर है कि कहीं बाप-बेटे में कहा-सुनी न हो जाए)

गुंजन पापाजी नाश्ता ला रही हूं। पराठे बिल्कुल ठंडे हो जाएंगे। दूध तो हो ही गया।

जगत *(मुस्कराकर)* कर लूंगा। डरो मत, हममें लड़ाई नहीं होगी। हम किसी नतीजे पर पहुंचने की कोशिश कर रहे हैं।

(गुंजन अन्दर चली जाती है)

जगत हाँ, मैं जानता हूं तुम यहाँ जब इतने सालों से रह रहे हो तो नेचुरली वहां के माहौल में एडजस्ट हो चुके हो। तुम्हें लगता है वहाँ बेहतर तौर पर अमीर हो सकोगे।

कुलवत ये आप भी जानते हैं। यहाँ इण्डिया में लोस्ट स्काप है प्रोग्रेस की।

जगत अमीरी की प्रायारिटी तुम्हारी हो सकती है, जरूरी नहीं कि मेरी हो। मैं तुम्हें, तुम्हारे परिवार को चाह सकता हूं, उसके साथ रहना मेरा मोह हो सकता है, लेकिन इस उम्र में यहाँ से उखाड़ दिया जाकर वहाँ रोपा जाऊं क्या ये मेरे साथ ज्यादती नहीं होगी?

कुलवत मामूली सी बात है। वहाँ हजारों एशिया के परिवार हैं। उनके साथ बुजुर्ग हैं। शायद आपको बेजरूरत फोबिया है वहाँ जाने का। लोग तो फॉरन में सेटिल होने के लिए तरसते हैं।

जगत वो ख्वाबों में जीते हैं। मेरे पास ख्वाब नहीं हैं। मुझे सुकून चाहिए। मुझे इज्जत चाहिए। ऐसे लोग चाहिएं जो मेरे सुख-दुःख में हिस्सा बटाने वाले हों।

कुलवत *(हल्की उत्तेजना के साथ)* आपको मेरे और कुशल के फ्यूचर की परवाह करनी चाहिए। कुशल यहाँ कैसे एडजस्ट हो सकता है जबकि वो पैदा ही वहाँ हुआ है।

जगत तुम यहाँ पैदा हुए थे। मैं भी यहां पैदा हुआ हूं। गुंजन भी यहीं पैदा हुई। आबोहवा सिर्फ हवा, पानी और ऋतुओं से नहीं बनती कुलवत। वे जीने का एक तरीका होती है जिसको कल्चर संस्कार देती है।

कुलवत *(और तेज उत्तेजित होकर)* आप बहस कर रहे हैं। इससे कोई नतीजा नहीं निकलना। आप अपनी जगह से हटकर जरा सा भी समझौता नहीं करना चाहते।

जगत किया हो है। कर रहा हूं। तुम्हें तुम्हारी स्वतंत्रता और हक दे रहा हूं। अपनी आजादी अपने पास रख रहा हूं। तुम ऐसा करो कि जमीन-जायदाद बेचकर उस धन से जो भी करना चाहो, करो। लेकिन मुझे तो जायदाद की तरह ट्रीट मत करो। क्या यहाँ, जो इस मुल्क में रह रहे हैं उन सबको दूसरे मुल्क में जाकर बस

जाना चाहिए—दूसरे दर्जे की गुलामी अख्तयार कर के। तब तो हिन्दुस्तान और एशिया खाली हो जाएगा।

कुलवत *(झुंझलाकर भन्नाता हुआ खड़ा हो जाता है)* इस तरह तो हमारा डायलॉग करना ही बेकार है।

(अन्दर जाने को होता है)

जगत ठहरो। अन्दर क्यों भाग रहे हो? *(कुलवत ठिठक जाता है)* मैंने कहा न मुझे यहाँ छोड़ जाओ। अपना हक ले जाओ। जिस तेज रफ्तार और घड़ी की सुइयों को तुम लोगों ने जिन्दगी सौंप दी है उससे हट कर अपने अन्दर तो भी टटोलो। तुम तो गुंजन को भी नहीं पहचान सके जो तुम्हारे साथ है तुम्हारी पत्नी। कुशल की वास्तविक जरूरत को पहचानते हो क्या?

कुलवत इटस एनफ। मोर देन एनफ! आप सबने मुझ पर हमला करने का तय कर लिया है।गुंजन ने भी अपने तय किए हुए इरादे को यहां आकर छोड़ दिया। वह भी बदल गई।

जगत अपने को नहीं समझ सकते तो उसी को समझो। उसके दिल की चाहत को कुशल की खुशी को।

कुलवत समझ रहा हूँ। आइ एम नॉट इडियट। खत्म करिए झगड़े को। मैं जानता हूँ मैं अकेला कर दिया गया हूँ आप लोगों के जरिए नहीं जानता कि मैं क्यों और कैसे गलत हूँ अपनी इच्छाओं के मुताबिक डिसीजन लूं या आप लोगों की मर्जी के सामने सरण्डर कर दूं? बेहतर था कि मैं नहीं आता यहाँ।

(कहता हुआ अन्दर चला जाता है। वातावरण में खामोशी तनाव और द्वन्द्व ठहर जाता है)

समाप्त

अपना घर

लक्ष्मीनारायण रंगा

पात्र परिचय

पुरुष

कुबेर

रमेश

डॉक्टर शर्मा

डाकिया (बाहर से आवाज)

नारी

लक्ष्मी

मकान-मालीकन

अपना घर

(पर्दा उठने से पूर्व पार्श्व में गीत सुनाई देता है)

हर आँख बुनती है एक घर का सपना
अपना हो छत और आँगन हो अपना
जियें आजादी से अपना ये जीवन
सदियों से लेता इन्सां ये सपना

गीत की समाप्ति से पूर्व धीरे-धीरे पर्दा हटने लगता है। पर्दा हटने पर सामने एक सीलन भरा सा कमरा दिखाई देता है—जिसकी दीवारों का जगह-जगह से पलस्तर उतरा हुआ है। सामने की दीवार पर प्रकृति की गोद में बने एक सुन्दर से घर का बड़ा कलैण्डर या चित्र लगा हुआ है। मध्यमवर्गीय सजावट है। कुर्सी का पिछला हिस्सा पकड़े लक्ष्मी खड़ी चित्र को देख रही है—भावविभोर होकर। वह अपने आँसू पोंछती है। बाहर से कुबेर का प्रवेश। उसके हाथ में दूध की थैली है। वह लक्ष्मी को इस तरह खड़ा देखकर सहम जाता है।

कुबेर (सहमता हुआ पुकारता है) लक्ष्मी ओ लक्ष्मी! फिर मकान मालकिन से झगड़ा हुआ? *(थैली मेज पर रख देता है।)*

लक्ष्मी *(दर्द भरे स्वर में घुटती हुई)* कब नहीं होता? अब अब मैं तंग आ गई है, इस किराये की जिन्दगी से

कुबेर *(सहानुभूति से)* धीरज रखो लक्ष्मी

लक्ष्मी *(थोड़े आक्रोश से)* कब तक रखूं धीरज? रोज रोज की यह किट-किट मुझसे नहीं सही जाती। मकान किराये का क्या लेना है जिन्दगी गिरवी रखनी है।

कुबेर मैं मानता हूँ पर क्या करूं?

लक्ष्मी कुछ भी कीजिए-मैं इस कैदखाने में अब और नहीं रह सकता। मेरा यहाँ दम घुटता है। मैं मर जाऊंगी। *(साड़ी के पल्लू में मुंह ढाप कर रोने लगती है।)*

कुबेर रो मत लक्ष्मी, हम इस घर को

लक्ष्मी घर? यह घर नहीं नर्ककुण्ड है। सीलन और अंधेरे-भरे दो कमरे। न खिड़कियाँ, न रोशनदान। न हवा पग मारता है और न रोशनी कदम रखती है। ऊपर से दिन-रात खटमल और मच्छर खून चूसते हैं। यह घर नहीं काल कोठरी है।

कुबेर (घुटी-घुटी सास छोड़कर) पर क्या करूँ ? कुछ समझ में

लक्ष्मी (बीच मे बात काट कर) कुछ भी करो। अब मुझसे नहीं गुजारा जाता, गन्दी गली सा जीवन

कुबेर लक्ष्मी, जब इतने दिन ही गुजार दिए तो थोडे दिन और धीरज रख।

लक्ष्मी नहीं, (रोती हुई) अब धीरज नहीं रख सकती। एक तो यह सुलगती भाड, ऊपर से मकान-मालकिन के हर समय व्यग्य और ताने अगर यहां और रहना पड़ा तो मैं पागल हो जाऊंगी या आत्महत्या कर लूगी।

(पार्श्व से मकान-मालकिन की आवाज)

मकान मालकिन (चीखती हुई) अरी ओ महारानी, कान खोलकर सुनले। यहाँ कोई तेरी नौकरानी नहीं बैठी है नालियाँ साफ करने वाली, गट्टर धोने वाली। (मकान-मालकिन का प्रवेश) इस घर में रहना है तो छत आँगन सब जगह झाडू निकालना पडेगा (लक्ष्मी उसकी ओर देखती है)। अरे! दीदे फाड कर मुझे मत देख, इस घर में मेरे हुक्म के बिना पत्ता भी नहीं हिलेगा। तुम यहां बर्तन साफ नहीं करोगी। मसाला नहीं कूटोगी—कोयले-लकड़ियां नहीं तोडोगी। धम-धम धमाचौकडी नहीं मचाओगी। समझे? (कुबेर की तरफ देखती है।)

मकान-मालकिन हाँ कल शाम कौन आया था तुम्हारे साथ? ऐसे हँस रहा था जैसे उसके बाप का घर हो। कान खोलकर सुनलो—मेहमान मिलने वालों को मैं अपने घर में रात को दस बजे के बाद नहीं घुसने दूगी - हाँ।

कुबेर देखिये, यह तो कोई बात नहीं हुई। हमारी भी कोई जिन्दगी है—हमारी भी कोई आजादी है।

मकान-मालकिन (व्यग्य से) क्यो नहीं क्यों नहीं? पूरी आजादी है। पर मेरे घर में तो मेरी आजादी चलती है। हाँ, कल रात को देर तक बिजली क्यों जल रही थी? और तुम पखा इतना तेज क्यों चलाते हो? इतने जोर से नहीं चलाओगे-समझे! सुनलो पसन्द हो तो यहां रहो नहीं तो ढूढ लो आज ही कोई मकान।

(चली जाती है—कुबेर उधर देखता ही रहता है।)

लक्ष्मी अगर मकान मालिकों का बस चले तो वे ये भी हुक्म दे सकते हैं कि सास इस तरह लो, दिल इस तरह धडकने दो। भगवान जाने कब मुक्ति मिलेगी इस सख्त कैद से? या यू ही तरस तरस कर मर जाएगे

कुबेर ऐसा न कह पगली। हमने घर बुक करा रखा है—जल्दी ही मिल जाएगा

लक्ष्मी जल्दी? यह सुनते-सुनते तो मैं बूढ़ी हो गई। पन्द्रह वर्ष होने को आये हैं। अभी तक तो घर के खुर-खोज ही नहीं।

कुबेर (आशा-भरे स्वर में) अरे! अब तो मिलेगा ही।

लक्ष्मी (व्यंग्य से) हां, हमें नहीं तो हमारे बेटे-पोतों को तो शायद मिल ही जाएगा।

कुबेर नहीं-नहीं हमें ही मिलेगा—मेरी लक्ष्मी ही गृहलक्ष्मी बनेगी, घर की मालकिन होगी।

लक्ष्मी (लम्बी सांस छोड़कर) पता नहीं अपने घर का सपना पूरा भी होगा या सपने देखते-देखते ही मर जाएंगे।

कुबेर नहीं लक्ष्मी दिल छोटा मत कर हमारा भी अपना घर होगा। अरे! दस बज रहे हैं ऑफिस जाने में देरी हो जाएगी—चलो जल्दी से खाना खिलाओ—चलो उठो ना लक्ष्मी देवी! *(हाथ पकड़ कर उठाता है—मुस्कराती हुई उठती है अन्दर जाते हैं।)*

(रोशनी बुझती है। रोशनी जलने पर रमेश कुर्सी पर बैठा है—कुबेर पास खड़ा बातचीत कर रहा है। दोनों के हाथों में चाय के प्याले हैं।)

कुबेर रमेश! इतने मकान बन रहे हैं—शहर की बाहें पसरती जा रही हैं। पर हमें एक अदद छत नसीब नहीं होता। *(चाय की चुस्की लेता है।)*

रमेश कहाँ से हो कुबेर! जब भी मकान बनते हैं—कोई न कोई ऊपर से टपक पड़ता है।

कुबेर सही है रमेश, पिछले कई वर्षों से देख रहा हूं—बने-बनाए मकान कभी विधायकों को दे दिए जाते हैं—कभी पत्रकारों को

रमेश कभी रिटायर्ड लोगों को, तो कभी बोर्ड के कर्मचारियों को—कभी किसी को, तो कभी किसी को।

कुबेर और बेचारी आम जनता वर्षों तरसती रहती है—एक घरौंदा पाने के लिए।

रमेश पर सुना है कुबेर इस बार तुम्हारे बुकिंग इयर के सभी लोगों को मकान आवंटित कर दिए जाएंगे।

कुबेर भाई विश्वास नहीं होता

रमेश अरे! कल के अखबार में यह सूचना छपी है—तुमने पढ़ी नहीं क्या?

कुबेर रमेश-ऑफिस का वर्कलोड इतना है कि घर लाकर काम करना पड़ता है। अखबार पढ़ने की किसको फुरसत है।

रमेश यह समाचार मैंने खुद ने पढ़ा है, कुबेर विश्वास कर।

कुबेर विश्वास? ऐसे समाचार मैं पहले कई बार पढ़ चुका हूँ। रमेश! हाथी के दांत खाने के और दिखाने के और

रमेश नहीं कुबेर! कई लोगों को बोर्ड से पत्र भी मिल चुके हैं।

कुबेर अच्छा? चलो बाबा कैसे हो एक घर मिल जाए तो जिन्दगी का एक बहुत बड़ा सपना साकार हो जाए। अपना घर, अपना ही होता है।

रमेश सच है कुबेर, अपने घर में जन्मना और अपने घर-आंगन में पसरना सौभाग्यशालियों को नसीब होता है। अच्छा चलूं।

(रमेश उठकर जाता है। कुबेर दरवाजे तक पहुँचाता है। लक्ष्मी स्वेटर बुनती हुई अन्दर से आती है।)

कुबेर लक्ष्मी सुन रही हो- अब जल्दी ही हमको घर मिल जायेगा।

लक्ष्मी दिन में सपने देखने की तुम्हारी आदत अभी छूटी नहीं।

कुबेर ऐतबार करो लक्ष्मी-, कल अखबार में यह खबर छप चुकी है।

लक्ष्मी आए दिन खबरें छपती हैं-वायदे होते हैं-आश्वासन मिलते हैं पर कभी पूरे हों तब न?

कुबेर नहीं इस बार ऐसा नहीं। रमेश बता रहा था कि कई लोगों के पास पत्र भी आ गए हैं - अब हम भी अपने घर के मालिक होंगे।

लक्ष्मी *(प्रसन्न होकर)* आपके मुंह में घी शक्कर। कब तक मिल जाएगा घर?

कुबेर अरी बहुत जल्दी। बहुत जल्दी मेरी लक्ष्मी गृह लक्ष्मी होगी।

लक्ष्मी *(आनन्द में डूबकर फुसफुसाती है)* मैं घर की मालकिन बनूंगी?

कुबेर *(पास जाकर)* हां-घर की मालकिन, पूरे घर की मालकिन।

लक्ष्मी तो कान खोल कर सुन लो जी- मैं अपने घर में कोई किरायेदार नहीं रखूंगी

कुबेर *(हंसकर)* अरे पगली! दो-तीन कमरों के घर में किरायेदार कहां से रखोगी? तुम अकेली ही घर की मालकिन होओगी।

लक्ष्मी *(प्यार से)* हूं! तो सुनो अपने घर को मैं अपनी मर्जी से सजाऊंगी इसमें मैं आपकी एक नहीं सुनूंगी। समझे?

कुबेर *(स्वीकृति में सिर हिलाते हुए)* हां सब समझ गया। तुम चाहो जैसे करना-घर तो घरवाली का होता है। घरवाली से ही घर मन्दिर बनता है

लक्ष्मी हां- घर में मैं मन्दिर भी बनाऊंगी- मुख्य द्वार पर गणेशजी महाराज *(हाथ जोड़ती है)* की मूर्ति लगवाऊंगी। रोज सुबह शाम जोत करूंगी। हां आपकी भी आरती उतारूंगी मैं *(वह खुशी से गद्‌गद् होती है।)*

कुबेर (*प्रसन्नता से*) और मैं तुम्हें लक्ष्मी नहीं गृहलक्ष्मी कहकर पुकारूंगा। तुम मेरे घर की देवी हो, देवी।

लक्ष्मी मैं कमरों की दीवारें नीला रंगवाऊंगी छत संगमरमर सी सफेद खिड़कियां पीले रंग की उन पर पर्दे कसूम्बल टागूंगी (*भावविभोर होकर*) दूध जैसे उजले बिस्तर ट्यूबलाईट की मद्धम-मद्धम रोशनी रात भर जलाऊंगी

कुबेर (*भावविभोर होकर*) हां, अपने घर को हम जैसा चाहेंगे सजाएंगे जैसा चाहेंगे रहेंगे-मर्जी आएगा, जितनी देर रात को जगेंगे।

लक्ष्मी मन चाहेगा तब उठेंगे-आधी रात टी वी टेप चलेगा, पंखा चलेगा, जोर-जोर से बोलेंगे, मन खोलकर हंसेंगे

कुबेर हां अपने आगन में घूमेंगे -छत पर टहलेंगे खुली हवा में सांस लेंगे

लक्ष्मी (*उसे भावविभोर देखकर मुस्कराती हुई*) सच ?

कुबेर हां, सच लक्ष्मी -सुनो पूरा जीवन सकड़े- घुटे-घुटे कमरों की छत तले मछली की तरह तड़प-तड़प कर गुजरा है अब अपने घर में खुली छत पर सोऊंगा। लक्ष्मी खुली छत पर सोने का आनन्द ही अलग होता है

लक्ष्मी (*बीच में बात काटकर*) नहीं जी। मैं आपको छत पर नहीं सोने दूंगी

कुबेर (*आश्चर्य से*) क्यों ?

लक्ष्मी अजी खुली छत पर सोने के जमाने लद गए- आज के माहौल में खुली छत पर सोना आत्म हत्या करना है। नहीं, मैं आपको छत पर नहीं सोने दूंगी। कमरे में ही सोएंगे। जहाँ फर्र-फर्र पंखे चलेंगे - समन्दर की लहरों से लहराते पर्दे -अगरबत्तियों की मधुर-मधुर सुगंध -वाह! मजा आ जाएगा सोने का। बहुत मीठी नींद आएगी बहुत मीठे सपने आएंगे। सुनो जी। अपने घर में सपने भी तो मीठे आते होंगे ?

कुबेर क्यों नहीं ? अपने घर में पूरा जीवन ही सुख का सपना बन जाता है। तुम्हारी शिकायत भी मिट जाएगी।

लक्ष्मी (*बीच में*) कौन-सी शिकायत ?

कुबेर यही कि ऑफिस से लेट आते हो। लक्ष्मी! अपना घर होगा तो सीधा घर आऊंगा। दफ्तर से छूटते ही तूफान की तरह भागता हुआ।

लक्ष्मी सचमुच ?

कुबेर हां, तुम्हारी कसम।

लक्ष्मी कितना सुख मिलता है अपने घर में।

कुबेर सच कहता है तू, बस दिन-भर दो ही चीजें आँखों में समाई रहेंगी।

लक्ष्मी *(आश्चर्य से)* कौन सी ?

कुबेर घर।

लक्ष्मी और ?

कुबेर *(प्रेम से)* घर की मालकिन।

लक्ष्मी *(शरमा कर)* धत्।

लक्ष्मी सुनो जी

कुबेर हा जी-

लक्ष्मी जब घर मिलने ही वाला है तो जरुरी चीजें खरीदना शुरू क्यों नहीं कर दें ?

कुबेर कौन-सी ?

लक्ष्मी फ्रिज-गैस का चूल्हा- फर्नीचर

कुबेर अरे ! पहले घर की लाटरी तो निकलने दे। फिर तो सोफासेट डाइनिंग टेबुल-डबल बैड-सब कुछ खरीद लेंगे। खूब सजाएगे अपने घर को—पर पहले—लाटरी—

लक्ष्मी कब निकलेगी लाटरी ?

कुबेर आज ही पता लगाने मैं जा रहा हूँ।

लक्ष्मी ठहरो।

कुबेर क्यों ?

लक्ष्मी मुझे शगुन करने दो।

कुबेर *(हसकर)* अच्छा करो।

(अन्दर जाकर कुकुम लाती है- कुबेर टेबुल पर से घर के कागजात का पैड उठाता है। कुबेर के कुमकुम का टीका लगाकर मुस्कराती हुई विदा करती है- कुबेर जाते-जाते उसका नाक पकड कर खींचता है।)

लक्ष्मी हत्- बेशर्म कहीं के ?

(लक्ष्मी मुडकर फिर वह दीवार पर लगा घर का चित्र देखने लगती है। रोशनी धीरे-धीरे बुझ कर जलती है।)

(लाइट बुझकर जलती है-कुबेर बाहर से मरा मरा आता है। पैड को निराशा से टेबुल पर रखता है- लक्ष्मी दु ख भरी नजर से देखती है- कुबेर निराशा से सिर हिलाता है)

(रोशनी बुझकर जलती है कुबेर भारी मुद्रा मे बाहर से आता है पैड लिए। आकर कटे पेड की तरह पलग पर बैठ जाता है-लक्ष्मी की

आखों से आसू बह निकलते हैं। कुबेर सीने पर हाथ फेरता है। करुण संगीत प्रभाव चलता रहता है, रोशनी बुझती है।)

(रोशनी जलती है। बिना संवाद कुबेर प्रसन्नमुद्रा में लक्ष्मी से बातचीत करता हुआ जाने को है। लक्ष्मी कई प्रकार से शगुन करती है- जैसे जल का भरा पात्र लेकर सामने आती है। सिर ढककर कुबेर के तिलक करती है। छींक आ जाने पर वापिस बैठा लेता है। कुबेर उठकर अति प्रसन्नमुद्रा में जाता है। लक्ष्मी दरवाजे पर खड़ी देखती रहती है। थोड़ी देर फ्रीज—— फिर हरकत में आती है। कुबेर वापिस लौटता है- बहुत उदास - थका-हारा दिल पर हाथ रखे।)

लक्ष्मी (घबराकर) क्या हुआ ?

कुबेर (दिल हाथ से दबाकर दर्द से) इस बार भी लाटरी में हमें घर आह—— घर

लक्ष्मी घर को मारो गोली पहले यह बताओ क्या हुआ ?

कुबेर दिल में बहुत तेज दर्द है-आह।

लक्ष्मी *(घबरा कर)* मैं अभी अपने पड़ोसी डॉ शर्मा को लाती हू। *(चली जाती है कुबेर दर्द से तड़पता है-थोड़ी देर में लक्ष्मी के साथ डॉ शर्मा आते हैं, डॉक्टर कुबेर का बी पी नापता है, अन्य जाँच करता है फिर रुक्के पर दवा लिखकर रुक्का लक्ष्मी को देता है।)*

डॉक्टर सुनिए *(पलग से दूर जाता है, लक्ष्मी पीछे-पीछे जाती है, घबराई हुई)*

लक्ष्मी इन्हें क्या हुआ है डॉक्टर साहब ?

डॉक्टर ये बहुत तनाव में है। क्या आप इनके तनाव का कारण बता सकती हैं ?

लक्ष्मी *(दु ख से)* हाँ घर की लाटरी न खुलना, दफ्तर से अनिवार्य सेवा-निवृत्ति का भय मकान मालकिन का दिन-रात लड़ना, महगाई का बोझ ये सब इनके तनाव के कारण हैं। पर सबसे बड़ा कारण घर का न मिलना है। बार-बार की निराशा ने इन्हें तोड़ के रख दिया है।

डॉक्टर बस इसी कारण इन्हें हार्ट-अटैक हो गया है। मैं इनके लिए दवा लिख देता हूँ।

लक्ष्मी *(रुआसी सी)* क्या ? कोई खतरा तो नहीं डॉक्टर साहब ?

डॉक्टर अभी तो कोई खतरा नहीं, पर इनका दिल बहुत कमजोर हो गया है। भविष्य में ध्यान रखिए कि न तो इन्हें ज्यादा खुशी हो, न कोई अधिक दु ख। ये किसी भी सदमे को सह नहीं सकेंगे।

लक्ष्मी — *(रोती सी)* जी

(डॉक्टर जाता है- लक्ष्मी ब्लाउज में से पैसे निकाल कर बाहर की तरफ बढ़ती है। रोशनी बुझती है।)

(रोशनी जलने पर कुबेर बाहर से खुशी-खुशी लौटता है।)

कुबेर — लक्ष्मी ओ लक्ष्मी!

लक्ष्मी — *(प्यार से)* बस-बस ज्यादा खुशा नहीं-बोलो क्या बात है?

कुबेर — *(लेटर निकालकर)* बोर्ड से घर के लिए सीड मनी जमा कराने का पत्र आ गया है। अब हमें घर

लक्ष्मी — ठीक है, मुझे घर से ज्यादा प्यारे है आप, जरा तसल्ली रखिए

कुबेर — ठीक कहती हो लक्ष्मी-यह घर सदा सुख के साथ दु ख लेकर आता है।

लक्ष्मी — अब क्या दु ख है आपको?

कुबेर — बात यह है लक्ष्मी कि चार हजार रुपये तो मुझे बीमा का लोन मिल जाएगा, पर बाकी हजार-डेढ़ हजार का इन्जाम

लक्ष्मी — इन्तजाम हो जाएगा।

कुबेर — *(आश्चर्य से)* कहां से?

लक्ष्मी — मेरा नाम लक्ष्मा है और तुम मुझे कई बार अन्नपूर्णा भी कहते रहे हो, सो आपकी देवी सब इन्तजाम कर देगी।

कुबेर — पर कहां से?

लक्ष्मी — अभी बताती हूं। *(अन्दर जाकर गुलक लाती है)* घर के लिए जिन्दगी की हर तमन्ना को मार-मार कर मैंने एक एक पैसा जो इकटठा किया है। वह किस दिन काम आएगा।

(गुलक तोड़ती है- नोट और सिक्के निकलते हैं, दोनों बड़ी प्रसन्नमुद्रा में गिनते हैं, फ्रिज। रोशनी बुझकर जलती है, दोनों खड़े हैं मकान-मालकिन दरवाजे के पास खड़ी है, गुस्से भरी।)

मकान मालकिन — कहिए, अब कब मिल रहा है घर आपको? अब आप जल्दी घर खाली कर दें तो अच्छा है।

कुबेर — देखिए हमने सीड मनी जमा करादी। घर तैयार हो गए हैं। बस रग रोगन हो रहा है- किसी भी दिन कब्जा-पत्र *(बाहर पोस्टमैन की साईकिल की घटी की आवाज)* यह डाकिया कभी भी कब्जा पत्र ला सकता है।

मकान-मालकिन — अब जल्दी करो- बहुत दिन हो गए झांसे देते।

(मकान मालकिन चली जाती है।)

दोनों दु ख भरी नजर से एक-दूसरे को देखते हैं

(घंटी उसके दरवाजे पर बजती है डाकिया उसका नाम लेकर पुकारता है)

डाकिया कुवर नाथ! *(दोनो हरकत मे आते हैं लक्ष्मी अन्दर लपकती है कुबेर एकदम से उछल कर बड़ी प्रसन्नता से बाहर आता है। बाहर से ही पुकारता आता है। उसके हाथ में बोर्ड का लेटर है। बहुत प्रसन्नमुद्रा में है।)*

कुबेर लक्ष्मी! ओ लक्ष्मी! अरी सुनती हो? अरे मेरे घर की मालकिन! अपने को घर मिल गया, जल्दी आ। *(वह आकर दीमक लगी कुर्सी पर बैठकर लिफ़ाफ़ा खोलता है, पढ़ता है।) (करुण सगीत प्रभाव)*

कुबेर साइ मनी की रसीद न मिलने के कारण *(पीछे से लक्ष्मी हाथ में मिठाई की प्लेट लिए बड़ी प्रसन्नमुद्रा में आती है।) (कुबेर अपलक बैठा है)*

लक्ष्मी *(प्रसन्नता से)* बधाई हो, घर के मालिक। मुह मीठा करो हमें घर मिल गया सुनो सुनो *(कुबेर बोलता नहीं)* सुनो

कुबेर के हाथों में खुला पत्र है—उसकी आँखें फटी हुई है। लक्ष्मी झुककर देखता है और उसे मृत देखकर जोर से चीखती है। प्लेट गिरकर टूट जाती है, मिठाई बिखर जाती है लक्ष्मी कुबेर से लिपटकर रोती रहती है। पार्श्व में गीत उभरता है —

यूँ किराये के घरों में जिन्दगी बिताते हैं लोग
घर की हसरत लिये यूँ ही मर जाते हैं लोग
मर कर भी अपना आगन ना पाते हैं लोग
यूँ ही पराये घरों में पसर जाते हैं लोग।

(करुण सगीत उभरता है। प्रकाश धीरे-धीरे लोप होता है। पर्दा गिरता है।)

सफ़र

लईक़ हुसैन

पात्र परिचय

1	अरुण	एक नौजवान। आयु 35 वर्ष।
2	इला	अरुण की पत्नी। आयु 30 वर्ष।
3	इशान	अरुण का दोस्त। डॉक्टर।
4	बाबा	अरुण के पिता। आयु 65 वर्ष।
5	पियूष	अरुण का दोस्त। व्यापारी।
6	पिंकू	अरुण-इला का बेटा। आयु 3 वर्ष।

सफर

(सभ्य परिवार का एक ड्राईंग रूम। दीवान, सोफा, सेन्ट्रल टेबिल आदि। दीवान के पास दो साईड टेबिल रखी हैं जिन पर दवाइया, गिलास एव पानी का जग आदि रखे हैं। दूसरी और एक्सरे एव अन्य मेडिकल रिपोर्ट आदि रखा हैं। कमरे में अरुण दीवान पर बैठा है तथा इला उसके पास एक स्टूल पर। पियूष सामने एक कुर्सी पर बैठा है। नाटक प्रारभ होते ही ऐसा आभास होता है जैसे पहले से ही किसी मुद्दे पर बहस छिडी हुई है।)

अरुण कब तक, आखिर कब तक इस बिस्तर पर पड़ा रहूँगा मैं ?

पियूष हिम्मत रखो ऐसे हताश होने से तो कुछ नहीं होगा।

अरुण इस चार दीवारा में दम घुटता है मेरा। तुम लोग मुझे बाहर क्यों नहीं जाने देते ?

पियूष कुछ दिन और। बाहर ले जाना ही है। पर तुम्हें कुछ दिन और आराम की जरूरत है।

अरुण आराम, आराम, आराम आराम के बहाने कब तक इस कमरे में कैद करके रखोगे मुझे ? यहां मेरा दम घुटता है।

इला हम समझ सकते हैं। बस कुछ दिन और ।

पियूष हाँ और क्या। फिर इशान अपनी ओर से कोशिश कर ही रहा है।

अरुण 'कोशिश इस शब्द से तग आ गया हूँ मैं। क्या हुआ उसकी महिनों की कोशिश का नतीजा ?

पियूष देखो वह डाक्टर है कोई खुदा तो है नहीं। वह अपनी ओर से कोशिश ही तो कर सकता है।

अरुण पर मुझे साफ बता भी तो सकता है।

पियूष क्या बताएँ, यही की वह तुम्हारा इलाज नहीं कर सकता। या फिर इसका कोई इलाज ही नहीं।

अरुण हाँ और क्या ?

इला डॉक्टर का काम है कोशिश करना। और यह काम वह कर रहा है।

अरुण मुझे झूठी दिलासा देकर।

(इशान का उदास सा प्रवेश)

पियूष लो इशान आ गया अब इसी से बात करो।

इशान क्या बात है ?

अरुण तू मुझे कब तक दिलासा देता रहेगा?

इशान फिर वही बेतुकी बातें।

इला अब आप ही समझाइए भैया। यह हमेशा इस तरह की बातें करते रहते हैं कि ।

पियूष हाँ अब तू ही समझा यार इसे।

इशान मैं क्या समझाऊँ, यह कुछ समझने को तैयार हो तब तो ?

इला तो क्या फिर ?

इशान नहीं आप परेशान ना हो भाभी इसकी आदत है ।

पियूष हाँ और क्या जरा-सी बीमारी बर्दाश्त नहीं कर सकता।

अरुण यह जरा-सी बीमारी नहीं पियूष।

पियूष मतलब तुम कहना क्या चाहते हो

अरुण मेरे कहने से क्या होगा। अपने इस दोस्त के चेहरे पर उड़ती हवाइयों को देख इन्हें समझने की कोशिश कर फिर कह जरा-सी बीमारी।

पियूष इशान क्या यह ।

इशान झूठ बोलता है यह।

अरुण मैं झूठ बोलता हूँ । बता मैं झूठ बोलता हूँ?

इशान हाँ। कुछ नहीं हुआ है तुझे।

अरुण मेरी आँखों में आँखें डालकर देख कि मुझे कुछ नहीं हुआ है।

इशान हाँ, कुछ भी तो नहीं हुआ है तुझे।

अरुण तो फिर मैं ठीक क्यों नहीं होता? मेरा बुखार क्यों नहीं उतरता, क्यों मैं महीनों से इस बिस्तर पर पड़ा हूँ?

इशान होता है कभी-कभी

अरुण होता है मतलब

इशान मतलब मैं *(चुप हो जाता है।)*

इला क्या बात है भैया आप ?

इशान कुछ नहीं भाभी आप क्यों परेशान होती हैं। मैं हूँ ना आप चाय पिलाइये ना प्लीज ।

(इला कुछ देर रुकती है। कुछ समझ नहीं पाती। फिर बिना कुछ बोले वहाँ से चली जाती है)

अरुण तुम कुछ छिपा रहे हो इशान ।

इशान नहीं कुछ नहीं। तुम ठीक हो जाओगे यार ।

अरुण आखिर कब तक कब तक ठीक हो जाऊँगा मैं?

इशान अब इसका तो कोई जवाब नहीं है मेरे पास हाँ, हम कोशिश कर रहे हैं। चिन्ता मत कर, मैंने कुछ स्पेशलिस्ट से भी बात की है।

पियूष फिर ।

इशान बकते हैं यार मैं कहता हूँ ना, ठीक हो जाएगा यह।

(कुछ देर शान्ति इशान की आँखों में आसू आ जाते हैं अरुण उन्हें देखता है। इशान छिपाने की कोशिश करता है।)

अरुण क्या बात है इशान?

इशान *(सम्भलते हुए)* नहीं कुछ नहीं वह तुम्हें कुछ नहीं होगा मैं हूँ ना मैं तुम्हें वर्ल्ड के बड़े से बड़े डॉक्टर को दिखाऊँगा।

पियूष इसका मतलब कुछ सीरियस है?

इशान तुम लोग तो बात का बतगड़ बना देते हो यार।

अरुण इशान बता क्या बात है? तुझे मेरी कसम ।

इशान तुम लोग यार ।

पियूष हम लोग क्या बता ना क्या हुआ है अरुण को ?

इशान कुछ नहीं हुआ है इसे?

अरुण तुम झूठ बोल रहे हो इशान ।

इशान नहीं ।

अरुण बताओ इशान जिन्दगी में आज पहली बार मैंने तुम्हें इस हालत म रोता हुआ देखा है। क्या बात है ?

बता ना यार तुझे मेरी कसम।

इशान नहीं देख कहाँ रो रहा हूँ मैं, बता बता कहाँ है आँसू अरे यह तो वह आँख में कुछ गिर गया था।

अरुण गिर गया था। हम तीनों बचपन के दोस्त हैं। तीनों एक दूसरे की आदतें अच्छी तरह जानते हैं। फिर तू किससे क्या छिपाना चाहता है समझ में नहीं आता पर तू छिपा नहीं पा रहा है। बता ना क्या बात है? तुझे मेरी कसम ।

इशान अपनी कसम देकर मुझे मजबूर ना कर प्लीज।

पियूष मजबूरी, कैसी मजबूरी आखिर तुम साफ-साफ क्यों नहीं कहते?

इशान बात वात ये है कि अरुण को एड्स है और मैं *(चुप हो जाता है। सभी शान्त इला एड्स शब्द बोलने से पहले ही चाय लेकर आ चुकी थी परन्तु किसी का ध्यान उस पर नहीं गया था।)*

पियूष नहीं ।

अरुण एडस ?

इशान हाँ अरुण मेरे यार तुझे एडस है (रोता है) इसीलिए मैं तुझे । •

अरुण किस स्टेज पर ?

इशान लास्ट लास्ट स्टेज ।

अरुण तो अब ?

इशान हाँ पर भाभी को नहीं बताना नहीं तो उनके लिए ।

अरुण पर क्या उसे भी एडस हो सकता है ?

इशान हो सकती नहीं है ।

अरुण क्या ?

इशान हाँ अरुण भाभी को भी ।

पियूष उन्हें ?

इला मुझे किस स्टेज पर ?

इशान तो आपने ।

इला हाँ मैंने सब कुछ सुन लिया है आपने जवाब नहीं दिया।

पियूष हिम्मत रखिए भाभी ।

इला मैंने पूछा है मुझे किस स्टेज पर ?

इशान अभी कुछ नहीं कहा जा सकता।

इला और पिंकू ?

इशान भगवान की दया से वह ठीक है।

पियूष थैंकस गॉड।

इला थैंक्स किसलिए ? अब उसके ठीक होने या ना होने से क्या फायदा। अच्छा तो यही होता कि उसे भी ।

पियूष यह आप क्या कह रही हैं भाभी ।

इला ठीक ही तो कह रही हूँ हम दोनों के बाद उसका क्या होगा ? उसे कौन सम्भालेगा ?

इशान सॉरी भाभी मैं आपका दिल नहीं दुखाना चाहता था। पर क्या करूँ ?

इला सॉरी किसलिए आखिर एक दिन तो यह होना ही था। हमें इसका अन्जाम तो भुगतना ही था।

इशान आई एम रियली वैरी सॉरी। भाभी मैं ।

इला आपका क्या कसूर है आपने थोड़े ही यह बीमारी दी है इन्हें । यह तो इन्होंने अपने आप बुलाई है।

अरुण हा, मैंने अपने आप इस बीमारी को बुलाया है । मैंने ही मौत को अपने घर दावत दी है। मेरी वजह से ।

इशान अब पछताने से क्या फायदा? मैंने कितनी बार तुम्हें कहा था। पर तुम अपने पैसे और जवानी की मौज-मस्ती में किसी की सुनते ही कहाँ थे?

अरुण हा, तुम ठीक कहते हो जवानी के नशे में अधा हो गया था। अपनी जरा-सी गलती से मैंने पूरे परिवार को मौत की खाई में धकेल दिया है।

इशान मैं चलता हू भाभी हॉस्पीटल जाना है ।
आप लोग आराम कीजिए मैं शाम को फिर आऊगा। अच्छा टेक केयर ।

अरुण अब केयर क्या करनी है जब केयर करने का समय था तब तो । अब सब कुछ लुटने के बाद क्या कयर करना।

पियूष इस तरह हिम्मत हारने से क्या होगा अरुण? अभी तो तुम्हें बाबा और पिंकू को ।

इला यही तो मुश्किल है हम दोनों के बाद बाबा और पिंकू का क्या होगा?

अरुण बाबा हमेशा बीमार रहते हैं और पिंकू पिंकू तो बहुत छोटा है, उसका क्या होगा?

पियूष घबराओ नहीं कुछ नहीं होगा आप लोगों को ।

इला झूठी हिम्मत बधाने से क्या फायदा आप जानते हैं कि इस बीमारी का कोई इलाज नहीं है।

पियूष हा, लेकिन हिम्मत तो ।

इला हिम्मत हा मौत का इन्तजार करने की हिम्मत तो हममें होनी ही चाहिए ।

अरुण मेरा किया है यह सब कुछ मेरा मैं गुनाहगार हूँ।

पियूष अब इस तरह पछताने से क्या होगा?

अरुण हा, अब हो भी क्या सकता है? कितनी बार मुझे इशान ने समझाया था। पर मैं अपने आगे किसी को कुछ समझता ही नहीं था मेरी एक भूल ने कितनी जिन्दगियों को खत्म कर दिया। कितने लोगों को यह बीमारी दी होगी मैंने। मेरे किए की सजा तो मुझे मिलनी ही थी। और शायद मिल भी रही है। पर इतनी भयानक होगी यह सजा ऐसा तो मैंने सोचा भी नहीं था। पर प्रकृति का यह कैसा नियम है। मेरे गुनाहों की सजा मुझे ही मिलती तो कितना अच्छा होता। इला और पिंकू को क्यों? यह सजा सिर्फ मुझे ही मिलती तो मौत कितनी आसान हो जाती। इशान ठीक कहता था पियूष, जिन्दगी अनमोल है उसे सभालकर सहेज कर जीना चाहिए। पर मैं तो खेल ही खेल में सब कुछ गवा बैठा यार, सब कुछ ।

पियूष हिम्मत रखो अरुण ... हो सकता है भगवान को अब भी तुम पर तरस आ जाए।

अरुण तरस ... नहीं जब मैंने ही किसी पर तरस नहीं खाया तो भगवान मुझ पर क्यों तरस खाएगा ?

इला छोड़ो, अब इस तरह बातों को मन पर लेने से क्या फायदा। जो होना था सो हो चुका, अब हो ही क्या सकता है ?

अरुण हां ... अब हो भी क्या सकता है ? जो होना था वह तो हो चुका। बहुत जुल्म ढाए थे ना मैंने लोगों पर। उसी की सजा मिली है शायद। बहुत उम्मीदें बांधी थीं बाबा ने मुझसे, इसीलिए अपना सब कुछ दांव पर लगाकर उन्होंने मुझे बड़ा किया, क्या ये दिन देखने के लिए कि एक दिन इस बुढ़ापे और लाचारी की हालत में मैं उन्हें छोड़कर चला जाऊंगा। पता है ... पियूष ... पता है इला ... मैं जब पैदा हुआ था तो मेरी मां मर गई। बाबा उनसे बहुत प्यार करते थे। बाबा ने मुझ में ही मां की तस्वीर देखी। और मुझे मां बाप दोनों का प्यार देकर बड़ा किया। उन्होंने मुझे कभी महसूस ही नहीं होने दिया कि मां क्या होती है। उसकी कमी क्या होती है। बाबा ... बस हर समय यही ध्यान रखते थे कि मैं खुश रहूं, मुझे कभी किसी चीज की कमी महसूस ना हो। इसीलिए उन्होंने हमेशा मेरी अच्छी बुरी मांग को पूरा किया। और मैं बिगड़ता ही चला गया। मैंने उनके लाड़ प्यार का उल्टा ही अर्थ लिया। मैंने सोचा जैसे पूरी दुनिया मेरे ही लिए है। मैं मनमाने तरीके से उसे भोगता रहा। दुनिया की हर खूबसूरत लड़की को मैं भोग्या मानता रहा। और आज ... ? *(खांसने लगता है)* पर वह सब मेरा भ्रम था। क्षणिक सुख में मैंने अपना सब कुछ ... ।

इला शान्त हो जाओ ... अरुण ... देखो ... तुम्हारी तबियत खराब होती जा रही है।

अरुण सब कुछ स्वाहा कर दिया। और आज *(खांसता है)* अरे यह क्या हुआ ? यह अंधेरा कैसा। मेरा दम क्यों घुट रहा है ? मुझे सांस लेने में तकलीफ क्यों हो रही है ? इला ... पियूष ... देखो मुझे ... अरे कहां हो तुम ... देखो मुझे यह क्या हो रहा है ?

इला क्या ... क्या हुआ तुम्हें ... अरुण ... अरुण ... ?

पियूष अरुण क्या बात है ? क्या हुआ तुम्हें ... ?

इला भैया ... आप इशान भैया को फोन कीजिए ... कहिए जल्दी आएं ... । *(पियूष दौड़कर अन्दर जाता है)*

अरुण मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा। मेरा दम घुट रहा है। मुझे सांस लेने में तकलीफ हो रही है। देखो जमीन कांप रही है। आसमान गिरने वाला है। मेरा सिर फटा जा रहा है। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे कोई मेरी आंतें निकाल रहा है। देखो ... देखो ... वे औरतें जिनकी जिन्दगी मैंने खराब की थी ... मुझे चिढ़ा रही हैं। उनकी शक्लें चुड़ैलों की शक्ल में तब्दील हो रही हैं। बचाओ ... मुझे बचाओ ... वे मुझे खा जाएंगी।

इला अरुण सम्भालो अपने आपको देखो ।

अरुण अब मुझे ये नहीं छोड़ेंगी। अरे छोड़ दो मुझे छोड़ दो। मुझे अभी बहुत कुछ करना है। मुझे अभी अपने बाबा के सपनों को साकार करना है। उनकी बूढ़ी हड्डियों के आराम का इन्तजाम करना है। बहुत दु ख सहे हैं मेर बाबा ने। अब तो उन्हें आराम मिलना चाहिए। मुझे पिकू को बड़ा आदमी बनाना है। इला को एक अच्छा पति बनकर दिखाना है। उसे सुख देना है। इला मैं अब कभी तुम्हें दुखी नहीं करूगा। कभी नहीं ।

इला अरुण प्लीज अरुण एसा बातें मत करा। मुझे डर लगता है प्लीज ! सभालो अपने आपको। तुम हिम्मत हार गये तो हमारा क्या होगा ?

अरुण हाँ, हिम्मत रखनी होगी। मुझे अभी बहुत से काम करने हैं। देखो मुझे अभी मत मारो छोड़ दो मुझे। मेरे बाबा गाव में मेरा इ तजार कर रहे होंगे। अच्छा मैं एक बार उनसे मिल लूं। मैं एक बार अपने बेट पिकू को प्यार कर लूं। मैं मानता हू मैं तुम्हारा गुनाहगार हू। मैं पापी हूं। दरिन्दा हू, लेकिन तुम तो इतनी निष्ठुर मत बनो देखो मैं वायदा करता हूं। अब किसी को तग नहीं करूगा। किसी की जिन्दगी खराब नहीं करूगा। प्रोमिस। छोड़ दो मुझे छोड़ *(सास और फूलता है। इला घबरा कर पियूष को आवाज देती है)*

इला पियूष भैया पियूष भैया *(पियूष दौड़कर अन्दर आता है)* देखो इन्हें क्या हुआ यह सास नहीं ले पा रहे हैं।

पियूष आप हिम्मत रखें इशान अभी आता ही होगा।

अरुण मेरे बाबा और पिंकू का ध्यान रखना, हा मेरे बाबा और पिंकू *(शान्त)*

इला नहीं *(फूट-फूट कर रोती है, पियूष भी एक तरफ बैठा रोता रहता है।)*

(इशान दौड़ कर आता है। दोनों को रोता हुआ देखकर घबरा जाता है। पास जाता है, अरुण की नब्ज देखता है। स्टेथस्कोप से उसकी जाच करता है। पर कोई फायदा नहीं। निढाल सा एक ओर लुढ़क-सा जाता है। तथा आहिस्ता-आहिस्ता सुबकने लगता है। प्रकाश केन्द्रित होता है। पार्श्व में उदास-सा वाद्य सगीत बज रहा है। प्रकाश मन्द हो जाता है।)

दृश्य दो

(वही कमरा। समय का अन्तराल। इला सोफे पर बैठी पिकू का स्वेटर बुन रही है। बाबा पिकू के हवाई जहाज में चाबी भरकर दे रहे हैं। हवाई जहाज चल पडता है तो पिंकू उसके पीछे दौड़ता है। पिकू का हवाई जहाज बाहर चला जाता है और पिकू उसके पीछे-पीछे बाहर निकल जाता है। थोड़ी देर शान्ति रहती है। बाबा अतीत में खो जाते हैं और फिर बोलना शुरू करते हैं।)

बाबा इला!

इला जी बाबा।

बाबा तुमने कभी पिंकू को गौर से देखा है?

इला हां ... क्यों ... रोज ही तो देखती हूं।

बाबा वह बिल्कुल अरुण लगता है। बचपन में अरुण बिल्कुल ऐसा ही लगता था।

इला अच्छा ... ?

बाबा हां ...। *(अतीत में खोते हुए)* अरुण पैदा ही हुआ था तब उसकी मां और अब पिंकू का बाप ... कैसा सिलसिला है ... है ना ... ?

इला हां बाबा ... और कुछ समय बाद मां भी ... हमेशा के लिए चिरनिद्रा में सो जाएगी। फिर बचेंगे आप और पिंकू।

बाबा नहीं ऐसा नहीं कहते बेटी। सोने की उम्र तो हमारी है। पर किस्मत की बेरहमी देखो, जिन्हें सोना चाहिए वह तो सोते नहीं बल्कि जिन्हें जागना चाहिए वो सोते ही जा रहे हैं।

इला ऐसा नहीं कहते बाबा। आप थक गए होंगे। चलिए थोड़ा आराम कर लीजिए।

बाबा हां, आराम ही तो करना है-पर अतीत की सुनहरी यादें आराम भी तो नहीं करने देतीं और अब तो उसमें एक और पृष्ठ जुड़ गया है।

इला और एक जुड़ना बाकी है।

बाबा नहीं। अब और हिम्मत नहीं है अतीत को सहजने की।

इला क्यों बाबा ... ?

बाबा अब भविष्य का अंधेरा सब कुछ लील जाना चाहता है।

इला इस भविष्य को अब आप ही को संभालना है बाबा।

बाबा इसी भविष्य के लिए तो अब तक अपनी जिन्दगी की डोर को दोनों हाथों से पकड़ रखा था। परन्तु अब इन बूढ़ी हड्डियों में इतनी जान कहाँ कि उस डोर को मजबूती से पकड़ कर रख सके। भविष्य की डोर तो धीरे-धीरे मेरे हाथों से छूटती जा रही है।

इला ऐसा नहीं कहते बाबा अब आप ही तो पिंकू का एक मात्र सहारा हैं। आप ही टूट जाएंगे तो ...।

बाबा टूट तो चुका हूँ बेटी ... यह कंधे अब जवान अर्थियों का बोझ नहीं उठा पाएंगे। कब तक आखिर कब तक?

इला हां, बाबा कब तक ... और क्यूं? आप ठीक ही कहते हैं बाबा ... आप भी कब तक हमारी अर्थियों का बोझ उठाते रहेंगे। आप तो खुद अब अपने आपको भी नहीं सम्हाल पाते। बुढ़ापे और जवान बेटे की मौत ने आपको पहले ही तोड़ दिया

है। अब तो आपकी सासों का भी भरोसा नहीं। ऐसे में कैसे आप मेरे अबोध बच्चे को सम्हाल पाएंगे? पर आपके और मेरे अलावा अब दूसरा कोई है भी तो नहीं। और हम दोनों ही अपनी जिन्दगी का सफर पूरा करने जा रहे हैं। तो क्या इसकी जिन्दगी का सफर शुरू होने से पहले ही खत्म हो जाएगा? नहीं तो फिर कौन खिलाएगा। कौन पिलाएगा कौन नहलाएगा इसे? क्या सड़क पर आवारा बच्चों की भीड़ में खो जाएगा? नहीं ऐसा नहीं होने दूंगी मैं। मेरे बच्चे के साथ ऐसा नहीं होने दूंगा मैं । फिर फिर? मैं उसे अपने साथ ले जाऊंगी। मरने से पहले उसे भी । हां उसे भी (बाबा इस बात को सुनकर उद्वेलित हो जाते हैं। लगता है जैसे उन्हें दौरा पड़ता है परन्तु इला इस सबसे बेखबर) ताकि जमाने की जिल्लत का सामना नहीं करना पड़े। वह दर-दर की ठोकरें नहीं खाए। पर क्या ऐसा कर पाऊंगी मैं? क्या मेरी ममता अपने अबोध बच्चे का नाजुक गला घोंट पाएगी? नहीं नहीं मुझसे नहीं होगा। अरे जिसको मैंने जन्म दिया, उसी का गला मैं कैसे घोंट दूं? क्या एक मां अपने बच्चे का गला घोंट सकती है? नहीं मैं ऐसा नहीं कर सकती। मैं बाबा के सपनों को खत्म नहीं कर सकती। मैं बाबा को हिम्मत दिलाऊंगी। मैं उनसे कहूंगी की वे इसे सम्हाले और अपने सपनों को साकार करें। सुना बाबा आपने, अब आप ही को अपने सपने को साकार करना होगा। अब आपको ही पिंकू को बड़ा करना होगा। बाबा बाबा बाबा जवाब क्यों नहीं देते? बाबा (वह उन्हें हिलाती है बाबा एक और लुढ़ककर कर गिर जाते हैं।) बाबा नहीं नहीं बाबा आप मुझ से पहले नहीं जा सकते बाबा आपको तो पिंकू को बाबा *(रोती है) । (प्रकाश केन्द्रित होता है। इला रो रही है पिंकू हतप्रभ-सा देख रहा है। वह अपने हवाई जहाज को देखता है फिर इला को फिर स्वयं ही हवाई जहाज में चाबी भरता है। किर किर किर की आवाज के मध्य शोक संगीत उभरता है। प्रकाश धीरे-धीरे मन्द होता है।)*

सबके दाता राम

डॉ. रामचरण महेन्द्र

पात्र परिचय

1 मलूकदास
2 सेठ
3 सठाना
4 गाड़ीवान
5 प्रथम डाकू
6 दूसरा डाकू
7 तीसरा डाकू
8 चौथा डाकू

सबके दाता राम

(मंच को जंगल का रूप दिया गया है। ऊपर स्टेज पर साइक के पास एक घना पेड़ है। एक और पेड़ मंच के दाहिने कोने पर विंग के करीब है। मंच आलोकित होने से पूर्व नैपथ्य से सस्वर दोहा सुनाई देता है।

दोहा—अजगर करे ना चाकरी, पंछी करे ना काम
दास मलूका कह गये, सब के दाता राम।

दोहे के पश्चात् 'चल बड़ा आया राम का भगत', 'याद करते अपने राम को' आदि आवाजें उभरती हैं। धीरे-धीरे मंच आलोकित होता है। तीन चार डाकू हँसते हुये रस्सी से बंधे मलूकदास को लेकर प्रवेश करते हैं।)

पहला डाकू हाँ भाई भगत जी, आज हमको भी दर्शन करा दो अपने भगवान के।

दूसरा डाकू हाँ बाबा मलूकदास, पुकारो अपने भगवान को।

तीसरा डाकू तुम कहते हो ना कण कण में भगवान है। कहाँ है?

चौथा डाकू ठहरो भाई मैं इस ऊँची जगह पर चढ़कर और देख लेता हूँ। बाबा का भगवान मुझे दिखाई दे गया तो तुमको भी दर्शन करा दूंगा।

(चारों का अट्टहास)

पहला डाकू अरे हाँ बाबा, तुम्हारा भगवान है कैसा?

मलूकदास नास्तिक आँखों से तुम उसे कभी नहीं देख पाओगे भाई।

पहला डाकू (दूसरे डाकू से) अरे शैतान, ज़रा अपनी आँखें तो उधार देना मुझे। भगवान के दर्शन करने हैं।

(चारों का फिर अट्टहास)

दूसरा डाकू बाबा तेरा भगवान भी अजीब है जो सिर्फ तुझे ही दिखाई देता है।

तीसरा डाकू अरे बाबा अब तो दुनिया को धोखा देना छोड़। भगवान-वगवान कुछ नहीं होता। दुनिया में आया है तो खा-पी मौज कर।

चौथा डाकू कितनी बार तुझे समझाया पर तेरी समझ में नहीं आया।

पहला डाकू अब भी गाँव वालों का बहलाना छोड़ दे। यह मत सिखा कि भगवान के सिवा और किसी से मत डरो।

दूसरा डाकू यह सिखा कि सब हमसे डरो। हमसे बढ़कर और कोई ताकत नहीं है।

मलूकदास नहीं भाई। सबसे बड़ी शक्ति तो ईश्वर है। वही संसार का मालिक है। तुम, मैं संसार का हर प्राणी उसी की शक्ति पर निर्भर हैं।

तीसरा डाकू   मगर हम तेरे भगवान की शक्ति पर नहीं अपनी शक्ति पर निर्भर हैं। बुला अपने भगवान को ताकि वह भी हमारी शक्ति देख ले।

मलूकदास   पाप सदा मनुष्य को भ्रमित करते हैं। तुम भी भ्रमित हो गये हो। अपने दम्भ और अभिमान से पागल हो गये हो।

दूसरा डाकू   पागल तो तू हो गया है जो पहाड़ों और बियाबान जंगलों में भटकता रहता है। आज हमारी पकड़ में आया है।

पहला डाकू   आज हम तुझे आसानी से नहीं छोड़ने वाले बाबा। शैतान जरा इसके हाथ पाँव और कसकर बाँध दे। ताकि यह हमारी भी ताकत को जान सके।

मलूकदास   मुझ तो जीवन में केवल आत्म तत्व को जानना है। भाई तुम भी उसे जानलो वरना तुम्हारा सर्वनाश निश्चित है।

दूसरा डाकू   सर्वनाश होगा तेरा और तेरे भगवान का। हमारा नहीं।

चौथा डाकू   उसका क्या नाश होगा जो कहीं है ही नहीं। नाश तो अब हम इसका करते हैं। कस दो रस्सियाँ।

(अपनी तलवार एक ओर रखकर तीसरा डाकू रस्सियाँ कसता है।)

मलूकदास   *(कराहते हुए)* हे राम।

पहला डाकू   फिर राम! मरने जा रहा है मगर फिर भी राम को नहीं भूलता।

दूसरा डाकू   बाँध दो इस दुष्ट का मुँह। ताकि आवाज नहीं निकले।

(तीसरा डाकू मलूकदास के मुँह पर पट्टा बाँधता है।)

तीसरा डाकू   सरदार यह तो मानने का नहीं। पहुँचा दो इसको इसके राम के पास।

पहला डाकू   नहीं इतनी जल्दी नहीं। अभी इसको थोड़ा तड़पने दो। बाँध दो इसको उस पेड़ से।

(तीसरा डाकू मलूकदास के सामने ऊपर—स्टेज पर पेड़ से बाँधता है।)

पहला डाकू   बँधा रहने दो इस जंगल में भूखा प्यासा।

दूसरा डाकू   सूखने दो इसे यहाँ। ताकि इसको पता तो चले कि विरोध करने की सजा क्या होती है।

तीसरा डाकू   यह झाड़ियाँ-टहनियाँ इसके सामने और रख देते। ताकि यह किसी को दिखाई नहीं दे।

पहला डाकू   लो भगत जी अब यहाँ खड़े खड़े सूखते रहना। अब या तो जंगली जानवर तुम्हें खा जायेंगे या तुम गिद्ध भोज बन जाओगे।

(चारों का अट्टहास)

चौथा डाकू   हाँ अब बुला लेना अपने राम को। भगवान को। शायद तुम्हें बचाने आ जाये।

दूसरा डाकू — भगवान आये चाहे ना आये। मगर जंगली जानवर जरूर आ जायेगा। तुम किस जानवर के भोजन बनते हो यह हम फिर आकर देखेंगे। *(चारों हँसते हैं।)*

पहला डाकू — चलो यह काँटा भी निकल गया।

दूसरा डाकू — अब चलें सरदार। अपने खाने पीने का कहीं जुगाड़ बिठायें। बहुत भूख लगी है।

तीसरा डाकू — हाँ सरदार।

पहला डाकू — हाँ चलो। अच्छा भगत जी हमारा कहा-सुना माफ करना। तुम्हारा भगवान तुम्हें कहीं मिले तो हमारा भी प्रणाम कहना।

(चारों डाकू अट्टहास करते हुए चले जाते हैं। तीसरे डाकू की तलवार वहीं पर पड़ी रह जाती है। प्रकाश अब केवल मलूकदास पर केन्द्रित हो जाता है। मलूकदास प्रार्थना की मुद्रा में आकाश की ओर देखता है। नैपथ्य से मलूकदास की आवाज आती है।)

गूँजती हुई मलूकदास की आवाज — देख रहे हो ना मेरे राम। इन दुष्टों ने मेरी क्या गत बनादी है। मेरा कसूर मात्र इतना है कि आप में मेरा अगाध श्रद्धा है। किन्तु मैं यह सब आपको क्यों कह रहा हूँ? आप तो अन्तर्यामी हैं। सर्वत्र व्याप्त हैं। आपके आलोक से ही चाँद और सूरज प्रकाश पाते हैं। तारागण चमकते हैं। आप से कुछ भी तो छुपा हुआ नहीं है। सब जीवों पर आपकी कृपा है। चींटी को कण और हाथी को मण की व्यवस्था आप ही तो करते हैं। उन पापियों को विश्वास है कि मैं भूखा प्यासा इस गहन जंगल में दम तोड़ दूँगा। किन्तु मुझे विश्वास है कि आप यहाँ भी मेरी रक्षा अवश्य करेंगे। जब सब के दाता राम हैं तो फिर मैं चिन्ता क्यों करूँ? क्यों ना मैं केवल आपके नाम का ही स्मरण करूँ। राम राम राम राम

('राम-राम की ध्वनि-गूँजती रहती है। इसके साथ ही प्रकाश लोप होता है। बैलगाड़ी के चलने की ध्वनि कुछ क्षणों तक सुनाई देती है। तत्पश्चात् सेठ की आवाज सुनाई देती है— बस-बस यहीं रोक दें।' मंच पुन आलोकित होता है। दाहिनी ओर से सेठ सेठानी प्रवेश करते हैं। उनके हाथ में एक बड़ा थैला है जिसमें बरतन व खाने का सामान है।)

सेठ — *(प्रवेश करते हुये)* आ जा सेठाणी आ जा आ जा। आहा, हा, हा! कितनी सुन्दर जगह है। अठे ही पेट पूजा करस्या। अठीने आ जा। ईं पेड़ के तले ही बैठकर भोजन करस्या।

(दाहिनी ओर विंग के करीब के पेड़ के नीचे बैठ जाते हैं। सेठाणी थैले में से खाने-पीने का सामान निकालती है।)

सेठ — निकाल-निकाल सेठाणी स्वादिष्ट भोजन। घणी-घणी भूख लाग रही है। खा-पी, फेर आगे चालस्या।

(गाड़ीवान प्रवेश करता है)

गाड़ीवान बढ़िया जगह ढूँढी सेठा। लाओ बरतन दओ। पानी भर कर ले आऊं।

सेठ पास ही झरनो है। थोड़ो नीचे उतरकर भरकर ले आ।

(सेठाणी बरतन देती है। गाड़ीवान पानी लेने चला जाता है।)

सेठ सेठाणी कितनी शान्ति है अठे। आप ही शान्ति शान्ति ओम शान्ति

सेठाणी अठे जगल में आकर भी कलमुँही शान्ति की रट ही लगा राखी है थे। के जादू कर दियो वा छिनलारी नार। छै टाबरिया का बाप हो। पचास के पार बोल गया हो। बुढ़ापा में तो गन्दी बात छोड़ो।

सेठ हो गई अशान्ति। ना घर में चैन ना जगल में। सेठाणी तेरा भागना में तो हमेशा गलत बात ही बैठी रहवे है। मैं नौकरानी री बात नहीं कर रह्यो हूँ। जगल में शान्ति की बात कह रह्यो हूँ। पेड़-पौधा परिन्दा-पानी पत्ता-हवा आँ की बात कह रह्यो हूँ।

सेठाणी तो सबन ऊँ कलमुँहा का नाम क्यों दे रह्या हो? मैं थाका चक्कर में आने वाली नहीं हूँ। खूब समझी हूँ। घर में भी एक ही रट लगा राखी ही कि सेठाणी शान्ति राख। मैं शान्ति ने राख ली। कलमुँही म्हारो घर ही चोपट कर रही है। अठे भी म्हारो पीछो नहीं छोड़ रही है।

सेठ हे प्रभो आनन्ददाता ज्ञान मेरी सेठाणी को भी दीजिये। अरे लाजवन्ती मैं कह

सेठाणी लाजवन्ती म्हारी छोटी बहिन री नाम है। थाँ की नीयत बीं पर भी ख़राब है।

सेठ हरे कृष्णा हरे कृष्णा

सेठाणी हे भगवान। के हो रह्यो है थाके। अब पड़ौस की कृष्णा बाई भी याद आगई। थोड़ी तो सरम करो। कृष्णा बाई कह रही ही कि ये बीने छुप-छुपकर देखो हो।

सेठ मैं आँख्याँ अर अकल को आंधो क्यूँ देख सकूँ हूँ के?

सेठाणी भगवान थाने चोखी-चोखी आँख्याँ दी है। थे आंधा किया हो?

सेठ आंधो नहीं हो तो थारी जिसी औरत से ब्याह करतो के? आँख्याँ होती तो कोई सुन्दर औरत नहीं देखतो?

सेठ ख़ैर छोड़ सब बात। तू तो भोजन परोस। घणी भूख लाग रही है।

(सेठाणी थाली-कटोरियाँ निकाल कर भोजन परोसती है।)

सेठाणी लो जीमो।

(सेठ खाने के लिये ज्यों ही आगे बढ़ता है तभी उसका गाड़ीवान दौड़ता हुआ आता है।)

गाड़ीवान सेठ जी सेठ जी भागो डाकू आ रह्या है।

सेठ डाकू?

गाड़ीवान हाँ। मैं ज्योंही पानी भरने ताईं नीचे गयो मैं देख्या कि तीन-चार डाकू अठीने ही आ रह्या है।

सेठाणी हे राम! मैं तो गहणा भी पहन राख्या है। सेठा भागो नहीं तो लुट जास्या।

(सेठ-सेठाणी गाड़ीवान भाग जाते हैं। खाना वैसे ही पड़ा रह जाता है। कुछ ही क्षणों बाद चारों डाकू प्रवेश करते हैं।)

पहला डाकू देख सामने वो रक्खा तलवार। नालायक। इस तरह कोई अपनी तलवार जंगल में भूलता है?

दूसरा डाकू अच्छा हुआ हम ज्यादा दूर नहीं गये और वापस आ गये। वरना तलवार का मिलना मुश्किल था।

तीसरा डाकू अब आगे ऐसी गलती नहीं होगी सरदार।

(तलवार उठाकर कमर से बाँधता है। तभी उसकी नजर खाने पर पड़ती है।)

तीसरा डाकू सरदार सरदार लगता है, तलवार का भूल जाना अच्छा ही रहा।

पहला डाकू क्या मतलब?

तीसरा डाकू उधर देखिये पेड़ के नीचे।

पहला डाकू हैं? भोजन।

(चारों दौड़कर आते हैं।)

पहला डाकू वाह वाह क्या महक आ रही है?

दूसरा डाकू हाँ सरदार स्वादिष्ट भोजन है। है भी खूब।

तीसरा डाकू हम भोजन की तलाश में कहाँ भटक रहे थे। भोजन तो यहाँ रक्खा था। सरदार बहुत भूख लगी है। शुरू हो जायें।

पहला डाकू हाँ, शुरू हो जाओ।

चौथा डाकू ठहरो सरदार। भोजन मत खाना।

पहला डाकू क्यों?

चौथा डाकू जरा सोचो सरदार। इस घने जंगल में यह भोजन कहाँ से आया?

दूसरा डाकू कहीं से भी आया हो। इससे हमको क्या?

चौथा डाकू समझने की कोशिश करो। जंगल में इस तरह भोजन को कौन सजाकर जायेगा?

पहला डाकू तुम कहना क्या चाहते हो?

चौथा डाकू यही कि कहीं हमको पकड़ने के लिये यह जाल तो नहीं फैलाया गया है?

(पहला डाकू उठकर सोचता है।)

पहला डाकू हाँ। बात सोचने की है।

दूसरा डाकू मगर सरदार किसा ने अगर जाल भी फैलाया है तो हम जल्दी-जल्दी खाकर या इस खाने को साथ ले जाकर दूर भाग सकते हैं।

चौथा डाकू इस खाने को तो छूना भी नहीं है। खाना तो दूर।

दूसरा डाकू क्या मतलब ?

चौथा डाकू हो सकता है इस खाने में जहर मिला हो। और हमको मारने के लिये ही यह षडयन्त्र रचा गया हो।

पहला डाकू अब बात मेरी समझ में भी आ रही है। वरना इस तरह सजाकर खाना इस जगल में कौन रखता ?

चौथा डाकू हमें सावधानी बरतनी चाहिये सरदार।

दूसरा डाकू मगर ऐसा किया किसने ?

तीसरा डाकू सरदार हम मलूकदास का यही बाँधकर गये थे। कहीं यह उसकी बदमाशी तो नहीं ?

दूसरा डाकू मगर हमने तो उसको बाँध दिया था।

पहला डाकू हो सकता है हमारे जाने के बाद यहां कोई आया हो। उसने मलूकदास को देखा हो और फिर बदला लेने के लिये उन्होंने यह जहरीला भोजन सजाकर रख दिया हो।

चौथा डाकू बिल्कुल यही बात है सरदार।

पहला डाकू हूं! हमने कहां बाँधा था मलूकदास को ?

तीसरा डाकू वहां उस पेड़ से।

पहला डाकू देखो वह अभी तक बँधा है या नहीं ?

(तीसरा डाकू पेड के पास जाकर देखता है।)

तीसरा डाकू मलूकदास तो वैसे ही बंधा है सरदार।

पहला डाकू इसका मतलब यह है कि मलूकदास के अलावा जरूर कोई दूसरा व्यक्ति यहाँ आया है।

चौथा डाकू हाँ सरदार। फिर मलूकदास और उस व्यक्ति में बातचीत हुई है।

पहला डाकू दोनों ने षडयन्त्र रचा है। हमको पकड़ने के लिये इस भोजन में जहर मिलाकर सजाकर यहाँ रख दिया गया है।

दूसरा डाकू मगर सरदार भोजन रखने वाले को कैसे पता चला होगा कि हम वापस इधर आयेंगे ?

चौथा डाकू — जाते समय तुमने मलूकदास से कहा था ना कि हम फिर आकर देखेंगे।

पहला डाकू — हूँ। इसीलिये यह षडयन्त्र रचा गया है। अब मुझे पूरा विश्वास हो गया है कि यह जाल मलूकदास ने ही फैलाया है। शैतान, खोलकर इधर ला भगत जी को।

(दूसरा डाकू मलूकदास को खोलकर लाता है।)

मलूकदास — हे राम राम राम

पहला डाकू — मुँह में राम और बगल में छुरी रखते हो भगत जी?

मलूकदास — मैं समझा नहीं भाई। तुम क्या कहना चाहते हो?

चौथा डाकू — इतने भोले मत बनो बाबा मलूकदास। हमको तुम्हारे षडयन्त्र का पता चल चुका है।

मलूकदास — षडयन्त्र? कैसा षडयन्त्र भाई?

पहला डाकू — देखा अब पोल खुल गइ है तो कैसा भोला बन रहा है? हमारे लिए जहर मिला भोजन रखवा दिया तुमने?

चौथा डाकू — तुमने सोचा होगा कि हम आयेंगे। भोजन खायेंगे और मर जायेंगे। क्यों?

मलूकदास — कौनसा भोजन भाई?

पहला डाकू — यह भोजन। मगर हम इतने बेवकूफ नहीं हैं। हमारी भूल थी कि हमने तुमको जिन्दा छोड़ दिया।

मलूकदास — अशुद्ध विचार, अशुद्ध धारणा को जन्म देते हैं भाई। अवश्य तुम्हें कोई गलतफहमी हो गई है।

पहला डाकू — गलत और सही का पता तो अभी लग जायेगा भगत जी। अब यह जहर मिला भोजन तुमको खाना पड़ेगा।

मलूकदास — मुझे भोजन खाना पड़ेगा?

चौथा डाकू — देखा। कैसे घबरा गया?

पहला डाकू — अब तो पूरा यकीन हो गया कि इस भोजन में जहर है। शैतान, बिठा दे मलूकदास को थाली के पास।

(तीसरा डाकू मलूकदास को थाली के पास बिठा देता है।)

चौथा डाकू — अब इसका तीर इसी का शिकार करेगा।

पहला डाकू — हाँ। खिला दो इसको भोजन। मगर लाड प्यार से। मनुहार करके। क्योंकि यह भोजन भगत जी का आखिरी भोजन होगा।

(चारों अट्टहास करते हैं।)

पहला डाकू — (प्यार से) लो मलूकदास भोजन करो

(चारों डाकू बड़ी मनुहार से मलूकदास को अपने हाथों से खाना खिलाते हैं। कुछ समय बाद 'पकड़ो पकड़ो' की आवाजें आती हैं।)

पहला डाकू यह शोर कैसा? *(चारों डाकू घबराकर इधर-उधर देखते हैं।)*

दूसरा डाकू लगता है सिपाही आ रहे हैं।

पहला डाकू उनके आने के पहले ही यहाँ से भाग निकलो। अच्छा भगत जी हम चलते हैं। आप मरने की तैयारी करो।

(अट्टहास करते हुये भाग जाते हैं।)

(मलूकदास उठकर स्टेज के मध्य आते हैं।)

मलूकदास हे राम देखलो तेरी महानता। इस बियाबान जगल तक में भी मुझ भूखे प्यासे को पेट भर स्वादिष्ट भोजन करा दिया। आज मैंने स्वय अनुभव कर लिया कि भक्त के लिये भगवान के सैकडों नेत्र और हजारों हाथ हैं। मेरे राम आप हर भक्त का खूब ध्यान रखते हो। हर स्थान पर उसकी रक्षा और सहायता करते हो। चींटी को कण और हाथी को मण आप हा देते हो। आज मेरी निष्ठा आप में और दृढ़ हो गई प्रभो। मैं आपको शत-शत नमन करता हूँ।

(मलूकदास प्रार्थना की मुद्रा मे सिर झुकाते हैं। नैपथ्य से स्वर गूँजता है

अजगर करे ना चाकरी
पछी करे ना काम
दास मलूका कह गये
सबके दाता राम।

(पर्दा गिरता है।)

क्माल है सावित्री

श्रीमती सुमन मेहरोत्रा

पात्र परिचय

1 सावित्री
2 यमराज
3 इन्द्र
4 मन्त्री
5 आदमी एक
6 आदमी दो

कमाल है सावित्री

स्टेज दो हिस्सों में बँटा हुआ है। एक हिस्से में एक बीस बाईस वर्ष की युवती घुटनों में मुँह छिपाये हुये सिसक रही है। स्टेज के दूसरे हिस्से में एक सिंहासन रखा है।

नैपथ्य में अट्टाहास गूंजता है। प्रकाश स्टेज के एक कोने पर पड़ता है। वहाँ यमराज खड़ा दिखायी देता है।

यमराज यह मैं कहाँ आ गया। इन मकानों के जंगल में मैं इस मकान को कहाँ तलाश करूं?

(स्टेज पर एक व्यक्ति आता है)

यमराज सुनना भाई। यह मकान किस तरफ होगा बता सकते हैं? *(आदमी उसकी तरफ देखता हुआ स्टेज के बाहर चला जाता है।)* अजीब देश है। कोई सुनता ही नहीं है।

(फिर दूसरा आदमी स्टेज पर आता है।)

यमराज भाई साहब! जरा यह पता बता दीजिये।

(आदमी कागज लेकर उसे उलट-पलट कर देखता है। कागज यमराज को वापस कर देता है।)

आदमी तुम्हारे पास बीड़ी है?

यमराज बीड़ी ?

आदमी नहीं है। दियासलाई है?

यमराज क्या ?

आदमी कुछ भी नहीं है। बड़े कंगाल हो। अच्छा यहाँ आओ। यहाँ बैठ कर सोचते हैं, यह मकान कहाँ हो सकता है।

यमराज यहाँ जमीन पर?

आदमी अरे बैठो भी।

(यमराज को घसीटकर जमीन पर बिठा लेता है। यमराज भौचक्का-सा देखता रहता है।)

आदमी तुम इस मकान का क्या करोगे?

यमराज तुम सत्यवान को जानते हो?

आदमी *(सिर नीचा किये हुये)* हाँ।

यमराज — वह आज पेड़ से गिर गया है।

आदमी — हाँ *(सिर हिलाता है)।*

यमराज — उसके सिर में चोट लगी है?

आदमी — *(उसी तरह बैठा है)* हाँ।

यमराज — मैं उसको लेने आया हूँ।

आदमी — *(सिर उठा कर)* तुम उसके भाई हो।

यमराज — *(खीज कर)* चुप! मैं उसके प्राण लेने आया हूँ। मैं यमराज हूँ।

आदमी — *(चीख निकलती है)* य म रा ज ।

(नैपथ्य में 'यमराज, यमराज' की आवाजें उठती हैं। स्टेज पर लोग चारों ओर से आते हैं और गोल गोल घूम कर स्टेज के बाहर चले जाते हैं। स्टेज के बीच मे यमराज अकेला खड़ा है।)

यमराज — देखा! लोग मुझसे कितना डरते हैं। सब भाग गये। पता नहीं सावित्री का मुझे देखकर क्या हाल होगा। रोयेगी, गिड़गिड़ायेगी। अपने पति के प्राणों की भीख मागेगी। पर उसका मकान है कौन-सा? कितनी घड़िया बीत गयीं उसका मकान नहीं मिल रहा है। किसी गलत घर मे घुस गया तो लेने के देने पड़ जायेंगे। इस मकान मे पीछे के दरवाजे से जाकर देखता हू कि यह किसका मकान है। *(यमराज धीरे-धीरे दबे पाँव पीछे के दरवाजे से अन्दर आता है।)*

(सावित्री उसे देखकर खड़ी होकर पूछती है।)

सावित्री — कौन हो तुम?

यमराज — यह सत्यवान का घर है?

सावित्री — है। है।

यमराज — तुम उसकी पत्नी सावित्री हो?

सावित्री — हाँ हूँ। पर तुम कौन हो?

यमराज — *(गहरी सास लेकर)* आहा! आखिर मिल ही गया। ठीक जगह पर पहुँच गया।

सावित्री — अरे आखिर हो कौन?

यमराज — मैं मृत्यु देवता यमराज हूँ। स्वर्ग से आया हूँ। सत्यवान के प्राण लेने आया हूँ।

सावित्री — तो पीछे के दरवाजे से क्यों आये? यह चोरों की तरह क्यों चल रहे हो?

यमराज — तुम जानती नहीं, मृत्यु सदैव दबे पाँव पीछे से आती है।

सावित्री — बड़े डरपोक हो। कायर हो।

यमराज — ए नारी! जुबान सभालकर बात करो। देवताओं से बात करने की तमीज सीखो। हम देवता हैं। हम क्यों डरेंगे?

सावित्री *(व्यग्य से)* हाँ तुम तो अजर, अमर, अविनाशी हो। जिसने जन्म लिया है वह मरेगा भी। तुम्हारा तो परमानन्ट डिपार्टमेन्ट है। फिर डरते क्यों हो। शरीफ लोगों की तरह दरवाजे से आओ।

(यमराज सावित्री की बातों से सकपका जाता है।)

यमराज ठीक है। अगर तुम हमें सहन कर सकती हो तो हम आगे से आ जाते हैं।

(यमराज का प्रस्थान। यमराज पुनः आकर उसके पास खड़ा हो जाता है। जब सावित्री उसकी ओर नहीं देखती है तो पैर पटकता है। सावित्री सिर उठाकर उसकी ओर देखता है और तमक कर खड़ी हो जाता है।)

सावित्री (क्रोध से) तुम?

यमराज *(अकड़ते हुए)* अब मैं आगे के दरवाजे से आया हूँ। हटो, सत्यवान के प्राण ले जाने दो।

सावित्री पर तुम बिना पूछे अन्दर कैसे आ गये? किसी के घर में ऐसे घुसा जाता है क्या? कुछ तो एटीकेटे सीखो।

यमराज *(मुह फाड़े सावित्री की ओर देखता है)* क्या सीखू?

सावित्री एटीकेटे। तुमने अन्दर आने के लिये कॉलबेल बजाई?

यमराज *(यमराज अभी भी हक्का-बक्का खड़ा रहता है)* क्या बजाई?

सावित्री अरे, कालबेल। इतनी-सी अंग्रेजी नहीं आती। तुम्हारे स्वर्ग में अंग्रेजी के बिना कैसे चलता है? जाओ पहले कॉलबेल बजाओ फिर अन्दर आना।

यमराज पर मैं तो अन्दर आ गया हूँ। फिर 'बजाओ' क्या?

सावित्री अरे बाबा घन्टी-घन्टी। घन्टी बजाओ पहले फिर कायदे से अन्दर आओ। अब जाओ बाहर। कॉलोनी के लोग तुम्हें मेरे घर में देखकर डर कर भाग जायेंगे तो इस दुःख में मेरी मदद कौन करेगा? *(रोती है।)*

यमराज *(दुखी स्वर में)* तुम्हारे घर में और कोई नहीं है?

सावित्री नहीं। हम दो ही हैं। हम गरीब लोगों हैं। मेरा पति एक लकड़हारा यानी खाती है। मैं तो अपने सास-ससुर को भी अपने पास रखना अफोर्ड नहीं कर सकती। वे बेचारे गाँव में पड़े हैं।

यमराज *(अफसोस से)* चच   चच। यह तो बहुत बुरी बात है। बुला लो, किसी प्रकार गुजारा कर लेना।

सावित्री *(तमक कर)* क्या खाक गुजारा कर लेना। मेरी तो किस्मत ही फूटी थी। मैंने तो यह सोचकर सत्यवान से शादी की थी कि यहाँ तो खाती भी महान बन जाते हैं। किसी दिन मेरा सत्यवान भी प्रधानमन्त्री बन जायेगा तो यह दलिद्दर दूर हो जायेंगे। पर यह तो मुझे मँझधार में ही छोड़कर जा रहा है। *(रोती है।)* हाय!!!

यमराज अब क्या हुआ ?

सावित्री तुम्हारा बातों में तो मैं भूल ही गयी कि लोग आते होंगे। निकलो। चलो चलो जल्दी करो। और देखो किसी को बताना नहीं कि तुम कौन हो।

यमराज *(स्वगत)* ये लो। इसने तो मेरा अस्तित्व ही खत्म कर दिया। पर इसके पति के प्राण ले जाने हैं तो इसकी बात माननी ही पड़ेगी।

सावित्री अरे तुम खड़ा खड़े हो ? जाओ बाहर और कायदे से अन्दर आओ।

यमराज अच्छा बाबा। अजीब हो। कभी रोती हो कभी *(यमराज का बाहर प्रस्थान)* *(घंटी बजती है)*

सावित्री कौन है ? हू इज देयर ? अन्दर आ जाओ *(यमराज को देखकर)* कौन हो तुम ?

यमराज *(आश्चर्य से)* अरे इतनी जल्दी भूल गयी। मैं यमराज हूँ यमराज। स्वर्ग से आया हूँ।

सावित्री यमराज हो। क्या प्रूफ है कि तुम यमराज हो ?

यमराज अब तुम्हें कैसे यकीन दिलाऊं।

सावित्री *(ऐंठकर खड़ी हो जाती है)* अपना आई-कार्ड दिखाओ। तब यकीन होगा।

यमराज क्या दिखाऊं ?

सावित्री तुम्हारे इन्द्र देवता ने तुम्हें एक छोटा-सा कार्ड नहीं दिया, जिसमें तुम्हारी तस्वीर लगी हो और लिखा हो कि तुम कौन हो ?

यमराज ऊँ हुं। वह तो नहीं दिया।

सावित्री तो जाओ पहले आई-कार्ड लेकर आओ फिर आना। नाऊ गेट लॉस्ट।

यमराज कमाल है। बड़ी अंग्रेजी बनी है। अंग्रेजी बोलकर मुझे नीचा दिखाती है।

सावित्री अब जाओ भी *(हाथ से दरवाजे की ओर इशारा करती है)।*

यमराज ओहो जा रहा हूँ। इसकी बातों से तो सत्यवान के मरने की घड़ी टलती जा रही है। सत्यवान के प्राण लेकर न गया तो कहीं मुझे अपने प्राणों से न हाथ धोना पड़े।

(प्रकाश स्टेज के दूसरे हिस्से पर पड़ता है। सिंहासन पर इन्द्र बैठे हैं। पहले हिस्से पर अंधेरा हो जाता है। पात्र स्थिर हो जाते हैं। यमराज महाराज को प्रणाम करके चुपचाप खड़ा हो जाता है।)

महाराज (व्यंग्य से) कहिये मृत्यु देवता ! आप खाली हाथ कैसे ?

यमराज महाराज ! मैं बहुत शर्मिन्दा हूँ।

महाराज ऐसा कौन-सा काम आपने कर दिया कि आप शर्मिन्दा हो रहे हैं।

यमराज वह सावित्री वह सावित्री है न। वह मुझसे अंग्रेजी में जाने क्या-क्या कहती है। इसके अंग्रेजी बोलने से मेरा आत्मविश्वास कमजोर पड़ जाता है। ऐसा लगता है जैसे मैं किसी बहन जी के स्कूल में पढ़ा हूँ।

महाराज अच्छा तो वह तुमसे अंग्रेजी में बात करती है! क्या कहा उसने तुमसे? जरा हम भी तो सुने।

यमराज वह कहती है तुम्हारे महाराज ने तुम्हें वह छोटी-सी किताब नहीं दी जिसमें मेरा चित्र और नाम लिखा हो वो आई।

महाराज *(बीच में टोककर)* आई-कार्ड। *(यमराज के कंधे पर हाथ रखकर)* बात तो वह ठीक ही कहता है। आजकल की दुनिया में जब लोग अपनों को ही नहीं पहचानते तो तुम्हें कैसे पहचानेंगे? लड़की होशियार मालूम देती है। भई कमाल है सावित्री।

यमराज हाँ महाराज बड़ी चालाक औरत है। उससे पार पाना बड़ा मुश्किल हो रहा है।

महाराज *(टहलते हुये)* आप चिन्ता न करें, अभी आपका आई-कार्ड बनवा देते हैं। *(ताली बजाकर)* कोई है? *(एक मंत्री स्टेज पर आता है)* मंत्रीजी, कम्प्यूटर पर यमराज का आई कार्ड बनवा दीजिये। अभी इसी समय। और कामों की तरह इसमें देर नहीं लगनी चाहिये। कुइक फास्ट। *(यमराज से)* वह अब भी नहीं मानती है तो हम सत्यवान पर मुकदमा चला देंगे।

यमराज यह कैसे होगा महाराज? वह तो मर चुका है।

महाराज वह जीवित था तो उसने पर्यावरण के नियमों का उल्लघन किया था। एक हरे-भरे पेड़ को काट कर अराजकता फैलाने वाला असामाजिक कार्य किया था। पेड़ों की ठंडी छाव में गरीब लोग गुड़ चना खाकर आराम करते हैं। सत्यवान ने पेड़ काटकर गरीबों को भड़काने का कार्य किया है। सत्यवान अगर मर गया है तो उसकी पत्नी को इसकी सजा भुगतनी पड़ेगी।

यमराज यह तो बहुत अच्छा होगा महाराज। सावित्री अगर जेल चली जायेगी तो मेरे सारे सकट दूर हो जायेंगे।

महाराज आप तो आई कार्ड ले कर जाइये। सत्यवान के आज्ञा लेकर ही आइयेगा।

(प्रकाश फिर सावित्री वाले हिस्से पर पड़ता है। दूसरे हिस्से पर अधकार। पात्र स्थिर हो जाते हैं। सावित्री के पास आई कार्ड पटक कर।)

यमराज यह लो।

(सावित्री कार्ड को उलट-पलट कर देखती है)

सावित्री तुमको किसने भेजा है?

यमराज हमारे महाराज ने! क्यों?

सावित्री क्यों भेजा है?

यमराज अरे!! सारे रसगुल्ले खा गयी !

सावित्री *(हाथ फैलाकर)* होल्ड आन। होल्ड आन। आपको शर्म आनी चाहिये ऐसी बात कहने में। मेरा पति मृत्यु शैय्या पर पड़ा है और आप कह रहे हैं कि मैं रसगुल्ले

रहा रही हूँ। एक पतिव्रता नारी पर ऐसा लाछन लगाने की आपकी हिम्मत कैसे हुई ?

यमराज देवी जी ! मैं क्षमा चाहता हूँ पर मैं तो एक कहावत कह रहा था कि सारे रसगुल्ले खा गयी अब पूछ रही हो कि रसगुल्ले में चीनी थी या नमक।

सावित्री *(गम्भीरता से)* यह शोक का घर है। अनुचित मत बोलिये। *(घूमकर)* और हाँ जितना मैं पूछती हूँ उतना ही बोलिये। बताइये आपको यहाँ क्यों भेजा गया है ?

यमराज ओफो ! हद हो गयी। कितनी बार बताऊँ ? सत्यवान के प्राण लेने। और देखो देवीजी बहुत हो गया। अब तुम सीधी तरह नहीं मानोगी तो हमारे महाराज ने कहा है कि हम एक असामाजिक कार्य करने का मुकदमा तुम्हारे ऊपर चला कर तुम्हें जेल भिजवा देंगे।

सावित्री अच्छा ! कौन-सा असामाजिक कार्य। मैं भी तो सुनूँ।

यमराज एक हरा-भरा पेड़ काटने का जुर्म। बड़ा सगीन जुर्म है।

सावित्री पेड़ मैंने नहीं काटा। सत्यवान ने काटा था।

यमराज सत्यवान के स्थान पर तुम्हें यह सजा भुगतनी पड़ेगी।

सावित्री यह तुम्हारे स्वर्ग का कानून होगा। हमारे यहा तो स्त्री को देवी शक्ति, दुर्गा, लक्ष्मी मानकर पूजा की जाती है। हमारे देश में तो उसे फूल की छड़ी से भी नहीं छुआ जाता है *(दर्शकों की ओर देखकर)* मैं ठीक कह रही हूँ न । जेल तो बहुत दूर की चीज है।

यमराज तो क्या मैं सत्यवान की लाश को ले जाऊ ?

सावित्री *(तमक कर)* वेट वेट वेट। परमिशन लेटर दिखाओ।

यमराज *(सिर पकड़कर बैठ जाता है)* अब यह कौन-सा नया जमूरा है ? भगवान मैं किस मुसीबत में फस गया। कोई तो बचाओ मुझे इस औरत से। देवी जी यह है क्या ?

सावित्री मुझे परेशान मत करो। एक तो यूँ ही आफिस में सारा दिन काम करते करते थक गयी। जाओ अपने महाराज से पूछो जाकर। कैसे कैसे अनपढ़ और नासमझ बसते हैं स्वर्ग में। मैंने तो सुना था देवता बड़े इन्टेलीजेन्ट होते हैं। ऊँह देख लिये नमूने। जाओ परमीशन लेटर लेकर आओ।

प्रकाश फिर इन्द्र वाले हिस्से पर पडता है। यमराज इन्द्र के पैरों पर लोट रहा है।

यमराज अब मैं नहीं जाऊगा। कभी नहीं जाऊँगा। आप मुझे कन्दराओं में भेज दीजिये मृत्यु दड दे दीजिये, पेड़ पर लटका दीजिये हवाला का मुकदमा चलाकर फाँसी दे दीजिये टिम्मक टूँ भेज दीजिये गुमरी तलैया भेज दीजिये। उस सावित्री के

पास मत भेजिये। आप मेरे प्राण ले लीजिये पर सत्यवान के प्राण लेने मत भेजिये। *(रोता है।)*

महाराज *(यमराज को उठाते हुये)* उठो यमराज, भयभीत न हो। लो यह चूड़ियां और लहगा-लुगडी पहन लो।

यमराज *(हाथ जोड़कर)* महाराज ?

महाराज पुरुष हो और एक नारी से भय खा रहे हो। हम पुरुष हैं नारियों से डरना हमारे पुरुषोचित व्यवहार के विपरीत है।

यमराज पर महाराज वह अब इक्कीसवीं सदी की नारी है। वह बेलनवाली नहीं अब बन्दूक वाली है। उसने सारे पुराने नियम कायदे उखाड़ कर फेंक दिये हैं। वह तो शास्त्रों को भी चुनौती दे रही है। मृत्यु लोक में लोग उससे डर रह हैं। जगलों में छिप रहे हैं। आप भी डरिये महाराज।

महाराज यमराज! हम आपका सम्मान करते हैं पर आप अपनी मर्यादा न भूलें। हम तीनों लोकों में किसी से नहीं डरते। पृथ्वी पर पुरुष यदि स्त्री से डर रहे हैं तो हम उसका प्रबन्ध कर देंगे। उनको शिक्षा देने के लिये हम कोचिग स्कूल खोल देंगे।

यमराज *(धीरे से एक कागज आगे बढ़ाता है)* उसने यह लिखकर दिया है।

महाराज *(गम्भीरता से)* तो बात बढ़ती जा रही है। यह अदना सी सावित्री हमारे अधिकारों को ललकार रहा है। *(हाथ पर घूसा मारते हुए)* हम हार मानने वाले नहीं हैं। जो कुछ वह माग रही है हम सब पूरा करेंगे। देखें वह कब तक नहीं मानती है।

यमराज अब वह क्या चाहती है ?

महाराज *(थोड़ी देर सोचने के बाद)* परमिशन लेटर। सत्यवान के प्राण लेने का परमिट। उसकी फरमाईशें पूरी करने मे तो सत्यवान के मरने का समय निकलता जा रहा है। हम देवता हैं, एक नारी के चक्कर में फँसते जा रहे हैं। ठहरिये! हम अभी परमाशन लेटर देते हैं।

(इन्द्र एक कागज पर दस्तखत करके यमराज को देता है।)

महाराज यह लीजिये। अब खाली हाथ मत लौटियेगा। यमराजजी वह औरत है उससे मीठी-मीठी बातें करके प्रेम से व्यवहार करिये।

यमराज जो आज्ञा।

(स्टेज के इस भाग पर अँधेरा हो जाता है। पात्र स्थिर हो जाते हैं। प्रकाश सावित्री पर पडता है। कॉलबेल बजती है)

सावित्री *(दरवाजा खोलकर यमराज को देखकर अति प्रसन्न होती है)* ओहो आप हैं। आइये! आइये।

यमराज (कागज दिखाकर) यह लो।

सावित्री आप अन्दर तो आइये। पहले आप विराजिये। (यमराज के आगे कुर्सी रखता है। यमराज अकड़ कर बैठ जाता है।) आप बहुत थक गये होंगे। आपके लिये जल लाती हूँ। आप ठंडा लेंगे या ? आप आराम करें अभी आती हूँ।

(सावित्री स्टेज के बाहर चली जाती है)

यमराज (टहलते हुये) इसको क्या हो गया है? मैं इससे क्या प्रेम से व्यवहार करूँ यह तो स्वयं ही प्रेमपूर्वक बोल रहा है। कमाल है इसका सारा क्रोध वह अकड़, वह शान सब कहां गयी? (सावित्री एक ट्रे में कोकाकोला और गुलाबजामुन लेकर आती है)

सावित्री यह लीजिये देव, यह गुलाबजामुन खाइये। यह मैंने अपने हाथों से आपके लिये बनाये हैं।

यमराज तुमने मेरे लिये बनाये हैं। तो तुम्हें मालूम था कि मैं आऊंगा। तुम मेरा इन्तजार कर रही थी।

सावित्री (प्रसन्न होकर) हां देव मुझे पूर्ण विश्वास था कि आप आयेंगे।

यमराज (गुलाबजामुन खाते हुये) धन्य हो, धन्य हो। क्या स्वादिष्ट बने हैं।

सावित्री (शर्मा कर) देव! मैं तो एक तुच्छ नारी हूँ। यह तो आपका बड़प्पन है कि आप मेरी इतनी प्रशंसा कर रहे हैं।

यमराज नहीं तुम हो ही अच्छी। (स्वगत) महाराज ने कहा था प्रेमपूर्वक बातें करना। हमारे महाराज भी तुम्हारी तारीफ कर रहे थे।

सावित्री (प्रसन्नता दर्शाते हुये) अच्छा! क्या कह रहे थे?

यमराज यही कि तुम बहुत बुद्धिमान हो। तुम गुणवती भी हो।

सावित्री (स्वगत) यह तो मैं हूँ ही। (प्रकट) तो यमराज जी गुलाबजामुन अच्छे बने हैं इसे प्रूफ करने के लिये

यमराज देखो। देखो। तुम यह अंग्रेजी मत बोलो। मैं सब भूल जाता हूँ।

सावित्री (हाथ जोड़कर) क्षमा चाहती हूँ। यह अच्छे बने हैं इसको प्रमाणित करने के लिये एक और लीजिये।

यमराज (हाथ से मना करते हुए) नहीं। नहीं। अब नहीं। हम अति प्रसन्न हुये। वर मांगो। क्या वरदान चाहिये?

सावित्री (चापलूसी से) नहीं देव। आप हमारे घर आये यही हमारी खुशकिस्मती है। हमें कुछ नहीं चाहिये।

यमराज (स्वगत) अरे यह तो बिल्कुल बदल गया। यह सावित्री ही है या कोई और? (प्रकट) नहीं आज हम वरदान देकर ही जायेंगे।

सावित्री *(विनम्रता से)* अगर आप इतनी ही जिद कर रहे हैं तो मुझ गरीब के कोई पुत्र नहीं है। आप मुझे

यमराज तथास्तु। पुत्रवती भव।

सावित्री *(स्वगत)* आहा! मार लिया पापड़ वाले को। *(प्रकट)* पर देव से। पुत्रों का वरदान न दें। वह इतिहास की बात हो गयी। एक ही पुत्र बहुत है।

यमराज तथास्तु *(उठते हुये)* अब चलूँगा।

सावित्री कहाँ जायेंगे आप?

यमराज फिर वही प्रश्न। कितनी बार बताऊँ। सत्यवान के प्राण

सावित्री *(अकड़कर)* अब तो यह सम्भव नहीं है।

यमराज *(क्रोध से)* क्यों सम्भव नहीं है?

सावित्री भूल गये आप। अभी तो आपने मुझे पुत्रवती होने का वरदान दिया और अब आप मेरे पति को ले जाना चाहते हैं।

यमराज ओहो यह मैंने क्या किया। *(सिर के बाल नोंचता है)* चालाक नारी तूने मुझे अपनी बातों के जाल में फँसाकर धोखा दिया।

सावित्री *(हसती है)* समझ में आया। अब कभी लड़कियों के चक्कर में मत पड़ियेगा। अभी तो एक शाक और लगेगा।

यमराज *(हक्का-बक्का)* देखो-देखो तुम फिर अंग्रेजी बोलने लगी मैं अपना वरदान वापस ले लूंगा। सिर्फ मुह से ही तो कहा है? लिखकर थोड़ी न दिया है। मैं उसके प्राण लेकर ही जाऊगा। *(सावित्री बैठकर रोने लगती है)*

यमराज *(घबराकर)* अरे तुम रो क्यों रही हो?

सावित्री क्या करूं? जब से आये हैं डांटे ही चले जा रहे हैं। एक तो मुझे डाक्टरों ने दुखी कर दिया है और आपकी डांटें। रोऊं न तो क्या करूं? *(फिर रोती है)*

यमराज डाक्टरों ने क्या कर दिया?

सावित्री सत्यवान का ब्रेन बदल दिया और उसमें एक कम्प्यूटर लगा दिया। कहते हैं कि अब वह बहुत विद्वान हो जायेगा। *(रोती है यमराज भी रोने लगते हैं)* अरे आप क्यों रो रहे है?

यमराज तुम रो रही हो इसलिये। पर सत्यवान के विद्वान होने पर तो तुम्हें प्रसन्न होना चाहिये। इसमें रोने की क्या बात है।

सावित्री अब आप ही बताइये। विद्वान होकर वह क्या बन पायगा। मुझे तो उसे प्रधानमंत्री बनाना है। उसके लिये विद्वान होना जरूरी थोड़ी न है। अब मेरे अरमानों का क्या होगा?

यमराज बात तो तुम ठीक कहती हो। अच्छा यह बताओ वह क्या कहते हैं ब्रेन ब्रेन वह किसका लगाया है।

सावित्री (ताली बजाकर) यह हुई न बात। आपने भी अँग्रेजी सीख ही ली। डाक्टर कह रहे थे किसी देवता का लगाया है।

यमराज देवता का! पर देवता तो कभी मृत्यु को प्राप्त होते ही नहीं।

सावित्री जिन्दा का ही निकाल लिया।

यमराज (आश्चर्य से) जिन्दा का !!!!

सावित्री हाँ! उसकी जगह देवता के किसी जानवर का ब्रेन लगा दिया। जानवरों का सिर लगाने का तो आपके स्वर्ग में बड़ा पुराना प्रचलन है। (हाथ जोड़कर) आप आप जाइये यहाँ से। अपने महाराज से कहकर किसी और डिपार्टमैन्ट में ट्रान्सफर करा लीजिये। यहाँ तो अब आँख कान, नाक, दिल, दिमाग, यहाँ तक कि सिर के बाल भी नये लग जाते हैं। जरा-सी चोट लगी नहीं आप धमके प्राण लेने। इस वैज्ञानिक युग में अब ऐसा नहीं चलेगा।

यमराज अगर मैं सत्यवान के प्राण लेकर न गया तो मेरी नौकरी चली जायेगी। बेमौत मारा जाऊँगा।

सावित्री अब तो मैं आपके चंगुल से उसे छुड़ा लायी हूँ।

यमदूत तो मैं उसकी उम्र पूरी होने तक इन्तजार करूँगा। यहीं बैठा रहूँगा।

सावित्री यह नहीं हो सकता है। मैं एक पतिव्रता नारी हूँ। अगर एक बार उसके प्राणों की रक्षा कर सकती हूँ तो हर बार कर सकती हूँ। अब तो मैं एक्सपर्ट हो गयी हूँ। चलो उठाओ अपना डंडा डोरा और नौ दो ग्यारह हो यहाँ से।

यमराज तो यह कोकाकोला पिलाना, गुलाबजामुन खिलाना, मेरे ऊपर पंखा झलना इतना प्रेम दर्शाना यह सब तुम्हारा नाटक था।

सावित्री लो और सुनो। इनको यही नहीं मालूम। (दर्शकों की ओर देखकर) देखा दर्शकों, यह इतनी देर से नाटक नहीं चल रहा था तो और क्या था? आप नाटक ही तो देख रहे थे। (यमराज सिर पकड़कर बैठ जाते हैं।)

(संगीत उभरता है। पात्र स्थिर हो जाते हैं। प्रकाश धीरे-धीरे लुप्त होता है।)

छायान्त

मदन शर्मा

पात्र परिचय

1. स्त्री
2. पुरुष
3. प्रकृति
4. बालक
5. वृक्ष
6. माता
7. पिता
8. युवक

(कुछ अन्य कलाकार)

छायान्त

(नाटय-निर्देशक अपनी कल्पना व सुविधानुसार मच को रूप दे सकता है। किन्तु साइक' का एक भाग स्पष्ट रूप से दिखाई देना चाहिये, ताकि वृक्ष व अन्य छाया उस पर उभर सके। मच आलोकित होने से पूर्व ओम्' की ध्वनि उभरती है। कुछ क्षणों पश्चात् साइक' पर प्रार्थना करती एक छाया उभरती है।)

छाया *(कुछ गूजता स्वर)* हमें रहने का उत्तम पृथ्वी दो।

(अदृश्य सामूहिक स्वर)

सामूहिक स्वर हमें रहने का उत्तम पृथ्वी दो।

छाया उत्तम दिशा दो।

सामूहिक स्वर उत्तम दिशा दो।

छाया उत्तम जलवायु दो।

सामूहिक स्वर उत्तम जलवायु दो।

(सवाद दोहराये जाते हैं। ओम् की ध्वनि निरन्तर चलती रहती है। मच पर हल्का प्रकाश फैलता है। पुरुष एव नारी पात्र नृत्य-मुद्रा में प्रवेश करते हैं।)

पुरुष गूजा शब्द ब्रह्माण्ड में।

स्त्री विलीन हुआ अन्तरिक्ष में।

पुरुष और प्रस्फुटित हुआ पृथ्वी के गर्भ से।

(राग बसन्त में सरगम की ध्वनि उभरती है। मच और आलोकित होता है।)

स्त्री जीवन जागा।

पुरुष खिली कोंपलें।

स्त्री बाझ जमीं फिर से हरसाई।

पुरुष बिछ गई मा प्रकृति स्वागत करने को।

(एक अन्य स्त्री-पात्र प्रवेश करती है।)

प्रकृति मानव मेरा पुत्र आयेगा।

स्त्री-पुरुष मानव। अमृतस्य पुत्र । मानव।

प्रकृति सार्थक करेगा मेरा जीवन।
उसकी क्षुधा के लिये लगा दू फल वृक्षों में।
प्यास के लिये बहा दू नीरव-निर्मल जल की नदिया।
सांसों को सुगंधित पुरवैया
रोगों को यह जड़ा-बूटिया
और छाया का वृक्ष-विशाल।

स्त्री-पुरुष धन्य-धन्य मा और तुम्हारी यह तैयारी।
धन्य तुम्हारा स्नेह पुत्र का।

पुरुष कितना अलौकिक होगा अमृतस्य-पुत्र ! तुम्हारा पुत्र। सार्थक कर देगा जीवन तुम्हारा।

प्रकृति आओ। आ जाओ बेटे। देखो मैंने तुम्हारे लिये स्वर्ग पृथ्वी पर उतार दिया है। आओ-आओ बेटे।

स्त्री-पुरुष मनुहारों से आया मानव।
साध हुई धरती की पूरी।
गूंज उठी किलकारी फिर से। *(प्रस्थान)*
(एक छोटा बच्चा हसते हुये उछलते कूदते प्रवेश करता है और एक ओर खड़े वृक्ष के चक्कर लगाता है।)

वृक्ष अरे अरे जरा सम्भल कर। सम्भल कर बेटे नहीं तो गिर जाओगे।

बच्चा कौन बोला ?

वृक्ष मैं बोला।

बच्चा मैं कौन ?

वृक्ष तुम कौन ?

बच्चा मैं बच्चा। तुम ?

वृक्ष मैं बड़ा।

बच्चा बड़ा क्या होता है ?

वृक्ष आंखें उठा कर ऊपर देखो।

बच्चा ऊपर तो टहनिया और पत्ते हैं।

वृक्ष हैं। वही तो हू मैं।

बच्चा पर कौन हो ?

वृक्ष तुम्हारा दोस्त।

बच्चा दोस्त क्या होता है?

वृक्ष जो साथ रहता है।

बच्चा और?

वृक्ष जो साथ पढ़ता है।

बच्चा और?

वृक्ष जो मदद करता है।

बच्चा और?

वृक्ष और जो साथ खेलता है।

बच्चा तुम मेरे साथ खेलोगे?

वृक्ष हा-हा।

बच्चा और क्या करोगे?

वृक्ष वह सब जो तुम कहोगे।

बच्चा तुम मेरे पक्के दोस्त हो ना?

वृक्ष हा। सबसे पक्का।

बच्चा अब खेलें?

वृक्ष हा हा

बच्चा पर क्या खेलें? तुम मुझे झूला झुला सकते हो?

वृक्ष हा हा क्यों नहीं। लो मैं अपनी बाहें नीचे करता हूं। पकड लो इन्हें।

बच्चा यह टहनिया तुम्हारी बाहें हैं?

वृक्ष हा पकड लो इन्हें।

(बच्चा टहनिया पकड़ता है। मच पर फैला प्रकाश लुप्त होता है। साइक पर पेड की छाया उभरती है। शेष क्रम शैडो में चलता है।)

वृक्ष अब मैं तुम्हें ऊपर उठाता हूं। यह लो।

बच्चा *(हसता है)* और ऊपर।

वृक्ष यह और ऊपर।

बच्चा और ऊपर।

वृक्ष अच्छा। यह और ऊपर।

(बच्चा हसते हुये झूलता है।)

बच्चा बहुत अच्छा लग रहा है। पिताजी भी ऐसे ही झुलाते हैं। मगर



(साइक पर परछाइयाँ फ्रीज होती हैं। मंच के दाहिना ओर प्रकाश उभरता है। जहाँ बच्चे का घर है। बच्चे का उसके पिताजी बाहों में ऊपर उठाये दिखाई देते हैं।)

बच्चा और ऊपर।

पिता यह और ऊपर।

बच्चा और ऊपर।

पिता अच्छा भाई यह और ऊपर।

बच्चा थोड़ा और।

पिता नहीं बस अब बस *(सांस फूल जाती है)*

बच्चा और झुलाइये ना पिताजी

पिता नहीं। अब नहीं। हम थक गये हैं। जाओ।

बच्चा बस थोड़ा और।

पिता कहा ना अब और नहीं। जाओ उधर जाकर खेलो।

बच्चा नहीं। हम और झूलेंगे।

पिता देखो जिद नहीं करते। जाओ उधर।

बच्चा कहा ना हम और झूलेंगे।

पिता ओफ्फो, तुम जिद्दी होते जा रहे हो। सुनता हो, इसे उधर ले जाओ। *(मां का प्रवेश)*

मां चलो बेटे। उधर चलो।

बच्चा हम नहीं जाते। झुलाइये हमको और।

मां कहा ना अब नहीं।

बच्चा नहीं हम नहीं जाते हम झूलेंगे।

पिता ओफ कितना जिद्दी हो गया है। ले जाओ इसे उधर।

बच्चा नहीं।

पिता चलो जाओ उधर जाओ

बच्चा नहीं झूलेंगे।

पिता लो और झुलाता हूँ *(थप्पड़ मारता है।)* जाओ उधर। *(बच्चा रोता है। प्रकाश लुप्त होता है। साइक पर पुन पेड़ व बच्चे की छाया उभरती है।)*

वृक्ष लो यह और ऊपर।

बच्चा और ऊपर।

वृक्ष यह और ऊपर। आसमान के पास।

(साइक के ऊपरी भाग में हल्की नाली रोशनी उभरती है।)

वृक्ष ऊपर आसमान।

बच्चा आसमान।

वृक्ष नीचे धरती।

बच्चा धरता नाचे धरता।

वृक्ष धरती पर पेड़-पौधे।

बच्चा धरती पर पेड़ पौधे।

वृक्ष नदिया *(साइक के निचले भाग में पाना बहने का प्रभाव)*

बच्चा नदिया

वृक्ष नदियों में ठडा पानी।

बच्चा ठडा पानी।

वृक्ष पानी में मछली।

बच्चा पाना में मछला।

वृक्ष कितना पानी?

बच्चा बोल मरी मछली कितना पानी

इतना पानी इतना पानी।

वृक्ष बोल मेरी मछली कितना पानी?

बच्चा इतना पानी इतना पानी।

(साइक पर परछाई धीरे-धीरे क्षीण होती हुई लुप्त होती है। मच पर प्रकाश फैलता है और बच्चा पेड़ से उतरता हुआ और फिर पेड़ के चारों ओर उछलता-कूदता दिखाई देता है।)

बच्चा बोल मेरी मछली कितना पानी।

इतना पानी इतना पानी।

(कुछ क्षणों में प्रकाश धीरे-धीरे लुप्त होता है। फिर मच के दाहिनी ओर उभरता है जहा बच्चे का घर है।)

माता उठ बेटा उठ

पिता उठ कर हाथ मुह धो।

माता हाथ मुह धोकर नाश्ता कर।

पिता नाश्ता कर स्कूल जा।

माता स्कूल जाकर पढ़।

पिता पढ़-लिखकर बड़ा आदमी बन।

(दोनों सवाद दोहराते हैं। प्रकाश धीरे-धीरे लुप्त होता है। अन्तराल सगीत उभरता है।)

(पुन प्रकाश के साथ हल्की हवा की ध्वनि उभरती है। जो एकान्त दर्शाती है। प्रकाश पेड पर केन्द्रित होता है।)

वृक्ष कौन ? कौन है ? ओह कोई नहीं लगता है आज भी नहीं आयेगा कितने दिन हो गये हैं उसे देखे हुये। आँखें तरस गई हैं अब तो क्यों नहीं आता वह शैतान ? हा हा हा अब तो स्कूल जाने लगा होगा वह और और बडा भी तो हो गया होगा। कैसा लगता होगा बड़ा होकर ? ओफ क्यों नहीं आता वह ?

(बालक प्रवेश करता है।)

बालक दोस्त दोस्त

वृक्ष कौन ?

बालक मुझे नहीं पहचाना ? मैं तुम्हारा वही दोस्त।

वृक्ष *(भाव विह्वल)* हा हा हा आओ आओ। अरे कहा थे इतने दिनों से ? तुम्हारी राह देखते-देखते मेरी तो आखें ही पथरा गई।

बालक क्या बताऊ, इधर आना ही नहीं हुआ।

वृक्ष अपनी दोस्ती भूल गये थे ना ? पक्की दोस्ती। पर पहले मेरे करीब तो आओ। मेरी गोद में।

बालक लो मैं आता हू।

वृक्ष आ जाओ मेरे राजा बेटे। देखो देखो मैंने अपने फूलों का ताज बनाया है तुम्हारे लिये।

बालक फूलों का ताज ? बड़ा सुन्दर है।

वृक्ष पहन लो इसे और इस जगल के सम्राट बन जाओ।

बालक मैं जगल का सम्राट।

वृक्ष हा। तुम जगल के सम्राट।

बालक मैं सम्राट और तुम ?

वृक्ष मैं ? मैं सेवक।

बालक सेवक। सेवक क्यों ?

वृक्ष क्योंकि जब एक दोस्त सम्राट बन जाता है तो दूसरे दोस्त को सेवक बनना ही पड़ता है।

(दोनों हसते हैं।)

बालक तुम मुझे बहुत याद करते थे ?

वृक्ष हां। बहुत।

बालक क्यों ?

वृक्ष क्योंकि मैं चाहता था कि तुम आओ और मेरा बोझ कम करो।

बालक कैसा बोझ ?

वृक्ष देख नहीं रहे मैं पूरा फलों से लदा हूं।

बालक अरे हां। यह सब मेरे लिये हैं ?

वृक्ष हां सब तुम्हारे लिये। तुम्हारे बगैर इनका कोई अस्तित्व नहीं है। लो खाओ

बालक नहीं मैं खुद तोड़ूगा और चख-चख कर खाऊंगा।

वृक्ष तो आ जाओ ऊपर। लो मैं अपनी टहनियां नीचे करता हूं।

बालक नहीं। अब मैं बड़ा हो गया हूं खुद चढ़ सकता हूं।

(प्रकाश लुप्त होता है। साइक पर छाया उभरती है। बालक पेड़ पर चढ़ता दिखाई देता है। फिर फल तोड़ता है।)

बालक *(चखता है)* अरे यह तो खट्टा है।

वृक्ष खट्टा है तो फेंक दो दूसरा तोड़ लो। यह सब तुम्हारे लिये है।

बालक हां यह मीठा है। यह खाता हूं।

वृक्ष खाओ खाओ मेरे दोस्त, चुन-चुन कर खाओ।

(बालक फल खाता है। साइक पर परछाइयां फ्रीज होती हैं। दाहिनी ओर प्रकाश उभरता है। जहां बच्चे का घर है। बालक माता पिता के साथ खाना खा रहा है।)

पिता यह लड़का कभी तमीज नहीं सीखेगा। खाने से ज्यादा तो बरबाद कर देता है।

मां अब तुम बच्चे नहीं रहे हो बेटे। इस तरह खाना बरबाद करोगे तो आयेगा कहां से ?

बालक हमको अच्छा नहीं लगा, हमने छोड़ दिया।

मां अच्छा क्या नहीं लगता। इतने अच्छे तरीके से पकाती हूं, फिर भी कहता है अच्छा नहीं लगता।

पिता अच्छा नहीं लगता है तो तुम्हें लेना ही नहीं चाहिये था।

बालक लेकिन पिताजी जब तक खायेंगे नहीं तो पता कैसे चलेगा कि अच्छा है या खराब ?

मा	लीजिये। दीजिये जवाब। यह आजकल के बच्चे तो ... माईगॉड।
बालक	मम्मी थोड़ा खाना रह गया तो क्या हुआ?
पिता	अभी हमारा मा रह हो ना बेटे इसलिये कुछ नहीं हुआ। जब खुद कमाओगे और इस तरह जूठा छोड़ोगे तो पता चलेगा। *(बालक उठकर चला जाता है। प्रकाश लुप्त होता है। साइक पर पुन छाया उभरती है।)*
वृक्ष	फेंक दो ... फेंक दो इसे भी ... दूसरा तोड़ कर खाओ।
बालक	हा ... हा ... यह पका हुआ है यह खाता हूँ। दोस्त मैंने तुम्हारे काफी फल तो यू ही गिरा दिये।
वृक्ष	तो क्या हुआ? यह सब तुम्हारे लिये ही तो हैं। जा भर कर खाओ ... जा भर कर फेंक दो। मैं तुम्हें फिर उतने ही फल दूगा।
बालक	अब बस। बहुत खा लिया। अब नीचे आता हू।
	(साइक पर परछाइयाँ लुप्त होती हैं। मच पर प्रकाश उभरता है। बालक पेड़ के पास बैठा है।)
बालक	दोस्त। तुम्हारे फल बड़े मीठे हैं।
वृक्ष	और मेरे बोल।
बालक	वे तो फलों से भी ज्यादा मीठे हैं।
वृक्ष	दोस्त। बोल मीठे हो तो कड़वे फल भी मीठे लगते हैं।
बालक	और बोल कड़वे हो तो मीठे फल भी कड़वे लगते हैं।
	(दोनों हसते हैं।)
वृक्ष	अब तुम बड़े ही नहीं, समझदार भी हो रहे हो।
बालक	अच्छा दोस्त अब मैं चलता हूँ।
वृक्ष	हैं? जा रहे हो?
बालक	हाँ जाना तो होगा ही।
वृक्ष	फिर ... फिर कब आओगे?
बालक	जल्दी ही।
वृक्ष	देखो दोस्त। तुम जल्दी जल्दी आया करो। तुम नहीं आते हो तो मैं बेचैन हो जाता हूँ।
बालक	क्यों?
वृक्ष	क्योंकि तुम प्रकृति पुत्र हो और मैं प्रकृति-अश। मगर इसे अभी तुम नहीं समझोगे। बस इतना समझ लो कि मेरा सब कुछ तुम्हारे लिये है।
बालक	अच्छा जल्दी ही आऊँगा। चलता हूँ।

वृक्ष सुनो। यह फल और ले जाओ। भूख लगे तब खा लेना।

बालक अच्छा।

(प्रकाश लुप्त होता है। अन्तराल संगीत उभरता है। कुछ लम्बा। प्रकाश मंच के दाहिना ओर केन्द्रित होता है। जहाँ बालक का घर है।)

(मां सब्जी काट रही है। पिता प्रवेश करता है।)

पिता लो मिल गया है तुम्हारे बेटे को कालेज में एडमीशन। ओफ।

मां कितनी मुश्किलों का सामना करना पड़ा है।

पिता मैं तो परेशान हो गया। किस-किस से सिफारिश करवानी पड़ी है। आजकल एडमीशन चुनाव लड़ने से कम नहीं है।

मां चलो जो कुछ हुआ ठीक हुआ। अब तो पढ़-लिखकर यह बड़ा आदमी बन जाये बस।

पिता पढ़ेंगे तो बड़े बनेंगे ना? साहबजादे के हाल तो यह हैं कि चेहरे पर दाढ़ी मूंछे उभरने लगी हैं मगर दुनिया किधर जा रही है यह पता नहीं है।

मां समझ जायेगा जी। आखिर आदमी का बेटा है। किसी पेड़ का ठूठ तो नहीं जो कुछ ना समझे। तुम आराम करो। मैं तुम्हारे लिये चाय लाती हूं। *(प्रस्थान)*

(प्रकाश लुप्त होकर पुनः पेड़ पर केन्द्रित होता है।)

वृक्ष कई बसन्त आये और चले गये मगर दोस्त तुम नहीं आये। मैं आज भी तुम्हारी बाट जोहता हूं। मेरे पत्ते टहनियां मेरे फल तुम्हारा स्पर्श पाने को बेताब हैं। अब तो तुम जवान हो गये होंगे। पढ़ाई भी पूरी कर ली होगी, कई क्लासें। मगर मुझे तो ढाई आखर ही आते हैं। मैं तो रोज तुम्हारी राह देखता हूं। क्यों हो गये तुम इतने निष्ठुर? क्या तुम्हारी दुनिया में ढाई आखर का कोई मोल नहीं? तो फिर किसका है? किसका है?

(प्रकाश लुप्त होकर मंच के दाहिनी ओर केन्द्रित होता है। मंच पर युवक और माता-पिता बातचीत कर रहे हैं।)

पिता अब तुम पढ़-लिखकर बड़े हो गये हो। कहीं से दो पैसे का जुगाड़ बिठाओ।

मां तुम्हारे पिताजी की अब हिम्मत नहीं है कि वे अकेले गृहस्थी का बोझ उठाएँ।

पिता सुबह घर से निकल कर शाम को खाली हाथ घर में घुसना अब तुम्हें शोभा नहीं देता।

मां बेटा माना आजकल नौकरी आसानी से नहीं मिलती। मगर तुम कुछ और काम तो कर सकते हो।

पिता अब कोई काम शुरू करने के लिये पैसों के लिये मुंह मत करना। मेरे पास पैसे नहीं हैं।

मा अपने दोस्तों को देखो वे तुमसे कितना आगे निकल गये हैं।

पिता अरे कुछ कमाओ पैसा बनाओ पैसा और अपना गृहस्थी बसाओ।

मा हा बेटे तुम्हारी शादी भी तो करना है हमको।

पिता और शादी बगैर पैसों के नहीं होता।

मा हम और क्या समझाएँ तुम्हें। अब तुम छोटे थोड़े ही रहे हो।

बेटा हा मैं छोटा कहा हू अब? अब मैं बड़ा हो गया हू। और बड़ा इसलिये हुआ हू कि मुझे रुपया कमाना है।

(संवाद बोलता हुआ मंच के मध्य आता है।)

(पहले धीमे स्वरों मे फिर तेज गूजता सामूहिक स्वर उभरता है।)

सामूहिक स्वर पैसा पैसा पैसा पैसा

(प्रकाश एव संगीत ध्वनि का प्रभाव उभरता है। सामूहिक स्वर गूजते रहते हैं। उनके बीच माता पिता के स्वर भी चलते रहते हैं।)

(सामूहिक स्वर पर माता-पिता का स्वर उभरता है।)

पिता कहीं से दो पैसे का जुगाड़ बिठाओ।

सामूहिक स्वर पैसा पैसा पैसा।

मा अब तुम्हारे पिताजी से अकेले गृहस्थी का बोझ नहीं उठता।

पिता शाम को खाली हाथ लौटना तुम्हें शोभा नहीं देता।

सामूहिक स्वर पैसा पैसा पैसा

मा तुम्हारी शादी भी तो करनी है।

पिता और शादी ब्याह बगैर पैसों के नहीं होता।

सामूहिक पैसा पैसा पैसा

मा रुपया कमाओ बेटे रुपया

पिता हा रुपया रुपया रुपया।

(स्वर उभर कर शान्त होते हैं।)

बेटा हा रुपया रुपया रुपया चाहिये मुझे। रुपया।

(प्रकाश धीरे-धीरे क्षीण होकर पुन पेड पर केन्द्रित होता है)

वृक्ष नहीं आया आज भी नहीं आया। पर क्यों नहीं आया? उसने तो कहा था मैं जल्दी ही आऊंगा। कहीं कहीं उसे कुछ हो तो नहीं गया? राम राम मैं भी क्या अशुभ सोचने लगा। मेरा मन कहता है वह

आयेगा   जरूर आ   अरे यह   यह कौन जा रहा है चुपचाप ? हा   हा   हा वहा तो है वही   जरूर मुझसे शैतानी कर रहा है। यह समझता है कि अब यह बड़ा हो गया है। मैं इसे पहचानूगा नहीं   लेकिन क्या मैं इसे भूल सकता हूँ ? कभी नहीं   कभी नहीं।

(आवाज देता है) दोस्त   दोस्त   सुनो

बेटा कौन ?

वृक्ष मैं   तुम्हारा दोस्त। भूल गये मुझे ?

बेटा तुम   हा   हा

वृक्ष अरे इतने खामोश क्यों हो ? कहा गई तुम्हारी वह चचलता ?

बेटा अब मैं बड़ा हो गया हूँ ना ?

वृक्ष तो क्या हुआ ? मेरे लिये तो तुम वैसे हो बच्चे हो। और तुम आये क्यों नहीं इतने दिनों से ? मैं हर रोज तुम्हारी बाट जोहता रहता हूँ।

बेटा क्या है तुम्हारे पास, जो मैं आऊँ ?

वृक्ष हैं ? क्या कुछ नहीं है मेरे पास ? और मेरे पास कुछ होगा क्या तभी मेरे पास आओगे ?

(पॉज)

मैं जानता हूँ तुम मुझसे मजाक कर रहे हो। अब छोड़ो ये बातें। आओ मेरे पास। देखो मेरी टहनिया, पत्ते, फूल, फल सब

बेटा छोड़ो बेकार की बातें। जो मुझे चाहिये वह तुम्हारे पास नहीं है।

वृक्ष क्या चाहिये तुम्हें ?

बेटा तुम्हारे पास रुपया है ?

वृक्ष रुपया ?

बेटा हा रुपया ?

वृक्ष रुपया तो नहीं है मेरे पास। यह तो आदमियो की ईजाद है। यह बीमारी हमने नहीं पाली है। इसीलिये हम इतने आनन्दित हैं। इतने फूल खिलते हैं। इतने फूल लगते हैं। पछी यहाँ बसेरा करते हैं। गीत गाते हैं। कलरव करते हैं।

बेटा रुपया नहीं है तो कुछ भी नहीं है यह सब।

वृक्ष यह तुम लोगों का सोच है दोस्त। अगर हमारे पास रुपया होता तो हम भी शान्ति की तलाश में इधर-उधर भटक रहे होते।

बेटा मैं तुमसे बहस नहीं करना चाहता। मुझे रुपया चाहिये। मैं चलता हूँ।

वृक्ष रुको। यू ही कैसे चले जाओगे? इतने दिनों के बाद तो आये हो। कुछ समय मेरे पास बैठोगे नहीं? बात नहीं करोगे मुझसे? अपने दोस्त से।

बेटा जो दोस्त काम न आ सके उससे दोस्ती कैसी?

वृक्ष बड़े निष्ठुर हो गये हो अब।

बेटा नहीं अब मैं बड़ा हो गया हूँ।

वृक्ष अब क्या प्रेम का कोई मूल्य नहीं?

बेटा मूल्य भी तो रुपये से ही आका जाता है।

वृक्ष रुपया रुपया रुपया रुपये ने तुम्हें अन्धा कर दिया है। तुम चाहे प्रेम और दोस्ती का मूल्य ना समझो। किन्तु मैं समझता हूँ। इतने दिनों बाद आये हो, मैं तुम्हें खाली हाथ नहीं जाने दूगा।

बेटा क्या कहना चाहते हो?

वृक्ष रुपया तो मेरे पास नहीं है। लेकिन फल है। तुम मेरे सारे फल तोड़कर बेच दो, तुम्हें रुपया मिल जायेगा।

बेटा सारे फल तोड लू?

वृक्ष हा। वैसे भी यह सब तुम्हारे लिये ही तो हैं।

बेटा हा हा हा, यह ठीक रहेगा दोस्त। मैं मैं सारे फल तोड लेता हू। *(प्रकाश लोप होता है। साइक पर युवक की छाया उभरती है। युवक फल तोडता है। सगीत उभरता है। कुछ क्षणों तक यही क्रम चलता है। फिर मच के दाहिनी ओर उभरता है। युवक के माता पिता गिन रहे हैं।)*

पिता फल का व्यापार हो

मा तो व्यापार में फल मिलता ही है। *(दोनों हसते हैं।)*

(युवक का प्रवेश)

पिता चलो यह काम भी सम्पन्न हुआ। पूरे चालीस हजार हैं।

मा हा जी। बेटा कमाना सीख गया और क्या चाहिये?

पिता अब तो बस एक ही तमन्ना है।

मा वो क्या जी?

पिता यही कि अपने बेटे का खुद का एक सुन्दर मकान हो।

मा हा बेटे। तुम एक सुन्दर मकान जरूर बनवालो।

पिता तुम्हारे साथ के दोस्तों के पास कितनी शानदार कोठिया हैं।

मा आदमी बगैर खाये भले ही रह जाये मगर सिर छुपाने को जगह तो होनी चाहिये।

पिता इससे पहले कि आन वाली बहू यह ताना मारे कि तुम जीवन में एक योपड़ा तो खुद की बना नहीं पाये और क्या कर सकते हो, एक मकान बनवा लो।

मा अब ज्यादा तुम्हें क्या समझाना। अब तुम बच्चे थोडे ही रहे हो।

बेटा हा मैं छोटा कहा हू अब ? अब मैं बड़ा हो गया हू। मेरी शादी होने वाली है, और अब मुझे मकान बनवाना है। मकान।

(युवक मच के मध्य आता है। प्रकाश व सगीत ध्वनि प्रभाव उभरता है। गूजते हुये सामूहिक स्वरों के साथ माता-पिता के सवाद भी सुनाई देते हैं।)

सामूहिक घर घर घर मकान मकान मकान

मा तुम एक सुन्दर मकान जरूर बनवा लो।

पिता हा बेटे सुन्दर मकान जरूर बना लो।

मा तुम्हारे दोस्तों के पास कितनी सुन्दर-सुन्दर कोठिया हैं।

पिता तुम भी एक सुन्दर कोठी बना लो।

मा इन्सान के पास सिर छुपाने को जगह तो होनी ही चाहिये।

पिता हा बेटे सिर छुपाने की जगह तो होनी ही चाहिये।

मा मकान बनाओ बेटे

पिता एक सुन्दर मकान।

सामूहिक स्वर मकान मकान मकान

युवक हा हा मुझे मकान चाहिये एक सुन्दर मकान *(धीरे-धीरे प्रकाश व ध्वनिया शान्त होती हैं। पुन प्रकाश वृक्ष पर उभरता है। युवक पेड के पास खड़ा है।)*

वृक्ष अहसान है यह तुम्हारा मुझ पर दोस्त कि इस बार तुम बहुत जल्दी आ गये। आओ आओ। झूलो मेरी डालियों पर बैठो मेरी गोद के सिंहासन पर देखो मैंने तुम्हारे लिये आज फिर अपने फूलों का ताज बनाया है।

बेटा छोडो यह फिजूल की बातें। यह बचपन की बातें हैं।

वृक्ष नहीं। यह शाश्वत सुख की बातें हैं। उम्र का इनसे कोई सम्बन्ध नहीं।

बेटा सुख इच्छाओं के पूरा होने में है।

वृक्ष इच्छाओं की पूर्ति का अर्थ नई इच्छाओं को जन्म देना है।

बेटा यही निरन्तरता, प्रगति है।

वृक्ष यह प्रगति नहीं पाश है—माया-पाश।

बेटा यही तो जीवन की गति है। इसके बगैर जीवन ठहर जायेगा।

वृक्ष नहीं यह भ्रम है तुम्हारा। जीवन की अपनी गति भी है।

बेटा मैं जीवन की और किसी गति को नहीं जानता।

वृक्ष लगता है फिर किसी उलझन में है मेरा दोस्त।

बेटा हा।

वृक्ष तो बोलो क्या कर सकता हूं मैं तुम्हारे लिये?

बेटा मुझे एक मकान बनाना है। मकान दे सकते हो तुम मुझे?

वृक्ष मकान? मैं तो स्वय बगैर मकान के रहता हूं। मकान में तो आदमी रहते हैं। तुम लोगों के सिवा और कोई मकान में नहीं रहता। इसीलिये हालत ख़राब है।

बेटा क्या कहना चाहते हो तुम? आदमी आज भी प्रकृति का सबसे बुद्धिमान प्राणी है। सबसे बडा है।

वृक्ष इसीलिये वह जितने बड़े मकान बनाता है उतना ही छोटा होता चला जाता है।

बेटा इन फिजूल की बातों के लिये मेरे पास समय नहीं है। चलता हूं मैं?

वृक्ष ठहरो दोस्त। तुम मेरे पास आये हो किसी इन्सान के पास नहीं, कि ख़ाली हाथ लौट जाओ।

बेटा तुम समझते हो कि मैं अभी तक बच्चा हू। तुम्हारी बातों से बहल जाऊगा। तुम्हारे सारे फल मैं पहले ही ले चुका हू। अब क्या है तुम्हारे पास?

वृक्ष मरी सासें मेरा अस्तित्व।

बेटा क्या मतलब?

वृक्ष दोस्त तुम इन्सान हा ना इसलिये केवल लेना जानते हो। मैं इन्सान नहीं हूं इसलिये केवल देना जानता हूं।

बेटा क्या दे सकते हो मुझे अब?

वृक्ष अपना अस्तित्व अपना शरीर।

बेटा मतलब?

वृक्ष मैं सब कुछ बर्दाश्त कर सकता हू दोस्त लेकिन तुम्हें दु खी नहीं देख सकता। काट डालो मुझे और मेरी लड़किया बेचकर अपने लिय एक घर बना लो।

बेटा *(सोचता है)* हा हा हा लकड़िया बेचकर अपने लिये शाय- तुम ठीक कहते हो।

वृक्ष लेकिन दोस्त एक बात का ध्यान रखना। मेरे पूरे अस्तित्व तो नष्ट मत करना नहीं तो तुम्हारा अस्तित्व भी नष्ट हो जायेगा। सुन रहे हो ना मैं क्या कह रहा हूँ।

बेटा *(स्वय से)* लडकिया बेचकर मकान आसानी से बनाया जा सकता है। मैं ऐसा ही करता हू   मैं ऐसा ही करता हूँ।

(सगीत उभरता है। साथ ही साइक पर पेड व युवक की परछाई भी। युवक के हाथ में कुल्हाड़ी है। वह पेड काटता है। फिर कई हाथ पेड काटते हैं। पेड़ काटने व कट कर गिरने की ध्वनि प्रभाव आकारों के साथ निरन्तर चलता है। साइक पर पेड कटने व गिरने का क्रम निरन्तर सवादो के पीछे जारी रहता है। मच पर हल्की रोशनी में स्त्री व पुरुष पात्र पुन नृत्यमुद्रा में प्रवेश करते हैं। सामूहिक स्वर विग साइड से आते रहते हैं।)

स्त्री-पुरुष धारदार कुल्हाडो।

सामूहिक स्वर फिर कुल्हाडिया *(पॉज)*

पुरुष स्वर उठ गई कुल्हाड़ी फिर काया की।

स्त्री स्वर हत्या हो गई फिर छाया की।

सामूहिक स्वर हत्या हो गई फिर छाया की।

स्त्री-पुरुष जड चेतन, चेतन जड बन गया।

सामूहिक स्वर एक और महाभारत ठन गया।

स्त्री-पुरुष शस्त्र और शान्ति के बीच

सामूहिक स्वर होता रहा कत्ले-आम

स्त्री-पुरुष बिछती रही लाशें।

सामूहिक स्वर मुखरित था मौन चीत्कार।

पुरुष स्वर गूजता रहा उपदेश।

(वृक्ष की गूजती आवाज सी उभरती है।)

वृक्ष मेरे पूरे अस्तित्व को नष्ट मत करना वरना तुम्हारा अस्तित्व भी नष्ट हो जायेगा।

सामूहिक स्वर गूजता रहा उपदेश।

पुरुष स्वर मगर महाभारत का अर्जुन बहरा था।

स्त्री स्वर उसके चारों ओर भौतिक कामनाओं का पहरा था।

सामूहिक स्वर कुल्हाड़ी का हर वार शान्ति पर गहरा था।

स्त्री स्वर दूर अन्तरिक्ष में अभी तक शब्द शेष था।

(गूजती आवाज में स्वर उभरता है।)

प्रकृति स्वर मानव मेरा पुन आयेगा।
सार्थक करेगा मेरा जीवन
उसकी क्षुधा के लिये लगा दू फल वृक्षों को।
प्यास के लिये बहा दू नीरव निर्मल जल की नदिया।
सासों को सुगधित पुरवैया
रोगों को यह जडी-बूटियाँ
और छाया का वृक्ष विशाल।

स्त्री स्वर फिर शब्द विलीन हुआ।

सामूहिक स्वर और प्रकोप प्रस्फुटित हुआ पृथ्वी के गर्भ से।

(सभी प्रभाव धीरे-धीरे शान्त होते हैं। मच पर पूर्ण निस्तब्धता छा जाती है। बहुत हल्की नीली रोशनी उभरती है। भूकम्प आने का ध्वनि प्रभाव सुनाई देता है। एक स्वर सुनाई देता है।)

एक स्वर अरे भूकम्प आ गया रे भागो।

(मच पर पात्रों की भागदौड़ चीख पुकार प्रारम्भ होती है। मच का सारा सामान बिखर जाता है। टूट जाता है। मच पर पेड़ भी टूट कर गिर जाता है। उसके स्थान पर एक छोटा-सा ठूठ मात्र बना रह जाता है। कुछ क्षणों तक यही क्रम चलता है। फिर सब कुछ शान्त हो जाता है। मात्र हल्की हवा चलने की ध्वनि सुनाई देती है। बिखरे सामान व लाशों के मध्य युवक बदहवास सा आता है।)

बेटा (हाफ्ते) दोस्त दोस्त कहा हो तुम
आसमान से बरसती आग।
अगारों-सी तपती धरती
लावा-सी बहती हवा।
दोस्त दोस्त कहा हो तुम
मुझे छाया चाहिये। मुझे छाया चाहिये।
(हवा उभर कर धीमी होती है)

बेटा मेरा मेरा कण्ठ सूख रहा है।
पानी पानी छाया छाया।
कहा हो तुम दोस्त देखो देखो
मैं जल रहा हू। पानी की बूद को
तरस रहा हूँ। ओह अब नहीं चला जाता

(फिर गिर पड़ता है।) आह नहीं नहीं अंगारों-सी यह धरती मुझसे सहन नहीं होती दोस्त दोस्त कहा हो तुम ? कहा हो ? पानी पानी । छाया छाया पानी दोस्त दोस्त कहा गये तुम ?

वृक्ष मैं यहीं हू आज भी तुम्हारे पास हू। पर आज तुम्हारे सर पर छाया बनकर नहीं तुम्हारे पावों में हू।

बेटा *(बैठकर)* मुझे छाया दो दोस्त, मुझे छाया दो। मैं जल रहा हू मुझे मुझे पानी दो।

वृक्ष आज मैं तुम्हें कुछ नहीं दे सकता दोस्त। मैं विवश हूँ। तुमने मेरा सब कुछ छीन लिया है। मात्र एक छोटा सा ठूठ बना कर रख दिया है तुमने मुझे।

बेटा नहीं। तुम दे सकते हो एक बूद सिर्फ एक बूद पानी दे दो। देखो मेरा अस्तित्व मेरा अस्तित्व लगता है मिटता जा रहा है।

वृक्ष मैंने तुम्हें पहले ही आगाह किया था दोस्त कि तुम्हारा अस्तित्व मेरे अस्तित्व के साथ जुड़ा है। मगर अपनी भौतिक कामनाओं के कोहराम में मेरी एक नहीं सुनी तुमने।

बेटा दोस्त मेरा गला गला सूखा जा रहा है। मैं जल रहा हू पानी पानी पानी ई ई ई।

(युवक तड़पता है और फिर शान्त हो जाता है। संगीत उभरता है।)

वृक्ष शान्त हो गये दोस्त ? शायद हमारी दोस्ती की यही नियति था। विश्वास करो मैं आज भी तुम्हारे काम आना चाहता हूँ। मगर तुमने मुझे किसी काबिल ही नहीं छोड़ा। बड़ी बेरहमी से मेरे सारे अग काट कर मात्र ठूठ बनाकर रख दिया मुझे। अरे दोस्त तुमने तो मुझे इस काबिल भी नहीं रखा कि तुम्हारी अर्थी के काम तो आ सकू तुम्हारी अर्थी के काम तो आ सकू। *(आकारें एव संगीत उभरता है। प्रकाश धीरे-धीरे मन्द पड़ता है)*

पर्दा गिरता है।

नाटककार सम्पर्क

1	हमीदुल्ला	2 घ-15 जवाहर नगर, जयपुर।
2	वागीश कुमार सिंह	140 ई, मयूर विहार-पाकेट-4, फेज 1, दिल्ली।
3	मदन मोहन माथुर	महेश छात्रावास के निकट, चौपासनी रोड जोधपुर।
4	रिजवान जहीर उस्मान	15 भूतमहल, उदयपुर
5	डॉ राजानन्द	2/30 मुक्ताप्रसाद कॉलोनी, बीकानेर।
6	लक्ष्मीनारायण रगा	नालन्दा पब्लिक स्कूल, नत्थूसर गेट बीकानेर।
7	लईक हुसैन	चटर्जी बगला, शास्त्री सर्किल, उदयपुर।
8	डॉ रामचरण महेन्द्र	महेन्द्र साहित्य सदन, नयापुरा, कोटा।
9	श्रीमती सुमन मेहरोत्रा	4/682 जवाहर नगर, जयपुर।
10	मदन शर्मा	975, नानाजी स्ट्रीट, रास्ता गोपाल जी, जयपुर 3

प्रकाशन

प्रश्न चिन्ह (नाटक), नाच हो गया (लघु नाटक)

पुरस्कार

राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर द्वारा देवीलाल सामर पुरस्कार से सम्मानित

सम्प्रति

आकाशवाणी सेवा।

पता

975, नानाजी स्ट्रीट, रास्ता गोपाल जी, जयपुर (राज.)